Nālandā
UNIVERSITY
राष्ट्रीय महत्त्व का संस्थान

विदेश मंत्रालय
MINISTRY OF
EXTERNAL AFFAIRS

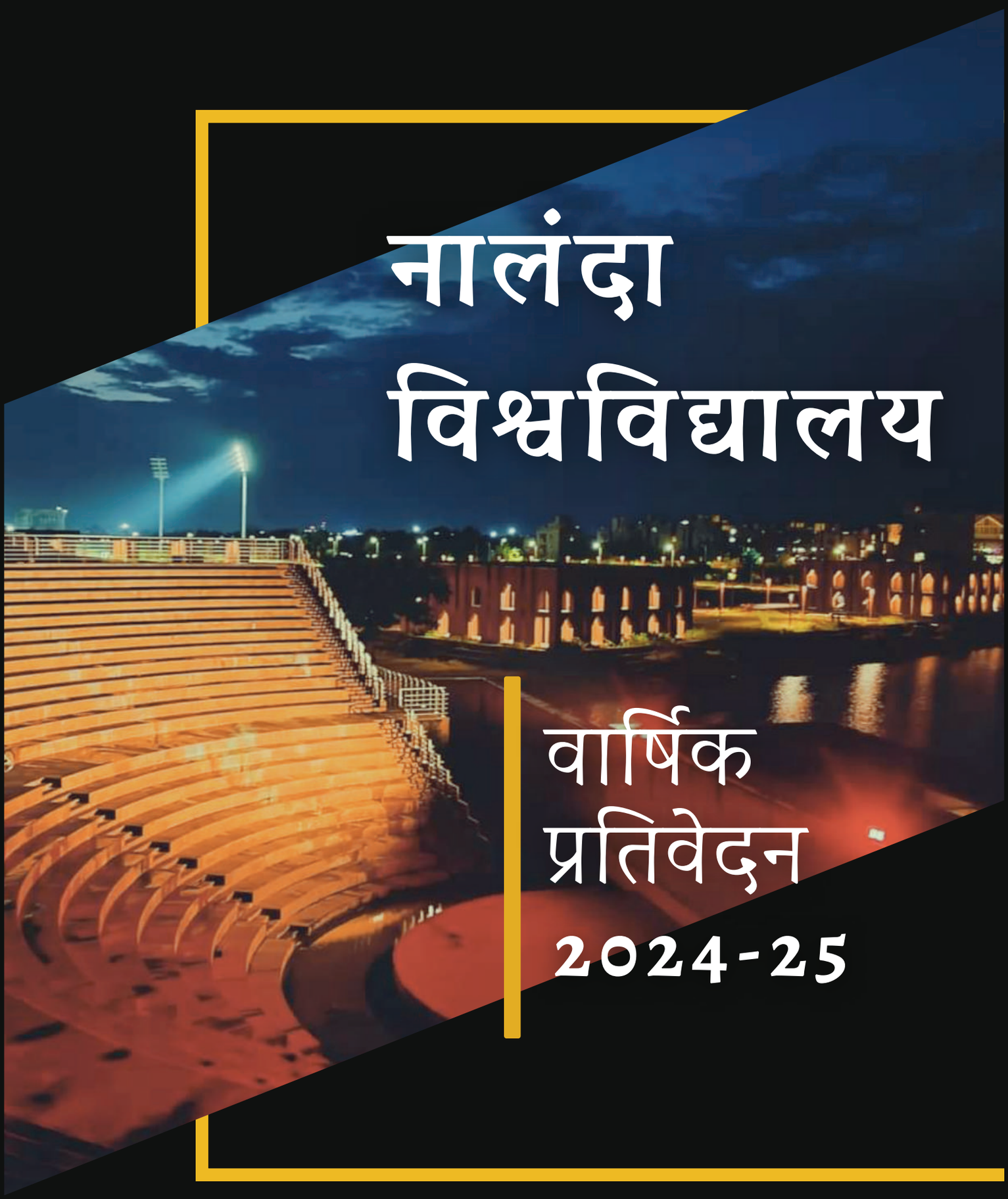

नालंदा विश्वविद्यालय

वार्षिक प्रतिवेदन

2024-25

nalandauniv.edu.in

Nālandā
UNIVERSITY

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः

विश्व के समस्त मंगलकारी विचार हमारे पास आएं।

Nālandā UNIVERSITY

श्रीमती द्रौपदी मुर्मू

महामहिम राष्ट्रपति

(कुलाध्यक्ष, नालंदा विश्वविद्यालय)

प्रोफेसर अरविंद पानगड़िया

कुलाधिपति

प्रोफेसर सचिन चतुर्वेदी

कुलपति

शासी बोर्ड

प्रोफेसर अरविंद पानगड़िया

नालंदा विश्वविद्यालय के कुलाधिपति और
शासी बोर्ड के अध्यक्ष

श्री आनंद महिंद्रा

प्रसिद्ध शिक्षाविद् या शिक्षाविद् व्यक्तियों
में से सदस्य

श्री वेणु श्रीनिवासन

प्रसिद्ध शिक्षाविद् या शिक्षाविद् व्यक्तियों में
से सदस्य

श्री पेरियासामी कुमारन

सचिव (पूर्व), विदेश मंत्रालय

प्रोफेसर मंजुल भार्गव

प्रसिद्ध शिक्षाविद् या शिक्षाविद् व्यक्तियों में से सदस्य

श्री प्रसून जोशी

भारत से प्रतिनिधित्व

पदेन सदस्य

अपर सचिव
(उच्च शिक्षा), शिक्षा मंत्रालय

डॉ. एस सिद्धार्थ

बिहार सरकार का प्रतिनिधित्व करने
वाले सदस्य

श्री आनंद किशोर

बिहार सरकार का प्रतिनिधित्व करने वाले
सदस्य

पांच सदस्य देशों का प्रतिनिधित्व

प्रोफेसर सचिन चतुर्वेदी

कुलपति,
नालंदा विश्वविद्यालय

अकादमिक परिषद

प्रोफेसर सचिन चतुर्वेदी

कुलपति, नालंदा विश्वविद्यालय

प्रोफेसर कपिल कपूर

विशेषज्ञ सदस्य

प्रोफेसर करम तेज एस. सराओ

विशेषज्ञ सदस्य

प्रोफेसर बी.वी. उमा देवी

विशेषज्ञ सदस्य

प्रोफेसर माला लालवानी

विशेषज्ञ सदस्य

प्रोफेसर अंजू शरण उपाध्याय

विशेषज्ञ सदस्य

प्रोफेसर वरुण साहनी

विशेषज्ञ सदस्य

प्रोफेसर वसंत शिंदे

विशेषज्ञ सदस्य

अकादमिक परिषद

प्रोफेसर अभय कुमार सिंह

प्रोफेसर एवं डीन,
इतिहास अध्ययन विद्यापीठ

प्रोफेसर गोदावरिश मिश्र

प्रोफेसर एवं डीन, बौद्ध अध्ययन, दर्शन और तुलनात्मक धर्म विद्यापीठ

प्रोफेसर सुषांत कुमार मिश्र

प्रोफेसर एवं डीन, भाषा और साहित्य/ मानविकी विद्यापीठ

डॉ. सत्यनारायण शास्त्री

एसोसिएट प्रोफेसर एवं प्रभारी डीन,
पारिस्थितिकी और पर्यावरण अध्ययन विद्यापीठ

डॉ. किशोर कुमार धवला

एसोसिएट प्रोफेसर, पारिस्थितिकी और पर्यावरण अध्ययन विद्यापीठ

डॉ. राजीव रंजन चतुर्वेदी

एसोसिएट प्रोफेसर, अंतर्राष्ट्रीय संबंध और शांति अध्ययन विद्यापीठ

डॉ. आनंद कुमार

सहायक प्रोफेसर, प्रबंधन अध्ययन विद्यापीठ

डॉ. राजेश्वर मुखर्जी

टीचिंग फ़ेलो, बौद्ध अध्ययन, दर्शन और तुलनात्मक धर्म विद्यापीठ

डॉ. रमेश प्रताप सिंह परिहार

कुलसचिव (सदस्य-सचिव)

डॉ. एस. श्याम सुंदर राव

सहायक लाइब्रेरियन

सहयोगी देश

ऑस्ट्रेलिया

बांग्लादेश

भूटान

ब्रूनेई दारएस्सलाम

कंबोडया

चीन

भारत

इंडोनेशया

मॉरीशस

म्यांमार

लाओ-पीडीआर

न्यूज़ीलैंड

पुर्तगाल

सिंगापुर

दक्षिण कोरिया

श्रीलंका

थाईलैंड

वियतनाम

विषय-वस्तु

2024-25

1 कुलाधिपति का संदेश

2 कुलपति का संदेश

3 इतिहास अध्ययन विद्यापीठ

13 पारिस्थितिकी और पर्यावरण अध्ययन विद्यापीठ

बौद्ध अध्ययन, दर्शन और तुलनात्मक धर्म विद्यापीठ 22

भाषा और साहित्य/मानविकी विद्यापीठ 32

प्रबंधन अध्ययन विद्यापीठ 40

अंतर्राष्ट्रीय संबंध और शांति अध्ययन विद्यापीठ 46

विषय-वस्तु

2024-25

54 शोध केंद्र एवं शैक्षणिक सहयोग

58 विद्यार्थी अनुसंधान
अन्य शैक्षणिक गतिविधियाँ

67 विद्यार्थी क्लब और
सोसाइटी

नालंदा परिवार 73

आँकड़ों के आईने से 84

वार्षिक लेखा 89

कुलाधिपति का संदेश

जिस प्रकार आज भारत विकसित राष्ट्रों की श्रेणी में शामिल होने की दिशा में अग्रसर है, उसी प्रकार नालंदा विश्वविद्यालय भी अपनी गौरवशाली विरासत को आधुनिक संदर्भ में पुनर्जीवित करने के लिए संकल्पबद्ध है। यह विश्वविद्यालय प्राचीन नालंदा के शास्त्रीय विषयों के पुनरारम्भ के साथ-साथ समकालीन अध्ययन के क्षेत्रों में उत्कृष्टता प्राप्त करने, अंतर्विषयक अनुसंधान को प्रोत्साहित करने और साझा सभ्यतागत मूल्यों पर आधारित वैश्विक संवाद को बढ़ावा देने के लिए भी समान रूप से प्रतिबद्ध है।
अपनी हाल की यात्राओं के दौरान, मैंने विश्वविद्यालय में हो रहे विकास कार्यों को देखा है, जो नालंदा की समृद्ध परंपरा को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में नई परिभाषा दे रहे हैं। यह प्रगति प्रेरणादायक है और विश्वविद्यालय के बढ़ते शैक्षणिक सहयोगों तथा अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की दूरदर्शी सोच के अनुरूप, नालंदा विश्वविद्यालय की पुनर्स्थापना एक ऐसी व्यापक दृष्टि का परिणाम है, जिसका उद्देश्य इस संस्थान की शैक्षणिक और संरचनात्मक व्यवस्था में भारतीय ज्ञान परंपरा का समन्वय करना है। नालंदा विश्वविद्यालय के अकादमिक एवं आधारिक संरचना विकास के साथ-साथ, हमारा लक्ष्य राजगीर को एक जीवंत और आधुनिक विश्वविद्यालय-नगर (यूनिवर्सिटी टाउन) के रूप में विकसित करना भी है। उत्कृष्ट आधारभूत संरचना का निर्माण, स्वदेशी ज्ञान-परंपरा के पुनर्जागरण, सांस्कृतिक आदान-प्रदान को प्रोत्साहन और सतत विकास के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के माध्यम से, हम नालंदा को एक वैश्विक विचार केंद्र के रूप में स्थापित कर इसके ऐतिहासिक गौरव को पुनः प्राप्त करने के लिए कटिबद्ध हैं।

> **“उत्कृष्ट आधारभूत संरचना का निर्माण, स्वदेशी ज्ञान-परंपरा के पुनर्जागरण, सांस्कृतिक आदान-प्रदान को प्रोत्साहन और सतत विकास के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के माध्यम से, हम नालंदा को एक वैश्विक विचार केंद्र के रूप में स्थापित कर इसके ऐतिहासिक गौरव को पुनः प्राप्त करने के लिए कटिबद्ध हैं।**

एक व्यक्ति के रूप में, जिसने अपने जीवन का अधिकांश समय आर्थिक विकास और वैश्विक सहयोग के अध्ययन को समर्पित किया है, मैं नालंदा को एक ऐसे जीवंत सातत्य के रूप में देखता हूँ, जो अतीत की गौरवशाली विरासत को भविष्य की आकांक्षाओं से एकीकृत करता है।

इस शाश्वत परंपरा को आगे बढ़ाने के इस महान अनुष्ठान में मैं कुलपति, संकाय सदस्यों, प्रशासनिक वर्ग और समस्त विद्यार्थियों को अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

प्रोफेसर अरविंद पानगड़िया
कुलाधिपति

कुलपति का संदेश

विगत वर्ष की गतिविधियाँ स्पष्ट रूप से दर्शाती हैं कि नालंदा विश्वविद्यालय एक सुनियोजित और विशिष्ट विकास-पथ पर अग्रसर है। विश्वविद्यालय की यह विशिष्टता इसके परिसर की जीवंत शैक्षणिक संस्कृति, उत्कृष्ट मूलभूत सुविधाओं और इसकी पुनर्स्थापना के मूल आदर्शों में स्पष्ट रूप से झलकती है। यह संस्थान अपनी गौरवमयी प्राचीन विरासत का समकालीन अकादमिक परंपराओं के साथ सफलतापूर्वक समन्वय कर रहा है।

व्यक्तिगत रूप से, मई 2025 में नालंदा परिवार से जुड़ने के बाद, मैं यहाँ की जीवंत दार्शनिक एवं आध्यात्मिक जिज्ञासा, पारस्परिक सहयोग की भावना और पर्यावरण के प्रति गहरी संवेदनशीलता से अत्यंत प्रभावित हुआ। शैक्षणिक वर्ष 2024-25 के दौरान, विश्वविद्यालय ने अत्याधुनिक अनुसंधान को बढ़ावा दिया, वैश्विक शैक्षणिक सहयोग का विस्तार किया और सभ्यतागत संवाद को समकालीन वैश्विक समस्याओं के समाधान से जोड़ने वाले विशिष्ट मंचों और सम्मेलनों का आयोजन कर अपनी पहचान को एक नया आयाम दिया है।

नालंदा के प्राचीन गौरव को पुनर्स्थापित करने के महती प्रयासों को साकार करते हुए, विश्वविद्यालय के विभिन्न विभाग (विद्यापीठ) इतिहास, पारिस्थितिकी, प्रबंधन, दर्शनशास्त्र और साहित्य जैसे क्षेत्रों में सक्रिय अनुसंधान कर रहे हैं। विश्वविद्यालय, विशेष रूप से एशियाई संबंधों पर ध्यान केंद्रित करते हुए, नवीनतम शोध के आधार पर नए पाठ्यक्रम भी विकसित कर रहा है। इसके अतिरिक्त, संस्थान ने अपने प्राचीन स्वरूप के आदर्शों का पालन करते हुए, आसपास के ग्रामीण समुदायों के साथ जुड़ने के लिए भी ठोस कदम उठाए हैं।

ये प्रयास हमारे इस विश्वास को और दृढ़ करते हैं कि ज्ञान जब सहानुभूति और नैतिक उद्देश्य से प्रेरित होता है, तो वह वैश्विक सद्भाव स्थापित करने का एक शक्तिशाली माध्यम बन सकता है। इन सभी पहलों के माध्यम से, नालंदा विश्वविद्यालय स्वयं को 'ग्लोबल साउथ' के एक महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में स्थापित कर रहा है, जो वर्तमान बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था की चुनौतियों और अवसरों का समाधान करने में सक्षम हो।

“नालंदा विश्वविद्यालय स्वयं को 'ग्लोबल साउथ' के एक महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में स्थापित कर रहा है, जो वर्तमान बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था की चुनौतियों और अवसरों का समाधान करने में सक्षम हो।

'नालंदा भावना' के आदर्श से प्रेरित होकर, जो उत्कृष्टता, सार्वभौमिकता और ज्ञान की अनवरत खोज को आत्मसात करता है, इस विश्वविद्यालय का प्रत्येक सदस्य—डीन, प्रोफेसर, शोधार्थी, विद्यार्थी और प्रशासनिक कर्मचारी—पूरी निष्ठा और प्रतिबद्धता के साथ संस्थान की प्रगति में अपना अमूल्य योगदान दे रहा है।

मैं माननीय कुलाधिपति डॉ. अरविंद पानगड़िया, शासी बोर्ड तथा अकादमिक परिषद का उनके निरंतर मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन के लिए हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ। मैं 'नए नालंदा' की परिकल्पना को साकार करने में विदेश मंत्रालय, भारत सरकार और बिहार सरकार से मिले अनवरत सहयोग एवं समर्थन के प्रति भी कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।

इसी क्रम में, मैं निवर्तमान कुलपतियों को भी धन्यवाद देता हूँ, विशेष रूप से प्रोफेसर अभय कुमार सिंह को, जिन्होंने समीक्षाधीन वर्ष के दौरान अंतरिम कुलपति के रूप में संस्थान को अपना कुशल नेतृत्व प्रदान किया।

प्रोफेसर सचिन चतुर्वेदी
कुलपति

इतिहास
अध्ययन विद्यापीठ

प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय का इतिहास भारतीय विद्वत् परंपरा की समृद्ध विरासत से जुड़ा है, और 'इतिहास अध्ययन विद्यापीठ' इसी विरासत से अनुप्राणित है। इस विद्यापीठ की पहचान संकाय सदस्यों, स्नातकोत्तर एवं डॉक्टरेट शोधार्थियों तथा पोस्ट-डॉक्टरल फेलो के उस जीवंत समुदाय से बनती है, जो इतिहास अनुसंधान के मौलिक प्रश्नों पर गहन अध्ययन एवं शोध में संलग्न हैं। यह दो एम.ए. कार्यक्रम – 'इतिहास' और 'पुरातत्व' – संचालित करता है।

शैक्षणिक वर्ष 2024–25 अपनी बौद्धिक जीवंतता के लिए विशेष उल्लेखनीय रहा, जिसमें संकाय और विद्यार्थियों ने एक बहुविषयक दृष्टिकोण अपनाते हुए एशियाई व वैश्विक संदर्भों में ज्ञान के नए आयाम उद्घाटित किए। इस पहल ने ऐतिहासिक अनुसंधान को संस्कृतियों, अंतःक्रियाओं और सभ्यताओं के विविध पहलुओं पर केंद्रित करने का एक विशिष्ट अवसर प्रदान किया।

इतिहास अध्ययन

एस.एच.एस विद्यापीठ का पाठ्यक्रम एशियाई और विश्व-इतिहास, सांस्कृतिक इतिहास, सभ्यतागत संबंध एवं पर्यावरणीय इतिहास, समुद्री और आर्थिक इतिहास, सामाजिक और धार्मिक इतिहास, तथा अन्य विषयों पर केंद्रित है। समालोचनात्मक चिंतन का शैक्षणिक आधार विद्यापीठ की प्रमुख विशेषताओं में से एक है। यहाँ के अध्यापन में अनुभव पर आधारित शिक्षा पर जोर दिया जाता है, जो पुस्तकीय ज्ञान को क्षेत्रीय अनुभव से जोड़ती है। यह विद्यापीठ, नालंदा की परंपरा के अनुरूप, अनिवार्य शोध-प्रबंध के माध्यम से विद्यार्थियों को अनुसंधान के मूल सिद्धांतों, सुदृढ़ तथ्यों के साथ तार्किक अभ्यास प्रशिक्षित करता है। अत्याधुनिक अनुसंधान के लिए प्रतिबद्ध है। यहाँ के प्रोफेसर इतिहास विषयक गहन शोध के लिए जाने जाते हैं। विद्यार्थी, बहु-विषयक ऐतिहासिक अनुसंधान हेतु पद्धतिगत और सैद्धांतिक दृष्टिकोणों के माध्यम से अकादमिक प्रशिक्षण ज्ञान और कौशल प्राप्त करते हैं।

शैक्षणिक वर्ष 2024-25 के दौरान, विद्यापीठ द्वारा पाठ्यक्रमों की एक श्रृंखला तैयार की गई जिसने व्यापक रूप से बौद्धिक ज्ञान-अर्जन के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित किया। ये पाठ्यक्रम विषयगत विविधता के साथ-साथ कालानुक्रमिक संरचना पर आधारित थे। "सभ्यताओं का जन्म" और "विश्व इतिहास" जैसे आधारभूत पाठ्यक्रमों ने विद्यार्थियों को प्राचीन समाजों से परिचित कराया, और यह बताया कि कैसे महत्वपूर्ण इतिहास प्रक्रियाएं विश्व के व्यापक संदर्भों द्वारा आकार लेती थी। "भारत का सांस्कृतिक इतिहास", "पुरातत्व एवं इतिहास", और "ऐतिहासिक पुरातत्व" जैसे विषयों ने विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति के पारस्परिक संबंधों को विभिन्न अंतर-विषयक पाठ्यक्रमों के माध्यम से परिचित कराया।

पाठ्यक्रम में विशिष्ट और क्षेत्रीय रूप से केन्द्रित अध्ययनों पर जोर दिया गया है, जैसे भारत का समुद्री इतिहास, हिंद महासागर में समुद्री अंतर्संबंध, एशिया व उससे आगे के मार्ग, हिंद महासागर के आदान-प्रदान नेटवर्क में भारत की इतिहास भूमिका, तथा उत्तरापथ-दक्षिणापथ के स्थल मार्ग। इनके पूरक के रूप में भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया तथा युगों से भारत के अंतर्राष्ट्रीय संबंध जैसे पाठ्यक्रम हैं, जो भारत के सभ्यतागत और अंतरक्षेत्रीय प्रभाव को रेखांकित करते हैं।

इसके अतिरिक्त के अन्य विषय जैसे कि भारत में सूफीवाद और भक्ति तथा चिंतनशील परंपराएं, भारत और चीन विषयक पाठ्यक्रम, भारत के समृद्ध इतिहास के आध्यात्मिक, भक्तिपूर्ण और दार्शनिक आयामों से सम्बद्ध हैं। साथ ही ये पाठ्यक्रम नालंदा विद्यार्थियों को प्राचीन नालंदा की समृद्ध ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और दार्शनिक परंपराओं का पता लगाने का अवसर प्रदान करता है। पाठ्यक्रम में भारतीय कला, सौंदर्यशास्त्र और वास्तुकला, आर्थिक इतिहास, भारतीय पुनर्जागरण और पर्यावरण इतिहास जैसे पाठ्यक्रम भी शामिल हैं जो पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को दृश्य इतिहास, आर्थिक इतिहास और पारिस्थितिकी की महत्वपूर्ण विषयों पर अध्ययन करने में सक्षम बनाते हैं। इतिहासलेखन, आद्य-इतिहास पुरातत्व और बौद्ध इतिहासलेखन पर उन्नत पाठ्यक्रम बौद्ध स्रोतों, इतिहास और पुरातत्व के संबंधों के साथ-साथ इतिहास लेखन के साथ आलोचनात्मक जुड़ाव को प्रोत्साहित करते हैं।

इस वर्ष यहाँ के संकाय सदस्यों और पोस्टडॉक्टरल विद्वानों ने महत्वपूर्ण शोध-संबंधी गतिविधियों में भागीदारी की। उन्होंने पुस्तकों के लेखन से लेकर जर्नल के लेखों और पुस्तक अध्यायों तक, विविध विद्वत्तापूर्ण प्रकाशनों में योगदान दिया।

एसएचएस के विद्यार्थी बराबर गुफाओं में फील्ड-वर्क के दौरान

डॉ कशफ़ ग़नी की पुस्तक ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस द्वारा प्रकाशित हुई, जिसमें मध्यकालीन भारत में सूफी अनुष्ठानों और भक्ति प्रथाओं के इतिहास पर उनके शोध प्रकासित हुए; उनके अन्य प्रकाशनों ने प्रारंभिक आधुनिक भारत में महाभारत जैसे भारतीय महाकाव्यों के अनुवाद के माध्यम से संस्कृत-फारसी बहुसंस्कृतिवाद के इतिहास की खोज की। डॉ. इलोरा त्रिवेदी ने दो शोध पत्र प्रकाशित किए, जिनमें दक्षिण-पूर्व एशिया में विरासत संरक्षण और उसके इतिहास के सहभागी संरचना की खोज की गई; तथा बौद्ध परंपराओं में करुणा के अंतर-सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व के इतिहास की जांच की गई। डॉ. तोसबंता पधान ने पश्चिमी ओडिशा में शिकार-संग्रह के इतिहास पर एक लेख प्रकाशित किया, जिसमें पुरातात्विक सामग्री पर आधारित जीवन-यापन की प्राचीन प्रणालियों पर व्यापक चर्चा के अंतर्गत रखा गया।

शैक्षणिक सहभागिता के लिए विद्यापीठ का यह एक जीवंत वर्ष रहा, जहां सदस्यों ने विभिन्न मंचों पर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों, सेमिनारों, कार्यशालाओं और व्याख्यान श्रृंखलाओं में सक्रिय रूप से भाग लिया। प्रस्तुतकर्ता और सत्र संचालक के रूप में संकाय सदस्यों ने इन गतिविधियों को बौद्धिक रूप से समृद्ध किया।

प्राचीन, मध्यकालीन और प्रारंभिक आधुनिक इतिहास, समुद्री इतिहास, पुरातत्व, विरासत संरक्षण और अंतर-सभ्यतागत संवाद आदि विषयों पर उनके शोध उल्लेखनीय रहे।

प्रोफेसर अभय कुमार सिंह ने संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय, न्यूयॉर्क, इलाहाबाद संग्रहालय, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पांडिचेरी विश्वविद्यालय, लुम्बिनी बौद्ध विश्वविद्यालय, नेपाल और राष्ट्रीय समुद्री विरासत परिसर, लोथल सहित कई मंचों में भाग लिया। उन्होंने ज्ञान परंपराओं और उनके संचरण, शिक्षा प्रणाली, प्राचीन भारतीय भाषाओं, बौद्ध धर्म, शांति के अभ्यास, आदि पर अपना शोधपूर्ण पत्र प्रस्तुत किया। डॉ कशफ़ ग़नी ने अशोक विश्वविद्यालय, आईआईटी-बॉम्बे इत्यादि महत्त्वपूर्ण' संस्थाओं में आमंत्रित व्याख्यान दिए, जिसमें उनके विषय सूफीवाद के इतिहास, भारत के भारत-फारसी इतिहास, मध्यकालीन और प्रारंभिक आधुनिक भारत में सांस्कृतिक अंतर्क्रियाओं और सांस्कृतिक प्रथाओं से संबंधित रहे। डॉ. इलोरा त्रिवेदी ने कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर योगदान दिया, जैसे लिपजिंग यूनिवर्सिटी, बोधगया ग्लोबल डायलॉग्स, जहां उन्होंने भारत और इंडोनेशिया की विरासत की सातत्यता, देवराम संघ में बौद्ध प्रथा, नालंदा के सभ्यतागत महत्व आदि पर अपने शोध प्रस्तुत किया।

एसएचएस के विद्यार्थी एक वर्कशॉप के दौरान प्रोफेसर ऑसमंड बोपेआराची के साथ।

डॉ. प्रांशु समदर्शी ने अपने शोध में बौद्ध धर्म के इतिहास-लेखन, सांस्कृतिक आयामों, और इसके अंतर-क्षेत्रीय प्रसार से संबंधित विषय प्रस्तुत किए। उनके कार्य में तिब्बती बौद्ध धर्म, तांत्रिक परंपराओं और व्यापक नालंदा परिदृश्य के भीतर क्रिमिला(लखीसराय) के भौगोलिक क्षेत्र पर नालंदा के प्रभाव की जाँच की गई है।उन्होंने बौद्ध और हिंदू स्थापत्य प्रतीकवाद में तुलनात्मक अंतर्दृष्टि का पता लगाया। डॉ. तोसबंता पधान ने भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, विश्व पुरातत्व कांग्रेस, ग्लोबल हेरिटेज कॉन्क्लेव में पुरातात्विक अनुसंधान के क्षेत्र में कार्यशालाओं और सम्मेलनों में भाग लिया। उन्होंने पुरातत्व, प्रागितिहास और पुरातत्व, क्षेत्रों पर ध्यान देने के साथ भारत के प्रागितिहास, राजगीर के ऐतिहासिक पुरातत्व में चकमक पत्थर की नैपिंग पर अपना शोध साझा किया। डॉ. इलोरा त्रिवेदी एक शोध परियोजना में लगी हुई हैं, जो नाविकों के संरक्षक और रक्षक के रूप में बोधिसत्व अवलोकितेश्वर की महत्वपूर्ण भूमिका का पता लगाती है, जिसे ईएनएस-सीएनआरएस पेरिस, यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया, बर्कले यूएसए और श्रीलंका सरकार के पुरातत्व विभाग का समर्थन प्राप्त है।

इस विद्यापीठ के शैक्षणिक और बौद्धिक वातावरण को भी विशिष्ट व्याख्यानों, कार्यशालाओं और शैक्षणिक सहयोगों की एक श्रृंखला के माध्यम से बढ़ावा दिया गया। भारत और विदेशों के विद्वानों को एक साथ लाने से संकाय, शोधकर्ताओं और विद्यार्थियों को इतिहास, कला, पुरातत्व, विरासत और संस्कृति के विविध विषयों से जुड़ने का अवसर मिला। लिपजिंग यूनिवर्सिटी की प्रोफेसर मोनिका ज़िन ने भारत और मध्य एशिया में कलात्मक उत्पादन के दर्शन के रूप में समरूपता और दर्पण के दृश्य आयामों पर महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान की। ईएनएस-सीएनआरएस पेरिस और यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया, बर्कले यूएसए के प्रोफेसर ओसमंड बोपेराच्ची द्वारा कला, प्रतिमा विज्ञान और मुद्राशास्त्र पर एक कार्यशाला आयोजित की गई। ब्रिटिश कोलंबिया यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर डेविड गीरी ने बौद्ध विरासत और कूटनीति पर व्याख्यान दिया।
इस तरह की चर्चाओं ने इतिहास, कला इतिहास और पुरातत्व – के लिए अंतःविषय दृष्टिकोण की पेशकश की जो एसएचएस के महत्वपूर्ण घटक हैं।

अंतर-सभ्यतागत संवाद के प्रति विद्यापीठ की प्रतिबद्धता को ग्रीक इतिहास, विरासत और संस्कृति पर एक विशेष व्याख्यान श्रृंखला के माध्यम से आगे बढ़ाया गया। इसमें ग्रीस के एरिस्टोटल यूनिवर्सिटी ऑफ थेसालोनिकी के प्रतिष्ठित विद्वानों ने भाग लिया, जिन्होंने ग्रीक विचार के भीतर भारतीय परंपराओं, ग्रीक साहित्यिक कल्पना में पूर्व के प्रतिनिधित्व और आधुनिक लेखकों के कार्यों के माध्यम से अंतर-सांस्कृतिक परासरण पर समृद्ध अंतर्दृष्टि प्रदान की।

इस विद्यापीठ ने कलकत्ता विश्वविद्यालय के प्रोफेसर अमित डे द्वारा भारतीय पुनर्जागरण पर पढ़ाए जाने वाले पाठ्यक्रम से जुड़े विस्तृत व्याख्यानों की एक श्रृंखला भी आयोजित की। इन व्याख्यानों में आधुनिक भारतीय इतिहास और राष्ट्रवादी विचार के विकास से संबंधित विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला को शामिल किया गया। इनमें, भारतीय पुनर्जागरण पर इतिहास बहस के परिप्रेक्ष्य को विशेष महत्त्व दिया गया। इसमें सामाजिक दिग्गजों और सामाजिक प्रथाओं के अग्रणी योगदान पर बल दिया गया है, जिन्होंने 19वी और 20वी शताब्दी में औपनिवेशिक भारत के पुनर्जागरण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन शैक्षणिक आयोजनों ने विद्यार्थियोंऔर शिक्षकों को भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक इतिहास की सूक्ष्म समझ प्रदान की।

विद्यापीठ ने संगठनों, संस्थानों, प्रकाशनों और अनुसंधान प्लेटफार्मों के साथ विभिन्न क्षमताओं में अपने संकाय सदस्यों की सक्रिय भागीदारी के माध्यम से अपने शैक्षणिक और संस्थागत संबंधों को मजबूत करना जारी रखा। प्रोफेसर अभय कुमार सिंह को राष्ट्रीय समुद्री विरासत परिसर, लोथल (गुजरात) और बिहार संग्रहालय पटना में सलाहकार बोर्ड के सदस्य के रूप में आमंत्रित किया गया था। डॉ. कशफ गनी को प्राइमस बुक्स द्वारा दक्षिण एशिया में धर्म और समाज पर एक पुस्तक श्रृंखला के संपादकीय सलाहकार बोर्ड के सदस्य के रूप में और अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं के लिए अकादमिक समीक्षक के रूप में आमंत्रित किया गया था। डॉ. तोसाबंता पधान को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, महाराजा कॉलेज एर्नाकुलम, कोच्चि और फकीर मोहन कॉलेज, बालासोर द्वारा अकादमिक संसाधन व्यक्ति के रूप में आमंत्रित किया गया था।

इतिहास अध्ययन विद्यापीठ विद्यार्थियों को इतिहास के मुख्य सिद्धांतों और तरीकों के साथ-साथ सघन चिंतन और अनुसंधान की प्रक्रिया में प्रशिक्षित करता है। इस विद्यापीठ की विशेषताओं में से एक यह कि है यहाँ तार्किक चिंतन पर अध्यापन होता है जो पुस्तकीय ज्ञान को प्रायोगिक अनुभव से जोड़ता है। इतिहास अध्ययन विद्यापीठ भारत और विदेशों के विद्वत समदायों को एक साथ ला रहा है, जिससे प्रोफेसर और विद्यार्थियों को इतिहास, कला, पुरातत्व, विरासत और संस्कृति के अलग-अलग विषयों पर काम करने का मौका मिलता है।

विद्यापीठ के विद्यार्थियों ने अंतःविषयक फोकस और वैश्विक परिप्रेक्ष्य को सामने रखते हुए ऐतिहासिक, पुरातात्विक और सांस्कृतिक विषयों की एक श्रृंखला पर अपने मास्टर शोध प्रबंध किए। शोध प्रबंध के विषयों में भारतीय मसाला व्यापार, हिंद महासागर में समुद्र, बौद्ध चिंतनशील परंपराएं, पूर्व-आधुनिक श्रीलंका में राज्य और संघ, भारत में बौद्ध कला, भूटान में प्रार्थना झंडों का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व, नरसंहार का चित्रण, शैलचित्रों और भू-आकृतियों का पुरातात्विक अध्ययन, पड़ोस में भारत के राजनयिक संबंध आदि शामिल थे।

पुरातत्व

प्राचीन भारतीय ज्ञान-मीमांसा कभी भी रेखीय इतिहास या केवल पाठ्य-संग्रह तक सीमित नही रही, जो पाश्चात्य इतिहास-लेखन पर हावी है। इसके विपरीत, भारत ने मौखिक परंपराओं, अनुष्ठान प्रथाओं, नैतिक जीवन-शैली और पारिस्थितिक ज्ञान को अपनाया। साथ ही, इसने स्मृति और साक्ष्य के अनुरूप इतिहास-लेखन की एक विशिष्ट व्यवस्था विकसित की। पुरातत्व अब अपनी परंपरागत सीमाओं से आगे बढ़कर, इतिहास, नृविज्ञान, भूविज्ञान, जीव विज्ञान और संबद्ध विज्ञानों से अंतर्दृष्टि प्राप्त करके इस बहुलवादी और एकीकृत भावना को मूर्त रूप देता है। इस तरह के अंतःविषयक दृष्टिकोण के माध्यम से विद्यार्थियों को यह समझने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है कि मानव समाज किस प्रकार विकसित हुआ, और उसने प्रकृति के साथ अंतरसंबंध स्थापित करके प्रौद्योगिक प्रणालियों एवं संस्कृतियों का विकास किया।

इस बौद्धिक क्षितिज के भीतर, इतिहास अध्ययन विद्यापीठ ने 2024-25 तक पुरातत्व में एमए का एक एकीकृत पाठ्यक्रम शुरू किया है, जहां ग्रंथों, परिदृश्यों, कलाकृतियों और जीवन प्रथाओं को प्रतिस्पर्धी प्राधिकरणों के बजाय समान विषय के रूप में माना जाता है। यह कार्यक्रम वस्तु-केन्द्रवाद के संकीर्ण मॉडलों से आगे बढ़कर वैज्ञानिक विश्लेषण को सामाजिक-मानवशास्त्रीय व्याख्या के साथ पद्धतिगत रूप से एकीकृत करता है। ऐतिहासिक पुरातत्व पाठ्यक्रम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जहां साक्ष्य के प्राथमिक स्रोतों के रूप में पुरालेखशास्त्र, पुरालेखशास्त्र और मुद्राशास्त्र पर केंद्रित है। पुरातात्विक अनुसंधान के लिए आवश्यक आधार के रूप में इन सामग्रियों के व्यवस्थित अध्ययन और व्याख्या के लिए समर्पित कोर पाठ्यक्रम तैयार किए गए हैं। प्रयोगशाला कार्य से लेकर व्याख्यात्मक ढांचे तक सिद्धांत और व्यवहार को समान महत्व दिया जाता है। यह संतुलित परिप्रेक्ष्य नालंदा भावना को मूर्त रूप देता है, तथा चेतना, विकास और पोषण में मानव और प्रकृति को समान सह-अभिनेता के रूप में पुष्टि करता है।

यह कार्यक्रम आलोचनात्मक जांच और क्षेत्र विधियों और तकनीकों पर जोर देता है, जिससे विद्यार्थियोंऔर शिक्षकों को नए पुरातात्विक स्थलों, अप्रकाशित स्थानों और वस्तुओं की पहचान करने और उनका दस्तावेजीकरण करने में मदद मिलती है, साथ ही नई व्याख्याएं भी सामने आती हैं। पुरातत्व में प्रयोगशाला-आधारित विज्ञान विद्यार्थियों को क्षेत्र-आधारित शिक्षा के साथ वैज्ञानिक तकनीकों को एकीकृत करते हुए मानव और पशु कंकाल विश्लेषण, जीवाश्म अध्ययन, पुरावनस्पति विश्लेषण और सिरेमिक विश्लेषण के रासायनिक दृष्टिकोण में मूलभूत कौशल से जोड़ता है। पुरातत्व प्रयोगशाला में विभिन्न शैलियों की विभिन्न वस्तुएं, उपकरण और अध्ययन प्रदर्शनियां रखी गई हैं, जिससे विद्यार्थियों को कक्षा से परे अभ्यास-आधारित प्रशिक्षण और स्वतंत्र अनुसंधान आरंभ करने के लिए स्थान मिलता है। लैब माइक्रोस्कोप, ३ डी स्कैनर, सर्वेक्षण उपकरण और जीआईएस वर्कस्टेशन सहित उन्नत उपकरणों की खरीद के माध्यम से अपनी क्षमताओं का विस्तार कर रही है।

डॉ. तोसबंत पधान ने प्रागैतिहासिक काल और मानव-पर्यावरण अंतःक्रिया पर शोध किया है। डॉ. इलोरा त्रिवेदी के शोध में नालंदा के मूर्तिकला कार्यक्रमों और बिहार के पड़ोसी मठ केंद्रों में उनके प्रसार का विश्लेषण किया गया है। यह शोध पता लगाता है कि नालंदा के मूर्तिकला कार्यक्रमों और अनुष्ठान स्थलों ने किस प्रकार दार्शनिक अवधारणाओं को मूर्त रूप दिया। साथ ही, यह दर्शाया गया है कि ये रूप शिक्षाशास्त्र, तीर्थयात्रा और संरक्षण के माध्यम से बिहार के मठों के हृदयस्थल से लेकर स्पीति घाटी और लद्दाख, श्रीलंका और पूरे दक्षिण-पूर्व एशिया तक कैसे पहुँचे। नालंदा, कुर्कीहार, तेलहारा और बोधगया पर उनका जारी शोध बिहार, बंगाल और ओडिशा में कलात्मक परंपराओं के विकास को रेखांकित करता है।

उदयगिरि पहाड़ियों में फील्ड वर्क के दौरान पुरातत्व के विद्यार्थी

कार्यक्रम के एक भाग के रूप में विद्यार्थियोंके लिए यहाँ आईआईटी, आईआईएसईआर, डेक्कन कॉलेज, एनआईएएस और एमएसयू के विजिटिंग प्रोफेसरों द्वारा व्याख्यान भी आयोजित किए गए, साथ ही प्रोफेसर ओसमंड बोपेराच्ची (ईएफईओ–सीएनआरएस/यूसी बर्कले) जैसे प्रतिष्ठित विद्वानों द्वारा मुद्राशास्त्र, कला और पुरातत्व पर; प्रोफेसर मोनिका ज़िन (लाइपसिग यूनिवर्सिटी) द्वारा भारतीय कला और मध्य एशिया/चीन के बीच संबंधों पर; प्रोफेसर के. कृष्णन (एमएस यूनिवर्सिटी ऑफ बड़ौदा) हड़प्पा पुरातत्व पर ; और डिजिटल प्रौद्योगिकी पर प्रोफेसर केपी राव (हैदराबाद विश्वविद्यालय) के भी व्याख्यान भी आयोजित किए गए। विश्व विरासत सप्ताह (नवंबर 2024) को विद्यार्थियों के नेतृत्व वाली प्रदर्शनियों, विश्वविद्यालय के सभी विद्यापीठों के अंतर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक प्रदर्शनों और विरासत संबंधी वार्ताओं के साथ भी मनाया गया।

कला, प्रतिमा विज्ञान और मुद्राशास्त्र पर कार्यशाला के दौरान एसएचएस के प्राध्यापक और विद्यार्थी प्रोफेसर ऑसमंड बोपेआराची के साथ।

संकाय प्रकाशन और अन्य शैक्षणिक योगदान

प्रकाशन:

- गनी, कशफ. **सूफी अनुष्ठान और प्रथाएँ: दक्षिण एशिया के अनुभव**, 1200–1450. ऑक्सफ़ोर्ड: ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2024.
- गनी, कशफ. 2025. **"नाटकीय युद्ध, रोचक कहानियाँ और पौराणिक राजा: महाभारत का रज़्मनामा के रूप में फ़ारसी रूपांतरण."** महाभारत कथा की समकालीनता में: क्षण का महाकाव्य, अनिरबन भट्टाचार्य और ध्रुवज्योति सरकार द्वारा संपादित. एबिंगडन और न्यूयॉर्क: रूटलेज.
- त्रिवेदी, इलोरा. 2025. **"कल के लिए विरासत: वियतनाम और इंडोनेशिया में सामुदायिक सहभागिता के माध्यम से सतत संरक्षण."** दक्षिण पूर्व एशियाई समीक्षा 49: 71–90. आईएसएसएन 0257-7364.
- त्रिवेदी, इलोरा. 2025. **"अनंत करुणा: बौद्ध प्रथाओं में करुणा के अवतार के रूप में कुआन यिन का विकास."** टीडी थिएन और थिच नहत तु, सं., माइंडफुलनेस इन एजुकेशन फॉर ए कम्पैशनेट एंड सस्टेनेबल फ्यूचर, 1–18. हो ची मिन्ह सिटी: होंग डुक पब्लिशिंग हाउस.

सम्मेलनों और आमंत्रित वार्ताओं की सूची

- गनी, कशफ. **सूफीवाद और दक्षिण एशिया के भारतीय-फारसी अतीत पर आमंत्रित व्याख्यान**, इतिहास विभाग, अशोक विश्वविद्यालय, 20 मार्च, 2025.
- गनी, कशफ. **मेल्टिंग पॉट पर बातचीत: दक्षिण एशिया में सूफीवाद और धार्मिक बातचीत पर आमंत्रित वार्ता**, मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग, आईआईटी बॉम्बे, 18 मार्च, 2025.
- पधान, तोसाबंता. 2025. **"छत्तीसगढ़ के प्रागितिहास की समीक्षा."** आईएएस, आईएसपीक्यूएस और एचसीएस का 55वां संयुक्त वार्षिक सम्मेलन, पं. रविशंकर शुक्ला विश्वविद्यालय, रायपुर, 7–9 मार्च.
- पधान, तोसबंत. 2025. **"राजगीर की साइक्लोपियन दीवारों का पुरातत्व."** विश्व पुरातत्व कांग्रेस (डब्ल्यू ए सी-10), फ्लिंडर्स विश्वविद्यालय, ऑस्ट्रेलिया, 22–28 जून.
- पधान, तोसबंत. 2024. **"राजगीर पहाड़ियों और आस-पास के क्षेत्रों में पुरातात्विक जांच."** तीसरा ग्लोबल हेरिटेज कॉन्क्लेव, रांची विश्वविद्यालय, 27–28 जुलाई.
- पधान, तोसबंत. 2025. **"राजगीर और उसके आसपास के क्षेत्रों का ऐतिहासिक पुरातत्व."** राष्ट्रीय संगोष्ठी, बिहार राज्य अभिलेखागार निदेशालय, पटना, 8–10 फरवरी..
- पधान, तोसबंत. 2025. प्रागितिहास पर आमंत्रित व्याख्यान श्रृंखला, पुरातत्व में स्नातकोत्तर डिप्लोमा, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, ग्रेटर नोएडा, 13–15 फरवरी.
- पधान, तोसबंत. 2024. **"ओडिशा और संभलपुर क्षेत्र का प्रागितिहास."** 5वी पैलियो ऑनलाइन व्याख्यान श्रृंखला, 9 नवंबर.
- पधान, तोसबंत. 2025. **"पूर्वी गुजरात, भारत में पुरापाषाण और शैल कला जांच."** विश्व पुरातत्व कांग्रेस (डब्ल्यूएसी-10), फ्लिंडर्स युनिवर्सिटी, ऑस्ट्रेलिया, 22–28 जून.
- पधान, तोसाबंता. 2024. संसाधन व्यक्ति, पुरातत्व में **फ्लिंट नैपिंग पर कार्यशाला**, कश्मीर विश्वविद्यालय, 9–13 दिसंबर.
- पधान, तोसबंत. 2025. संसाधन व्यक्ति, **स्टोन टूल नैपिंग पर राष्ट्रीय कार्यशाला**, फकीरा मोहन विश्वविद्यालय, बालासोर, 18–21 जुलाई.
- पधान, तोसबंत. 2024. सह-लेखक, **"भूटान प्रागितिहास."** लिथिक स्टडीज सोसाइटी कॉन्फ्रेंस (ऑनलाइन), यूनाइटेड किंगडम, 11–12 अक्टूबर.
- पधान, तोसबंत. 2024. **"प्रागैतिहासिक भारत का विकास: पत्थर के औजार प्रौद्योगिकी से लेकर शैल कला तक."** सेंट थॉमस कॉलेज, पाला, केरल, 23 जुलाई.
- समदर्शी, प्रांशु. **"नालंदा परंपरा और तिब्बत में बौद्ध धर्म का प्रसार."** सेमिनार में प्रस्तुत पेपर हिमालयी सीमाएँ: भारत का अपने पड़ोसियों के साथ संबंध – चीन और नेपाल, भारतीय सेना की केंद्रीय कमान, 25 मार्च, 2025.
- समदर्शी, प्रांशु. **"गोपनीय शास्त्र का समायोजन: तिब्बत में बौद्ध तंत्रों का ऐतिहासिक वर्गीकरण."** इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आईजीएनसीए), क्षेत्रीय केंद्र, वाराणसी (ऑनलाइन), 28 मार्च, 2025 को भारतीय ज्ञान परंपरा और सामाजिक विद्यार्थीवृत्ति पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रस्तुत किया गया पेपर.

संकाय प्रकाशन और अन्य शैक्षणिक योगदान

- समदर्शी, प्रांशु. **“क्रिमिला का पुनर्मूल्यांकनः पावन क्षेत्र, कला और नालंदा-परंपरा के साथ इसका संबंध.”** जिला प्रशासन, लखीसराय और बिहार पर्यटन, बिहार सरकार द्वारा 2 मई, 2025 को आयोजित सेमिनार में प्रस्तुत पेपर.
- समदर्शी, प्रांशु. **“स्तूप, मंडल और यंत्रः प्राचीन भारत की बौद्ध और हिंदू स्थापत्य परंपराओं से अंतर्दृष्टि.”** बहु-विषयक पुनश्चर्या कार्यक्रम के लिए संसाधन व्यक्ति के रूप में ऑनलाइन व्याख्यान, यूजीसी-एमएमटीटीसी, असम विश्वविद्यालय, सिलचर, 11 अप्रैल, 2025.
- सिंह, अभय कुमार, संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय, न्यूयॉर्क में भारत के स्थायी मिशन (पीएमआई) द्वारा 15 मई, 2025 को आयोजित पैनल चर्चा, **“गौतम बुद्ध की शिक्षाएंः आंतरिक और बाह्य शांति के मार्ग”,** मुख्य भाषण, स्वर्णिम मध्य से वैश्विक शांति तक, (ऑनलाइन)
- सिंह, अभय कुमार, विशेष संबोधन, “**इतिहास दर्शन के परिप्रेक्ष्य और सभ्यता के संपर्क”**, केसी चट्टोपाध्याय स्मारक व्याख्यान, इलाहाबाद संग्रहालय, 23 अक्टूबर, 2024.
- सिंह, अभय कुमार, विदाई भाषण, **मुहम्मद इकबाल की चिंताएँः बुद्ध और स्वामी विवेकानंद, जावेदनामा”,** अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में, फ़ारसी अध्ययन संस्थान, इंडिया इंटरनेशनल सेंटर (आईआईसी), नई दिल्ली, 6 अक्टूबर, 2024.
- सिंह, अभय कुमार, “**अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन भारत–नेपाल संबंध”**, दक्षिण एशिया केंद्र, इंडिया इंटरनेशनल सेंटर (आईआईसी), नई दिल्ली, 26 फरवरी–27, 2025 में प्रस्तुत पेपर.
- सिंह, अभय कुमार, **प्रस्तुत पेपर, फारस की खाड़ी के तटीय क्षेत्र में भूली हुई भारतीय विरासत,** भारतीय समुद्री विरासत सम्मेलन, लोथल में, 11–12 दिसंबर, 2024.
- त्रिवेदी, इलोरा, 2024. **“निर्वासित स्तम्भ और भूली हुई स्मृतियाँः देवराम संघ में बौद्ध अभ्यास.”** ईएएसएए
- का 26वां अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, लिपजिंग यूनिवर्सिटी, जर्मनी, 18 सितंबर.
- त्रिवेदी, इलोरा, 2025. **“स्मारकों से परेः भारत और इंडोनेशिया में समुदाय के माध्यम से विरासत का संरक्षण,”** 7वां बोधगया वैश्विक संवाद, देशकल सोसाइटी, नई दिल्ली, 29–30 मार्च.
- त्रिवेदी, इलोरा. **“नालंदा का सभ्यतागत महत्व.”** नालंदा संवाद संगोष्ठी, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, पटना पुस्तक महोत्सव, पटना, 21–27 मार्च 2025.
- त्रिवेदी, इलोरा. अध्यक्ष, **सत्र “पूर्वी भारत में प्रगति.”** ईएएसएए का 26वां अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, सैक्सन एकेडमी ऑफ आर्ट्स, लीपज़िग, सितंबर, 2024
- त्रिवेदी, इलोरा, **“विश्व सभ्यताओं में वर्षा जल संचयन का इतिहास और पुरातनता.”** मेलबंदन अकादमिक ट्रस्ट, कोलकाता द्वारा आयोजित कार्यशाला, 27–28 दिसंबर, 2024
- त्रिवेदी, इलोरा. **कला और आइकनोग्राफी पाठ्यक्रम पर व्याख्यान श्रृंखला**, पुरातत्व में स्नातकोत्तर डिप्लोमा, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, ग्रेटर नोएडा, 1–5 अप्रैल 2025
- त्रिवेदी, इलोरा. पैनलिस्ट, **“मानवीय गरिमा के लिए एकता और समावेशिता.”** संयुक्त राष्ट्र वेसाक दिवस 2025 सम्मेलन, हो ची मिन्ह सिटी, वियतनाम (ऑनलाइन), 6–8 मई, 2025
- त्रिवेदी, इलोरा, **“सतत साझा भविष्य की ओरः विरासत संरक्षण और सामुदायिक भूमिकाएँ.”** एलपीपीएम यूनिवर्सिटास जाम्ब के सहयोग से 5वां हरित विकास अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (जीडीआईसी), 2024.
- त्रिवेदी, इलोरा, सम्मेलन प्रतिभागी, विहार परियोजना सम्मेलनः **“गुप्त काल से 15वी शताब्दी तक मठवासी संस्थाएं और धर्मनिरपेक्षता”,** हैमिल्टन कॉलेज, विश्वविद्यालय और बिहार संग्रहालय, पटना, 18 दिसंबर. , 2024.

विशिष्ट व्याख्यान और शैक्षणिक गतिविधियाँ

- डॉ. डेविड गीरी, ब्रिटिश कोलंबिया यूनिवर्सिटी — **“विरासत कूटनीति और बौद्ध स्मृति के बुनियादी ढांचे पर विशिष्ट व्याख्यान.”** 20 नवंबर, 2024.
- प्रोफेसर मोनिका ज़िन, लिपजिंग यूनिवर्सिटी — भारत और कुचा में कला के परिभाषित सिद्धांतों के रूप में **“समरूपता और दर्पण पर विशिष्ट व्याख्यान.”** 31 जनवरी, 2025.
- प्रोफेसर एंजेलिकी ज़ियाका, एरिस्टोटल यूनिवर्सिटी ऑफ थेसालोनिकी — विशेष व्याख्यान **“ग्रीस में हिंदू धर्म और बौद्ध धर्म का ज्ञान.”**

प्रकाशन और अन्य शैक्षणिक योगदान

- प्रोफेसर शेकर मूसा, एरिस्टोटल यूनिवर्सिटी ऑफ थेसालोनिकी — विशेष व्याख्यान **“ग्रीक साहित्य में ओरिएंट: प्राचीन और आधुनिक ग्रीक साहित्यिक ग्रंथों की समीक्षा.”**
- डॉ इओना नौम, एरिस्टोटल यूनिवर्सिटी ऑफ थेसालोनिकी — **“कॉन्स्टेंटिनोस थियोटोकिस, एक ‘मंत्रमुग्ध’ आधुनिक लेखक: क्रॉस-सांस्कृतिक परासरण और सामाजिक चिंताएँ पर विशेष व्याख्यान.”** (ग्रीक इतिहास, विरासत और संस्कृति पर विशेष व्याख्यान श्रृंखला का हिस्सा, 1 फरवरी, 2025.)
- प्रोफेसर ओसमंड बोपेराच्ची, मानद फेलो, फ्रेंच अकादमी (ईएनएस–सीएनआरएस) और यूसी बर्कले — **कला, आइकनोग्राफी और मुद्राशास्त्र पर तीन दिवसीय कार्यशाला.** 10–13 फरवरी, 2025.
- प्रोफेसर अमित डे, प्रमुख, इतिहास विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय — **विस्तृत व्याख्यान श्रृंखला.** 27 अप्रैल – 7 मई 2025.

▲ इतिहास अध्ययन विद्यापीठ (एसएचएस) के विद्यार्थी और प्राध्यापक, अतिथि प्राध्यापक प्रोफेसर शीला मिश्रा के साथ जेठियन घाटी में फील्ड विज़िट के दौरान

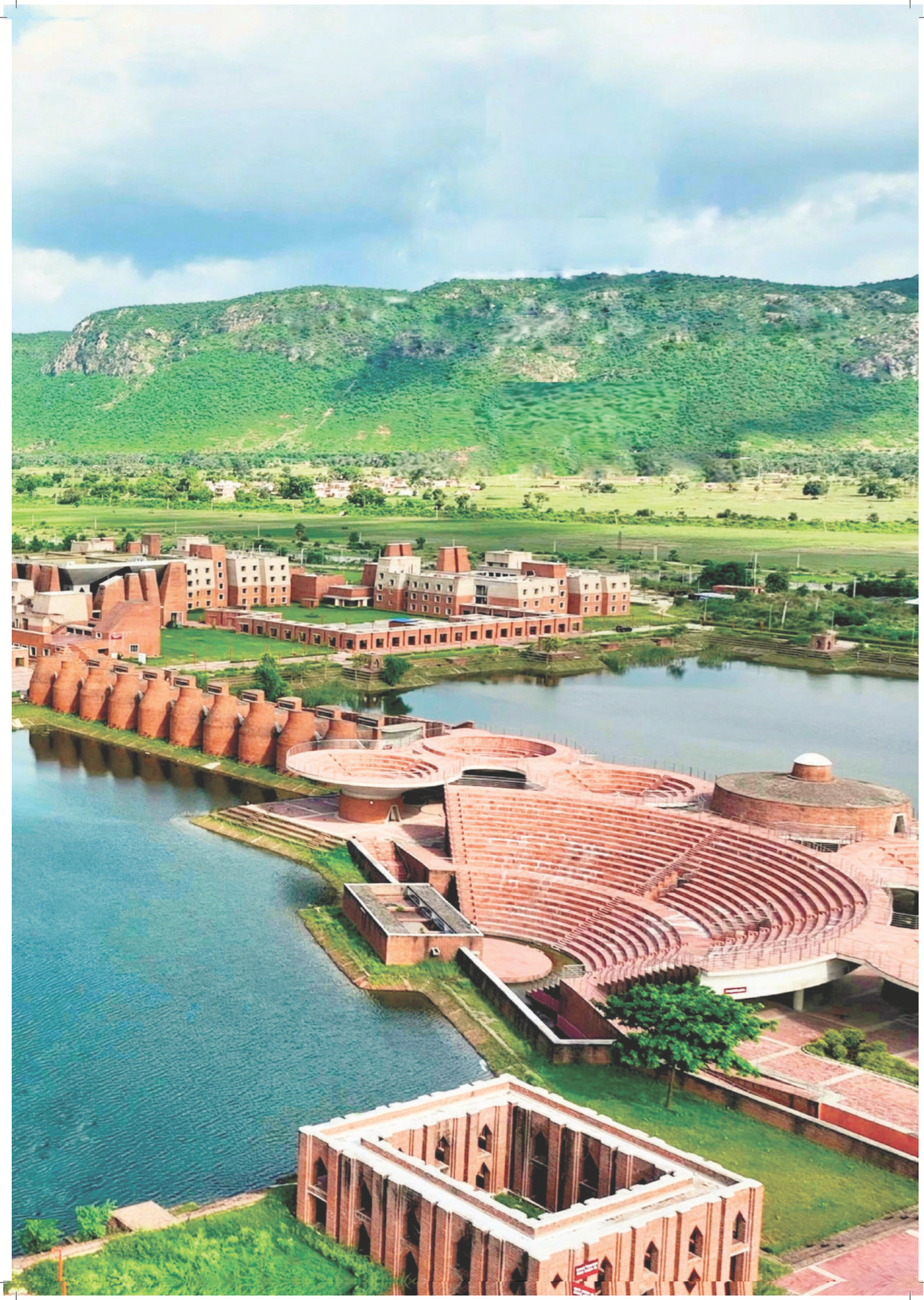

पारिस्थितिकी और पर्यावरण
अध्ययन विद्यापीठ

पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण अध्ययन विद्यापीठ, नालंदा विश्वविद्यालय के उन प्रथम विद्यापीठों में से एक है जिसने अगस्त 2014 में अपने शैक्षणिक कार्यक्रम आरंभ किए थे। यह मानव समाज और उसके परिवेश के बीच होने वाली अंतःक्रिया का एक समग्र दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। इस विद्यापीठ को इस प्रकार विकसित किया गया है कि वह अतीत के दार्शनिक ज्ञान में निहित देशज विद्वता के माध्यम से पारिस्थितिक शिक्षा की नई परिभाषा स्थापित करे, साथ ही स्थिरता के भविष्य पर गहन दृष्टि रखे। पारिस्थितिकी और पर्यावरण अध्ययन में दो वर्षीय पूर्णकालिक आवासीय स्नातकोत्तर कार्यक्रम तथा चार वर्षीय डॉक्टरेट कार्यक्रम प्रदान करता है। दोनों कार्यक्रम अनुसंधान-केंद्रित हैं, जो विद्यार्थियों को पारिस्थितिकी के क्षेत्र में अग्रणी विद्यार्थीवृत्ति और नेतृत्व के लिए तैयार करने हेतु सघन वैज्ञानिक अनुसंधान को सारगर्भित नीतिगत दृष्टिकोण से जोड़ते हैं।

पारिस्थितिकी और पर्यावरण अध्ययन

विद्यापीठ का ध्यान वैश्विक, क्षेत्रीय और स्थानीय पर्यावरणीय चिंताओं, विशेष रूप से एशिया की विशिष्ट समस्याओं के लिए सार्थक और व्यावहारिक समाधान तैयार करने पर केंद्रित है। इस के पाठ्यक्रम की शैक्षणिक परिणति भारत की रणनीतिक नीतियों को निर्देशित करने और पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन में भाग लेने वाले देशों के बीच सहयोग को बढ़ावा देने के लिए सहयोगी हैं। यह विद्यापीठ प्रमुखता से सुनिश्चित करता है कि जलवायु परिवर्तन और समुद्री पर्यावरण जैसे विषयगत क्षेत्रों में अनुसंधान सीधे क्षेत्रीय ज्ञान के आदान-प्रदान और संधारणीय शासन को संबल प्रदान करे।

इस विद्यापीठ का एक प्रमुख सुविचारित उद्देश्य पश्चिमी और पूर्वी दृष्टिकोणों के बीच पर्यावरणीय विमर्श में अक्सर उभरने वाले वैचारिक अंतराल को पाटना है। इस प्रक्रिया में ऐसी आलोचनात्मक समझ विकसित करना शामिल है, जो न केवल वैश्विक हित में हो, बल्कि एशिया की विशिष्ट आवश्यकताओं की भी पूर्ति करे। विद्यापीठ की कार्यप्रणाली की आधारशिला उसकी पूर्णतः अंतःविषयक संरचना है।

इस विद्यापीठ का उद्देश्य बुनियादी विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और मानविकी से प्राप्त ज्ञान को समग्र रूप से संयोजित करना है। इस अंतःविषयक जाँच को पारंपरिक अनुशासनात्मक बाधाओं को पार करने के लिए आवश्यक माना जाता है, क्योंकि इन बाधाओं ने ऐतिहासिक रूप से जटिल सामाजिक-पारिस्थितिक समस्याओं की समझ को खंडित किया है। इसके अलावा, एसईईएस स्वीकार करता है कि एशिया और ग्लोबल साउथ में, पर्यावरणीय चुनौतियाँ मानव-प्रधान परिदृश्यों और जल परिदृश्यों में भारी रूप से मौजूद हैं। मानव-प्रधान प्रणालियों पर केंद्रित यहाँ के पाठ्यक्रमों का उद्देश्य है कि जैव विविधता संरक्षण और अनुकूली प्रबंधन जैसी अवधारणाओं पर अनुसंधान एक विशिष्ट प्रासंगिक और सामाजिक रूप से महत्त्वपूर्ण अर्थ ग्रहण करे।

साथ ही, यह विद्यापीठ के कार्य को पर्यावरणीय न्याय और सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त संरक्षण रणनीतियों की समकालीन आवश्यकताओं के साथ संरेखित करता है। वैज्ञानिक जांच और नीतिगत दृष्टिकोण पर आधारित यह कार्यक्रम विद्यार्थियों को जलवायु लचीलापन, जैव विविधता संरक्षण, पर्यावरण न्याय और सतत विकास का पता लगाने में सक्षम बनाता है।

इस विद्यापीठ का अनुसंधान और शोध एजेंडा एक समग्र दृष्टिकोण पर आधारित है, और इसे चार निर्दिष्ट विषयगत क्षेत्रों द्वारा निर्देशित किया गया है, जिन्हें एशियाई संदर्भ में सबसे महत्त्वपूर्ण पर्यावरण और विकास संबंधी चुनौतियों के समाधान हेतु सावधानीपूर्वक चुना गया है। पारिस्थितिकी, जैव विविधता संरक्षण, जलवायु परिवर्तन, ऊर्जा अध्ययन, परिपत्र अर्थव्यवस्था, वायुमंडलीय और पृथ्वी विज्ञान, विष विज्ञान और जैव प्रौद्योगिकी, आपदा प्रबंधन, भू-सूचना विज्ञान तथा समुद्री पर्यावरण जैसे अनुसंधान क्षेत्रों का यह रणनीतिक समूह पर्यावरण-विकास संबंधी जटिलताओं से निपटने के लिए एक सुसंगत ढांचा प्रदान करता है। ये सभी स्तंभ मिलकर वैश्विक स्तर पर सामाजिक आयामों, प्रणालीगत जोखिमों, विकासात्मक प्रेरकों और भौगोलिक कमजोरियों पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण अध्ययन में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम एक व्यापक दो वर्षीय, 64 क्रेडिट वाला कार्यक्रम है, जिसे शैक्षणिक दृढ़ता के साथ डिज़ाइन किया गया है। पाठ्यक्रम की रूपरेखा ज्ञान के समग्र दृष्टिकोण को अपनाती है। यह व्यावहारिक अनुप्रयोग के अवसरों को पहचानते हुए, समझ, विश्लेषणात्मक क्षमताओं और संश्लेषण कौशल को विकसित करने के लिए पाठ्यक्रमों की संरचना करती है।

आई.यू.आई.एन.डी.आर.आर
- आपदा जोखिम न्यूनीकरण
के लिए नोडल केंद्र

गृह मंत्रालय ने नालंदा विश्वविद्यालय को आपदा जोखिम न्यूनीकरण के लिए नोडल केंद्र के रूप में नामित किया है। विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशिया में भूस्खलन, भूकंप, बाढ़ और अन्य खतरों जैसी प्रमुख आपदा घटनाओं पर शोध-प्रबंध किया है।

शैक्षणिक दृष्टि से, एसईईएस एक "केंद्रित दृष्टिकोण" अपनाता है, जो परिसर में जीवन से शुरू होकर व्यापक जीवमंडल में जीवन तक अनुसंधान को बढ़ावा देता है। सरल शिक्षण की अपेक्षा सीखने पर अधिक जोर दिया जाता है, जिसे विस्तृत कक्षा सहभागिता, समूह परियोजनाओं, ट्यूटोरियल्स, सेमिनारों और आवश्यक फील्डवर्क के माध्यम से प्राप्त किया जाता है।

पाठ्यक्रम इस प्रकार तैयार किया गया है कि विद्यार्थी आधारभूत शिक्षा से विशेषज्ञता की ओर अग्रसर हों। पहला सेमेस्टर पर्यावरण अध्ययन के लिए आवश्यक आधारभूत ज्ञान पर केंद्रित है, जिसमें पारिस्थितिकी और पर्यावरण अध्ययन की मूल अवधारणाएँ शामिल हैं। दूसरा सेमेस्टर एक सेतु का काम करता है, जो संबंधित क्षेत्रों में मूलतः अंतर्विषीयक ज्ञान को समर्पित है। नीति से यह प्रारंभिक परिचय सुनिश्चित करता है कि विद्यार्थी अपनी वैज्ञानिक समझ के साथ-साथ एक मज़बूत शासन ढाँचा भी विकसित करें।

पारिस्थितिकी और समतापूर्ण स्थिरता की खोज: यह विद्यापीठ मानव आबादी और उनके पर्यावरण के बीच समग्र अंतःक्रिया प्रणालियों पर केंद्रित है। इस क्षेत्र में अनुसंधान मानव स्वास्थ्य और व्यवहार, पारिस्थितिक और समाजशास्त्रीय प्रक्रियाओं, तथा जैव-क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर संरक्षण प्रथाओं तक फैला हुआ है। इस विषयगत क्षेत्र का मुख्य रणनीतिक उद्देश्य प्राकृतिक संसाधनों के सतत उपयोग की ओर, न्यायसंगत तरीके से, स्पष्ट रूप से आगे बढ़ने पर केंद्रित है।

जलवायु परिवर्तन नीति, शमन और अनुकूलन: अनुसंधान मुख्य रूप से जलवायु परिवर्तन विज्ञान, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय जलवायु नीतियों, तथा अनुकूलन और शमन रणनीतियों के आर्थिक मूल्यांकन पर केंद्रित है। सतत ऊर्जा प्रणालियाँ: यह क्षेत्र ऊर्जा विनियमन और नीतियों को आकार देने वाले वैज्ञानिक, राजनीतिक, **पर्यावरणीय और सामाजिक-आर्थिक कारकों के जटिल अंतर्संबंधों** का विश्लेषण करता है।

विद्यापीठ ने हाल के वर्षों में असाधारण अनुसंधान उत्पादकता और नवाचार का प्रदर्शन किया है, जिसमें अनुप्रयुक्त पर्यावरण विज्ञान, स्थिरता परिवर्तन और अंतःविषय जांच पर विशेष जोर दिया गया है। संकाय सदस्यों ने उच्च प्रभाव वाली अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं जैसे साइंस ऑफ द टोटल एनवायरनमेंट, मॉलिक्यूलर कैंसर, बायोसाइंस, न्यू फाइटोलॉजिस्ट और फिलॉसॉफिकल ट्रांजेक्शन्स ऑफ द रॉयल सोसाइटी बी में व्यापक रूप से लेख प्रकाशित किए हैं, जो की बढ़ती वैश्विक उपस्थिति को दर्शाता है। यह अनुसंधान जलवायु लचीलापन, जैव विविधता संरक्षण, पारिस्थितिकी तंत्र सेवाएं, प्रदूषण शमन, नवीकरणीय ऊर्जा प्रणालियां और स्थाई नीति ढांचे सहित महत्वपूर्ण क्षेत्रों में फैला हुआ है। बायोचार-आधारित जल शोधन प्रौद्योगिकियों पर 2025 में दिए जाने वाले दो भारतीय पेटेंट वास्तविक दुनिया की पर्यावरणीय चुनौतियों का समाधान करने वाले अनुवादात्मक अनुसंधान और पर्यावरण-नवाचार के प्रति एसईईएस की प्रतिबद्धता को रेखांकित करते हैं।

एसईईएस के विद्यार्थी प्रजाति वितरण के फील्ड-वर्क के दौरान

एसईईएस के विद्यार्थी और प्राध्यापक

इस विद्यापीठ के संकाय सदस्य पर्यावरण जैव प्रौद्योगिकी, बीज पारिस्थितिकी, जैव उपचार और जलवायु नीति के क्षेत्रों में सीमाओं को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। 'उभरते प्रदूषकों को हटाने में जैव प्रौद्योगिकी हस्तक्षेप (स्प्रिंगर-नेचर, 2025)' जैसे संपादित संस्करणों और टेलर एंड फ्रांसिस, एल्सेवियर तथा स्प्रिंगर के साथ प्रकाशित कई पुस्तक अध्यायों ने प्रकृति-आधारित एवं माइक्रोबियल समाधानों के माध्यम से प्रदूषण नियंत्रण और संसाधन नवीनीकरण को संबोधित करने में एसईईएस के अकादमिक नेतृत्व को उजागर किया है। इसके साथ ही, ग्लोबल साउथ में आर्द्रभूमि पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं, जैव विविधता निगरानी के लिए नागरिक विज्ञान और स्थाई ऊर्जा संक्रमण पर अनुसंधान विद्यापीठ के एकीकृत और वैश्विक रूप से प्रासंगिक दृष्टिकोण को प्रदर्शित करता है। एसईईएस के कई अध्ययनों ने पारिस्थितिकी तंत्र सेवा भेद्यता सूचकांक और विशेषता-सेवा लिंकेज मॉडल जैसे नए ढांचे प्रस्तावित किए हैं जो पारिस्थितिक सिद्धांत को पर्यावरण नीति और समुदाय-आधारित प्रबंधन प्रथाओं के साथ जोड़ते हैं।

इस विद्यापीठ की शोध संस्कृति सक्रिय अंतर्राष्ट्रीयसहयोग, क्षमता निर्माण पहलों और विद्यार्थी-नेतृत्व वाली अनुसंधान गतिविधियों से परिपूर्ण और सशक्त है।

इसके संकाय सदस्यों ने आईसीआईएमओडी, जेएनयू, आईआईटी, बीएचयू, आईआईएससी, एनआईडीएम, इसरो, एनसीसीआर, रीडिंग विश्वविद्यालय तथा भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीयसम्मेलनों और प्रशिक्षण कार्यक्रमों में आमंत्रित व्याख्यान दिए हैं और संसाधन विशेषज्ञों के रूप में अपना योगदान दिया है।

इस विद्यापीठ के अंतर्गत संचालित डॉक्टरेट और स्नातकोत्तर अनुसंधान भूजल मानचित्रण और इको-पर्यटन स्थिरता से लेकर कार्बन भंडारण और जलवायु-लचीली आजीविकाओं तक के विविध विषयों पर गौर करते हुए करते हुए दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशिया से मूल्यवान क्षेत्रीय अंतर्दृष्टियाँ प्रदान करने में सहायक होते हैं।

पुरस्कार, सरकार द्वारा वित्तपोषित परियोजनाएँ तथा आईसीएसएसआर, एनसीसीआर और एमओईएस जैसी विशेषज्ञ समितियों में संकाय की नियुक्तियाँ पर्यावरण अनुसंधान और नीति के क्षेत्र में एक अग्रणी विचार केंद्र के रूप में एसईईएस की प्रतिष्ठा को पुष्ट करती हैं। ये सफलताएँ और उपलब्धियाँ के उस दृष्टिकोण को प्रदर्शित करती हैं जिसके माध्यम से वैज्ञानिक ज्ञान को सातत्यता (सस्टेनेबिलिटी) के व्यावहारिक उपयोग से जोड़ा जाता है। यह दृष्टिकोण पूरी तरह से वैश्विक सहयोग और भारत की महान प्राकृतिक विरासत पर आधारित है।

विद्यापीठ का एक मुख्य उद्देश्य यह है कि वह पर्यावरण संबंधी वैचारिक अवधारणा में पश्चिमी और पूर्वी नज़रिए के बीच वैचारिक अंतर को पाटने की कोशिश करे। यहाँ के पाठ्यक्रम यह सुनिश्चित करते हैं कि पर्यावरण के बदलाव और समुद्री वातावरण जैसे विषयगत क्षेत्रों में यहाँ के अनुसंधान सीधे तौर पर क्षेत्रीय ज्ञान के आदान-प्रदान और सतत विकास के उपक्रम में सहयोगी बनें।

संकाय प्रकाशन और अन्य शैक्षणिक योगदान

प्रकाशन:

- औंग, केल्विन मुतुगी कित्हाका, कुमार अभिषेक, निधि मौर्य, और सयान भट्टाचार्य. **“आर्सेनिक के विशेष संदर्भ में विषैले धातुओं के फाइटोरिमेडिएशन में जल-कुम्भी का अनुप्रयोग.”** नेचर-बेस्ड वेस्टवॉटर ट्रीटमेंट सिस्टम्स: उभरते दृष्टिकोण और संभावित संसाधन पुनर्प्राप्ति विकल्पों के साथ, संपादक: ए. कुमार, एस. कुमार, और एस. रत्ना, पृ. 273–284. इंग्लैंड: टेलर एंड फ्रांसिस, 2025. ISBN 978-1-003-44114-4.
- भट्टाचार्य, सयान, और सतारूपा डे (संपादक). **बायोटेक्नोलॉजिकल इंटरवेंशन्स इन द रिमूवल ऑफ इमर्जिंग कंटैमिनेंट्स** (संपादित पुस्तक). सिंगापुर: स्प्रिंगर नेचर, 2025. ISBN 978-981-97-9921-3.
- चक्रवर्ती, सुदीप्त, अविषेक तलुकदार, सतारूपा डे, और सयान भट्टाचार्य. **“कवक, बैक्टीरिया और सूक्ष्म शैवाल की भूमिका — कीटनाशक, भारी धातु और औषधीय अपशिष्ट जैसे उभरते प्रदूषकों के बायोरिमेडिएशन में.”** डिस्कवर एनवायरनमेंट 3 (2025): 91.
- चक्रवर्ती, एस., अविषेक तलुकदार, और सयान भट्टाचार्य. **“पर्यावरण पर कोविड-19 के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव: स्थिरता दृष्टिकोणों के साथ एक आलोचनात्मक समीक्षा.”** हाइजीन एंड एनवायरनमेंटल हेल्थ एडवांसेज़ 12 (2024): 100107.
- डे, सतारूपा, अविषेक तलुकदार, और सयान भट्टाचार्य. **“खाद्य अपशिष्टों का सूक्ष्मजीवों द्वारा अपघटन और मूल्यवर्धन: स्थिरता की दिशा में कचरे से संपदा तक के दृष्टिकोण.”** डिस्कवर केमिस्ट्री 2 (2025): 147.
- धवला, के. **“साझा संसाधनों का प्रबंधन: शासन, बाजार और समुदायों की भूमिकाएं.”** इकोलॉजी, इकॉनमी एंड सोसाइटी – द आईएनसईई जर्नल 8, सं. 1 (2025): 153–156.
- गैरोला, एस., ए. अलकेटबी, एस. एस. फर्त्याल, एफ. अलकेटबी, और टी. महमूद. “**डिप्टेरीजियम ग्लौकम के बीज निष्क्रियता में अंतर-जनसंख्या विविधता.**” सीड साइंस एंड टेक्नोलॉजी 52, सं. 3 (2024): 367–378.
- इसिंगोमा, चार्ल्स ल्वांगा, अविषेक तलुकदार, सुदीप्त चक्रवर्ती, और सयान भट्टाचार्य. “**फ्लोराइड के बायोरिमेडिएशन: पर्यावरण से फ्लोराइड हटाने में बैक्टीरिया, पौधों और पौधा-सूक्ष्मजीव परस्पर क्रियाओं की संभावनाएं.**” जियोमाइक्रोबायोलॉजी जर्नल 42, सं. 9 (2025): 818–838.
- इसिंगोमा, चार्ल्स ल्वांगा, सयान भट्टाचार्य, सतारूपा डे, सायंती मंडल, कौशिक गुप्ता, जयंता कुमार विश्वास, शुभलक्ष्मी सेनगुप्ता, और माइकल वॉट्स. “**आर्सेनिक का फाइटोरिमेडिएशन: आधुनिक जैव-प्रौद्योगिकी दृष्टिकोणों पर विशेष बल के साथ एक अत्याधुनिक समीक्षा.**” टोटल एनवायरनमेंट इंजीनियरिंग 2 (2025): 100014.
- कुंडू, पृथा, नालोक दत्ता, और सयान भट्टाचार्य. “**उभरते प्रदूषकों के संदर्भ में अपशिष्ट जल उपचार में सूक्ष्म शैवाल का अनुप्रयोग: स्थिरता की दिशा में एक कदम.**” फ्रंटियर्स इन एनालिटिकल साइंस 4 (2024): 1513153.
- मिश्रा, सर्वेश कुमार, तपोज्योति सान्याल, पृथा कुंडू, रुपेश कुमार, दिपांजन घोष, गोपाल चक्रवर्ती, नीलब्जा सिकदार, सयान भट्टाचार्य, शांतनु पॉल, और अम्लान दास. “**सूक्ष्म प्लास्टिक उभरते कार्सिनोजेन्स के रूप में: पर्यावरणीय प्रदूषकों से कैंसरकारी प्रेरकों तक.**” मॉलिक्यूलर कैंसर 24 (2025): 248.
- परिदा, तमन्ना, शैख रियाज़ुद्दीन, सुरेश कुमार कोल्ली, अनिंदिता चक्रवर्ती, नमुदुरी श्रीनिवास, पृथा कुंडू, सयान भट्टाचार्य, चंद्र शेखर सेठ, और जयंता कुमार विश्वास. “**अंतर्जात धातु के साथ भारी धातुओं के फाइटोरिमेडिएशन: वर्तमान अत्याधुनिक स्थिति और भविष्य की संभावनाएं.**” डिस्कवर एनवायरनमेंट 2 (2024): 139.
- सतारूपा डे, सयान भट्टाचार्य, और अविषेक तलुकदार (संपादक). **बायोटेक्नोलॉजिकल इंटरवेंशन्स इन द रिमूवल ऑफ इमर्जिंग पॉल्यूटेंट्स.** इंटरडिसिप्लिनरी बायोटेक्नोलॉजिकल एडवांसेज़. सिंगापुर: स्प्रिंगर, 2025.
- शोम, अर्काज्योति, सयान भट्टाचार्य, दीप चक्रवर्ती, और सतारूपा डे. “**भारी धातुओं (As, Cd, Hg, Pb) का प्रदूषण और मुहाना एवं समुद्री पारिस्थितिक तंत्रों में जैव-संचयन, विशेष रूप से एशिया के संदर्भ में.**” बायोटेक्नोलॉजिकल इंटरवेंशन्स इन द रिमूवल ऑफ इमर्जिंग पॉल्यूटेंट्स, संपादक: एस. डे और एस. भट्टाचार्य, पृ. 271–288. सिंगापुर: स्प्रिंगर, 2025.

संकाय प्रकाशन और अन्य शैक्षणिक योगदान

- शोम, ए., ए. कुमार, ए. एन. सिंह, और एस. एस. फर्त्याल. “**ट्रेट-सर्विस लिंकेज फ्रेमवर्क का उपयोग करके भारतीय आर्द्रभूमि पौधों की बहु-पारिस्थितिकी सेवाओं के लिए महत्व का आकलन.**” वेटलैंड इकॉलॉजी एंड मैनेजमेंट 33 (2025): 23.
- शोम, ए., एस. एस. फर्त्याल, पी. महाराणा, एच. यादव, और ए. वर्मा. “**पारिस्थितिकी सेवाओं की संवेदनशीलता सूचकांकः पारिस्थितिकी सेवाएं प्रदान करने वाली प्रजातियों की संवेदनशीलता का आकलन करने के लिए एक नवीन ढांचा.**” वेटलैंड इकॉलॉजी एंड मैनेजमेंट 33 (2025): 8.
- शिवहरे, वी., ए. कुमार, आर. कुमार, एस. शास्त्री, जे. मलिक, और सी. के. सिंह. “**निचले कोसी बेसिन, भारत के लिए बाढ़ संवेदनशीलता और बाढ़ आवृत्ति मॉडलिंगः एएचपी और सेंटिनल-1 एसएआर डेटा का भू-स्थानिक वातावरण में उपयोग.**” नेचुरल हैज़र्ड्स 120, सं. 13 (2024): 11579–11610.
- सिन्हा, आर. के., आर. कुमार, एस. एस. फर्त्याल, और पी. शर्मा. “**प्लास्टिक प्रदूषण के शमन और प्रबंधन के लिए नागरिक विज्ञान के हस्तक्षेपः सतत विकास लक्ष्यों, नीतियों और विनियमों की समझ.**” साइंस ऑफ द टोटल एनवायरनमेंट 955 (2024): 176621.
- तालुकदार, अविषेक, अयंतिका बनर्जी, सतारूपा डे, और सयान भट्टाचार्य. “**अच्छा, बुरा और बदसूरतः सूक्ष्मजीवों के माइक्रोप्लास्टिक अपघटन में अनुप्रयोगों पर आलोचनात्मक अंतर्दृष्टि.**” कैम्ब्रिज प्रिज़्म्सः प्लास्टिक्स 2 (2024): e27.
- तालुकदार, अविषेक, सयान भट्टाचार्य, साप्तर्षि पाल, प्रचेता पाल, और सुम्यजीत चौधरी. “**पर्यावरण पर कोविड-19 के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावः स्थिरता दृष्टिकोणों के साथ एक आलोचनात्मक समीक्षा.**” हाइजीन एंड एनवायरनमेंटल हेल्थ एडवांसेज़ 12 (2024): 100107.
- तालुकदार, अविषेक, संगय वांगमो, नालोक दत्ता, एनेट नाबुम्पेंज, जीवेन कुमार बस्तोला, और सयान भट्टाचार्य. “**भारी धातु और मेटालॉयड की पहचान में बायोसेंसरः आनुवंशिक, कोशिकीय और नैनोमटेरियल अनुप्रयोग.**” डेवलपमेंट इन वेस्ट वॉटर ट्रीटमेंट रिसर्च एंड प्रोसेसेज़: एप्लाइड टेक्नोलॉजीज फॉर क्लीन अप ऑफ एनवायरनमेंटल कंटैमिनेंट्स, संपादकः एम. शाह, पृ. 721–735. एल्सेवियर, 2025.
- वर्मा, ए., आनंद कुमार, पी. शर्मा, ए. शर्मा, आर. के. सिन्हा, और एस. फर्त्याल. “**मध्य गंगा मैदानों में भू-रासायनिक प्रक्रियाएं और भूजल गुणवत्ता पर मानवजनित प्रभाव.**” जर्नल ऑफ हैज़र्डस मटेरियल्स एडवांसेज़ (2025): 100818.
- शार्नो, एम. ए., और एम. हिलोधारी. “**हम पौधों से बने जेट ईंधनों को कैसे स्थाई बना सकते हैं?**” सोशल साइंस जर्नल फॉर किड्स (2025).

अन्य शैक्षणक सहभागताएँ

- किशोर धवला. “**भूटान के ग्रामीण क्षेत्रों के लिए सतत ऊर्जाः घरेलू बायोगैस का आर्थिक मूल्यांकन.**” **अंतर्राष्ट्रीयसंगोष्ठी “क्लीन टेक्नोलॉजी ऐज़ ए ड्राइवर ऑफ सस्टेनेबल डेवलपमेंटः लर्निंग्स फ्रॉम इंडियन एंड मलेशियन एक्सपीरियंसेज़**” में ऑनलाइन व्याख्यान. यह संगोष्ठी विभाग प्रबंधन विज्ञान (डीओएमएस), आईआईटी कानपुर और यूनिवर्सिटी मलाया, विभाग यांत्रिक अभियांत्रिकी द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित की गई थी, मई 2025.
- किशोर धवला. “**अंतर्राष्ट्रीयसाझेदारियों और विनिमय कार्यक्रमों के माध्यम से उच्च शिक्षा में सांस्कृतिक अंतराल को पाटना.**” 18वी एन.ई.डबल्यू.एस कॉन्फ्रेंस, लुंबिनी, नेपाल में ऑनलाइन व्याख्यान, अप्रैल 2025.
- किशोर धवला. सदस्य, परियोजना — “**तटीय और समुद्री क्षेत्रों के संरक्षण के लिए पारिस्थितिकी तंत्र-आधारित दृष्टिकोण.**” यह परियोजना एनसीसीआर, एमओईएस–भारत सरकार, आईपी प्रभाग–विदेश मंत्रालय, और आसियान-भारत अनुसंधान नेटवर्क के तहत 2025–28 तक चलेगी.
- किशोर धवला. “**मत्स्य पालन पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावः सतत संसाधन प्रबंधन और नीति की दिशा में मार्ग.**” कॉन्फ्रेंस ऑन एडवांसेज इन एनवायरनमेंट मैनेजमेंट फॉर सस्टेनेबल फिशरीज़ एंड लाइवस्टॉक प्रोडक्शन, कॉलेज ऑफ फिशरीज, किशनगंज, नवंबर 2024 में व्याख्यान.
- किशोर धवला. “**मत्स्य क्षेत्र में सब्सिडी में कटौती की जटिलताएँ.**” कॉन्फ्रेंस ऑन ग्लोबल साउथ इन डब्ल्यूटीओ एग्रीमेंट ऑन फिशरीज सब्सिडीजः पर्सपेक्टिव्स फॉर रीजनल फिशरीज मैनेजमेंट में पैनल चर्चा. यह आयोजन बीओबीपी-आईजीओ, सीआईएफआर, रॉयल नॉर्वेजियन एंबेसी, आईआईएफटी और एफएओ द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित, कोच्चि, नवंबर 2024 में.

संकाय प्रकाशन और अन्य शैक्षणिक योगदान

- किशोर धवला. **"मत्स्य पालन में वित्त तक पहुंच में सुधार."** क्षेत्रीय प्रशिक्षण पाठ्यक्रम "कोड ऑफ कंडक्ट फॉर रिस्पॉन्सिबल फिशरीज (सीसीआरएफ)" और "इकोसिस्टम अप्रोच टू फिशरीज मैनेजमेंट " में व्याख्यान. आयोजन बीओबीपी-आईजीओ, सीआईएफआर, रॉयल नॉर्वेजियन एंबेसी, आईआईएफटी और एफएओ द्वारा, चेन्नई, नवंबर 2024.
- किशोर धवला. "**मत्स्यकों के लिए बीमा सेवाओं की सुविधा.**" क्षेत्रीय प्रशिक्षण पाठ्यक्रम सीसीआरएफ और ईएएफएम में व्याख्यान, बीओबीपी-आईजीओ, सीआईएफआर, रॉयल नॉर्वेजियन एंबेसी, आईआईएफटी और एफएओ द्वारा आयोजित, चेन्नई, नवंबर 2024.
- किशोर धवला. विशेषज्ञ सदस्य, परियोजना — "**पारिस्थितिकी सेवाएँ और लेखांकन – कोरिंगा मैंग्रोव.**" एनसीसीआर, एमओईएस–भारत सरकार, 2024–26.
- किशोर धवला. आईसीएसएसआर अनुसंधान अनुदान प्राप्तकर्ता. जल जीवन मिशन परियोजना — "**गया और नालंदा जिलों में 'हर घर नल का जल' कार्यक्रम के प्रभाव का आकलन.**"
- सयान भट्टाचार्य. "**पर्वतीय क्षेत्रों में सूक्ष्म प्लास्टिक प्रदूषण.**" राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) जलंधर, भारत द्वारा आयोजित एक-सप्ताहीय संकाय विकास कार्यक्रम "**माइक्रोप्लास्टिक प्रदूषणः स्रोत, विश्लेषण और सुधार**" में ऑनलाइन व्याख्यान, 2–7 फरवरी, 2025.
- सयान भट्टाचार्य. "**बंगाल डेल्टा में आर्सेनिक प्रदूषण और उसके निवारण उपाय.**" पर्यावरण विज्ञान विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित 21 वी सदी के विकास और पर्यावरणीय चुनौतियों पर पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में ऑनलाइन व्याख्यान, 15 जनवरी, 2025.
- सयान भट्टाचार्य. अंतर्राष्ट्रीयसम्मेलन "**रीसेंट एडवांसेज इन सस्टेनेबल एनवायरनमेंट आरएआईएसई–2024**)" में व्याख्यान, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला, भारत द्वारा आयोजित, 22–23 नवंबर, 2024.
- सयान भट्टाचार्य. **अंतर्राष्ट्रीयसतत पर्यटन कांग्रेस 2024**, आयोजित अक्सराय विश्वविद्यालय, तुर्की द्वारा, 3–5 अक्टूबर, 2024 में ऑनलाइन व्याख्यान.
- सत्यनारायण शास्त्री. राउंडटेबल "**सस्टेनेबल फ्यूचर्सः ग्लोबल कोलैबोरेशन के माध्यम से भारत में उच्च शिक्षा का रूपांतरण**" में व्याख्यान, आयोजित यूनिवर्सिटी ऑफ रीडिंग, यूके द्वारा, नई दिल्ली, भारत, 22 मार्च, 2025.
- सत्यनारायण शास्त्री. "**जलवायु परिवर्तनशीलता, जलवायु परिवर्तन, आईपीसीसी एआर रिपोर्ट्स, और सतत विकास.**" यूजीसी–मालवीय मिशन टीचर ट्रेनिंग सेंटर (एमएमटीटीसी), गोरखपुर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित फैकल्टी इंडक्शन प्रोग्राम–09 में संसाधन व्यक्ति के रूप में ऑनलाइन व्याख्यान, 19 फरवरी, 2025.
- सत्यनारायण शास्त्री. विशेषज्ञ सदस्य, **भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएसएसआर)** की विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत अनुसंधान परियोजनाओं के प्रस्तावों के मूल्यांकन हेतु, नई दिल्ली, 12–18 जनवरी, 2025 और 21–22 अक्टूबर, 2024.
- सत्यनारायण शास्त्री. "**नालंदा विश्वविद्यालय की दृष्टि और उसका सतत नेट-ज़ीरो कैंपस अवसंरचना.**" अंतर्राष्ट्रीयसम्मेलन "**भारत–वियतनाम व्यापक रणनीतिक साझेदारीः वियतनाम 2045 और विकसित भारत @2047 की दृष्टि की ओर**", हनोई, वियतनाम, 7 नवंबर, 2024 में व्याख्यान.
- सत्यनारायण शास्त्री. "**जलवायु विश्लेषण.**" यूजीसी–एमएमटीटीसी, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू), दिल्ली द्वारा आयोजित फैकल्टी इंडक्शन प्रोग्राम–17 में ऑनलाइन व्याख्यान, 12 सितंबर, 2024.
- सत्यनारायण शास्त्री. **विशेषज्ञ सदस्य, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएसएसआर)** के तहत सामाजिक और मानविकी विज्ञानों में दीर्घकालिक सहयोगी अनुसंधान परियोजनाओं के मूल्यांकन हेतु, नई दिल्ली, 25–28 अगस्त, 2024.

संकाय प्रकाशन और अन्य शैक्षणिक योगदान

- श्याम एस. फर्त्याल. **"सिटिजन साइंसः आपदा जोखिम न्यूनीकरण की स्मार्ट कुंजी."** राष्ट्रीय संगोष्ठी "डिजास्टर रिस्क रिडक्शन इन द हिमालयाज: रीसेंट एडवांसमेंट्स" में व्याख्यान, आयोजित क्षेत्रीय विकास अध्ययन केंद्र (सीएसआरडी), जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू), भारत द्वारा, 20–21 सितंबर, 2024.

आमंत्रित विद्वानों द्वारा व्याख्यान

- प्रोफेसर एस. पी. एस. कुशवाहा, पूर्व समूह निदेशक, डीन (अकादमिक) एवं प्रमुख, वानिकी और पारिस्थितिकी विभाग, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने 23 जनवरी, 2025 को **"प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन और पर्यावरण निगरानी के लिए एयरोस्पेस तकनीक"** विषय पर व्याख्यान दिया.
- प्रोफेसर मार्क डी. अशर, यूनिवर्सिटी ऑफ वरमॉन्ट, अमेरिका ने 26 फरवरी, 2025 को **"उमवेल्ट और इथोसः पशु का मनुष्यता निर्माण में सहयोग "** विषय पर व्याख्यान दिया.
- श्री ऋषभ महेंद्र, शोधकर्ता, यूनिवर्सिटी ऑफ मिसौरी, अमेरिका ने **"पारिस्थितिकी तंत्र सहकारी समितियाँः पुनर्निर्माण और संरक्षण हेतु प्रशस्त मार्ग"** विषय पर व्याख्यान दिया.

ओणम उत्सव के दौरान एसईईएस के विद्यार्थी

बौद्ध अध्ययन, दर्शन और तुलनात्मक धर्म विद्यापीठ

वर्ष 2016 में स्थापना के बाद से, बौद्ध अध्ययन, दर्शन और तुलनात्मक धर्म विद्यापीठ ने शैक्षणिक उत्कृष्टता और विद्वत्तापूर्ण योगदान का एक और सफल वर्ष पूर्ण किया है। यह विद्यापीठ समकालीन शोध दृष्टिकोणों और वैश्विक संदर्भों के साथ भारतीय ज्ञान यह परंपरा को पुनर्स्थापित करने के लिए निरंतर प्रयासरत है, और बौद्ध, हिंदू तथा तुलनात्मक धार्मिक परंपराओं में गहन संलग्नता के साथ शोध के प्रति अपनी प्रतिबद्धता प्रदर्शित करता है।

बौद्ध अध्ययन, दर्शन और तुलनात्मक धर्म

यह विद्यापीठ, बौद्ध अध्ययन, दर्शन और तुलनात्मक धर्म के साथ-साथ हिंदू अध्ययन (सनातन धर्म) में एम.ए. कार्यक्रम संचालित करता है, और इन दोनों विषयगत क्षेत्रों में पी.एच.डी. की उपाधि भी प्रदान करता है, जो वर्तमान विद्वानों की शोध-चुनौतियों का समाधान करते हुए, प्राचीन नालंदा की अंतर्निहित भावना और मूल दर्शन को साकार करता है। जिस प्रकार प्राचीन नालंदा ने विश्व भर के विद्वानों का स्वागत किया और वाद-विवाद तथा अध्ययन के एकीकृत ढाँचे की परंपरा का निर्माण किया, ठीक उसी प्रकार हमारे कार्यक्रम विविध सांस्कृतिक, भाषाई और धार्मिक पृष्ठभूमियों के विद्यार्थियों को एक साथ लाते हैं। इन विद्यार्थियों को समकालीन दृष्टिकोण से भारत की दार्शनिक और धार्मिक परंपराओं का आलोचनात्मक विश्लेषण करने के लिए तैयार किया जाता है.इसके अतिरिक्त, कैफेटेरिया मॉडल विभिन्न विषयों के विद्यार्थियों को आकर्षित करता है। यह विद्यापीठ नालंदा की शिक्षा के केंद्र के रूप में भूमिका को दर्शाता है, जहां दर्शन, तर्कशास्त्र, भाषा विज्ञान, इतिहास, पर्यावरण अध्ययन और अन्य विज्ञानों का एकीकृत तरीके से अध्ययन किया जाता था. इस एकीकृत दृष्टिकोण के माध्यम से, विद्यार्थी हिंदू और बौद्ध परंपराओं के व्यापक सामाजिक-ऐतिहासिक-सांस्कृतिक-धार्मिक-भाषाई संदर्भों से जुड़ते हैं, तथा भारतीय ज्ञान परम्परा को नवीन अंतर-विषयक शोध पद्धतियों के साथ जोड़ते हैं। यह विद्यापीठ नालंदा के समग्र शैक्षिक दृष्टिकोण को संरेखित करता है। यह पाठ्य विद्वत्ता, अनुसंधान, ध्यानात्मक अभ्यास और दार्शनिक विश्लेषण के साथ-साथ 'मन की साधना' पर भी बल देता है। इसका लक्ष्य केवल विद्वानों को विकसित करना नही, बल्कि ऐसे बुद्धिजीवियों को तैयार करना है जो ध्यानपूर्वक और सक्रिय रूप से संलग्न हों, जो समाज में योगदान दे सकें और भारत के शाश्वत ज्ञान के माध्यम से वैश्विक चुनौतियों का समाधान कर सकें।

यह विद्यापीठ विशेषतः शास्त्र-आधारित अध्ययन और तुलनात्मक धार्मिक विश्लेषण के माध्यम से समकालीन निहितार्थों के साथ भारतीय दार्शनिक परंपराओं को एकीकृत करते हुए, बौद्ध अध्ययन, दर्शन और तुलनात्मक धर्म कार्यक्रम शास्त्रीय भाषाओं, पाली, संस्कृत और तिब्बती में निपुणता प्रदान करता है। ताकि गहन शोध के लिए आवश्यक प्राथमिक दार्शनिक ग्रंथों के साथ सीधे जुड़ाव को सक्षम किया जा सके।

इस विद्यापीठ के पाठ्यक्रम आधारभूत अध्ययन से प्रारंभ होकर उन्नत दार्शनिक विमर्श तक विस्तृत है। प्रारंभिक स्तर पर इसमें बौद्ध धर्म के मूल सिद्धांत, उसका ऐतिहासिक विकास, दार्शनिक परंपराएँ, बौद्ध धर्म के विभिन्न विद्यापीठ, बौद्ध नैतिकता और भारतीय दार्शनिक प्रणालियों का परिचय शामिल है। इसके बाद पाठ्यक्रम बौद्ध मनोविज्ञान, महायान बौद्ध धर्म के ग्रंथ और परंपराएँ, बौद्ध तर्क और ज्ञानमीमांसा तथा माध्यमिक परंपरा के दार्शनिक सिद्धांतों जैसे उन्नत क्षेत्रों में प्रवेश करता है। अध्ययन में अभिसमयालंकार, बोधिचर्यावतार, मूलमाध्यमककारिका और प्रमाणवार्त्तिक के विश्लेषण के साथ अद्वैत वेदांत तथा तांत्रिक अद्वैत का तुलनात्मक अध्ययन भी सम्मिलित है। यह पाठ्यक्रम क्वांटम भौतिकी, चेतना और बौद्ध धर्म के बीच समकालीन संवादों को भी समाहित करता है तथा महा-सत्यपठान सुत्त के माध्यम से चिंतनशील अभ्यासों और नालंदा ग्रंथों की अंतर्दृष्टियों द्वारा सामाजिक जुड़ाव को संतुलित रूप से प्रस्तुत करता है।

कैफेटेरिया मॉडल पर आधारित इस विद्यापीठ के समस्त पाठ्यक्रम चारों सेमेस्टरों में व्यवस्थित भाषा प्रशिक्षण के साथ सामाजिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और भाषाई परिदृश्यों में अंतर-अनुशासनात्मक अन्वेषण को बढ़ावा देता है। यह स्नातकों को इंडोलॉजिस्ट, भाषाशास्त्री, दार्शनिक और धार्मिक अध्ययन के विद्वानों के रूप में तैयार करता है, जो अंतर-सांस्कृतिक अनुवादक तथा भारतीय बौद्धिक परंपराओं पर टिप्पणीकार के रूप में शांति अध्ययन और सांस्कृतिक विश्लेषण में अनुप्रयोगों को लागू करते हैं।

यह विद्यापीठ हिंदू अध्ययन कार्यक्रम, गहन दार्शनिक अन्वेषण के माध्यम से आगे बढ़ते हुए, हिंदू दार्शनिक परंपराओं में समन्वय प्रदान करता है । यह समन्वय गहन पाठ्य विद्वत्ता के माध्यम से सुनिश्चित होता है, जिसमें वैदिक संग्रह, प्रमुख और लघु उपनिषदों, महाकाव्यों (जैसे रामायण और महाभारत), तथा पौराणिक ग्रंथों (विष्णु पुराण, अग्नि पुराण और भागवत-पुराण आदि) का अध्ययन शामिल है।

छह दर्शनों—सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, और वेदांत—के गहन पाठ्य विश्लेषण के साथ, पाठ्यक्रम भगवद्गीता और वाल्मीकि रामायण का विस्तृत अध्ययन करता है। यह पंतजलि के योगसूत्र के माध्यम से सैद्धांतिक जाँच, काव्य-मीमांसा और भारतीय सौंदर्यशास्त्र के माध्यम से सौंदर्य चेतना, तथा कश्मीर शैववाद, छान्दोग्य एवं बृहदारण्यक के उपनिषदिक दर्शन को समाहित करता है। इसके अतिरिक्त, यह पाठ्यक्रम सूत्र, वार्तिक, और भाष्य टिप्पणी साहित्य, कौटिल्य के अर्थशास्त्र के माध्यम से राजनीतिक दर्शन, और स्वामी विवेकानंद की वेदांत संबंधी प्रदर्शनियों को सभी चार सेमेस्टरों में संस्कृत निर्देश के साथ आवश्यक संतुलन प्रदान करता है।

इस विद्यापीठ की बौद्धिक जीवंतता का एक आधार है, जो विशेषज्ञता के विविध क्षेत्रों और भारत की दार्शनिक और धार्मिक परंपराओं को समकालीन अन्वेषण के लिए प्रासंगिक बनाने के लिए गहन विद्वत्तापूर्ण प्रतिबद्धता को एक साथ लाता है। विद्यापीठ का नेतृत्व डीन प्रोफेसर गोदाबरीश मिश्र करते हैं और इसके मुख्य संकाय में डॉ.प्रांशु समदर्शी, डॉ.कुमुद प्रसाद आचार्य, ब्रेंडा हुआंग जुआन ली, डॉ.पूजा डबराल, डॉ.राजेश्वर मुखर्जी, और गेशे लुंगटोक शेरप , शामिल हैं। की विद्वत परंपरा को प्रतिष्ठित विजिटिंग फैकल्टी के योगदान से और समृद्धि प्राप्त होती है, जो आईआईटी दिल्ली, हवाई विश्वविद्यालय, अशोक विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, तिब्बत हाउस (नई दिल्ली) और सीआईएचटीएस, सारनाथ जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों से अपनी विशिष्ट विशेषज्ञता लेकर आते हैं।

संकाय ने पुस्तक प्रकाशनों, जर्नल लेखों, सम्मेलन प्रस्तुतियों, संपादकीय कार्य और संस्थागत सेवा में अपने विद्वत्तापूर्ण योगदान के माध्यम से 2024-2025 शैक्षणिक वर्ष के दौरान विद्वत्तापूर्ण उत्पादकता और अकादमिक नेतृत्व का प्रदर्शन किया है।

प्रोफेसर गोदाबरीश मिश्र ने प्रकाशनों, व्याख्यानों और संपादकीय कार्यों के माध्यम से दार्शनिक विद्वत्ता में उल्लेखनीय योगदान दिया है, साथ ही समृद्ध कार्यक्रमों और अनुदान प्राप्त करके संस्थागत विकास में भी योगदान दिया है। डॉ.प्रांशु समदर्शी ने बौद्ध तंत्र और इतिहासलेखन के अपने क्षेत्र में प्रकाशनों, व्याख्यानों और शोध गतिविधियों के माध्यम से बौद्ध विद्वत्ता में योगदान दिया है। डॉ.कुमुद प्रसाद आचार्य ने अपने प्रकाशनों और शोध प्रस्तुतियों के माध्यम से संस्कृत अध्ययन और हिंदू दार्शनिक परंपराओं के प्रति अकादमिक जुड़ाव भी प्रदर्शित किया। डॉ.वेन. ब्रेंडा हुआंग जुआन ली ने अपने शोध, व्याख्यान और संपादकीय कार्यों के माध्यम से बौद्ध अध्ययन और मनोविज्ञान में योगदान दिया है। डॉ.पूजा डबराल ने नालंदा बौद्ध दर्शन, मनोविज्ञान और उनके समकालीन अनुप्रयोगों में अनुसंधान, संपादकीय कार्यों और प्रस्तुतियों में विद्वानों की भागीदारी दिखाई। डॉ.राजेश्वर मुखर्जी ने 'अवस्थत्रय: गहन अंतर्दृष्टि' जैसे प्रकाशनों और विद्वत्तापूर्ण प्रस्तुतियों के माध्यम से विद्यापीठ के शैक्षणिक और शोध वातावरण में योगदान दिया। वेन गेशे लुंगटोक शेरप ने अपनी प्रस्तुतियों, अनुवाद कार्य और तिब्बती भाषा, साहित्य और बौद्ध दर्शन में शिक्षण के माध्यम से योगदान दिया है।

2024-2025 शैक्षणिक वर्ष के दौरान, इस विद्यापीठ ने विविध प्रकार की गतिविधियों में भाग लिया, जिसने शैक्षणिक जीवन को समृद्ध किया और साथ ही परिसर की सीमाओं से परे भारत की ज्ञान परंपराओं की प्रासंगिकता का विस्तार किया। विद्यापीठ की शैक्षणिक क्षमता तथा राष्ट्रीय एवं वैश्विक सरोकार के लिए इसके अनुसंधान की वर्तमान प्रासंगिकता को मान्यता देते हुए, विद्यापीठ ने आईसीपीआर , आईसीएचआर और आईएयूएस सहित प्रतिष्ठित वित्त पोषण एजेंसियों से पर्याप्त अनुदान प्राप्त किया।
विद्यार्थी अनुसंधान, सेमिनार प्रस्तुतियाँ और शोध प्रबंधों ने अकादमिक विषयों के विविध क्षेत्रों में समकालीन विद्वत्ता के साथ भारतीय ज्ञान परंपरा के एकीकृत अन्वेषण को अभिव्यक्त किया, तथा वैश्विक विद्वत्ता, संस्कृति और व्यवहार पर भारतीय दार्शनिक विरासत के सतत प्रभाव को रेखांकित किया।

बीएसपीसीआर में एम.ए. के विद्यार्थियों ने भारतीय विचारों की दार्शनिक, सांस्कृतिक और पाठ्य विरासत का आलोचनात्मक विश्लेषण किया। यह विश्लेषण महायान सूत्रों की प्रामाणिकता, तंत्र में सुरक्षात्मक देवताओं, लद्दाख में चोड जैसी बौद्ध तांत्रिक प्रथाओं के दार्शनिक आधारों, श्रावकयान और महायान दृष्टिकोणों के तुलनात्मक विश्लेषण, तथा वेदनानुपस्सना जैसी ध्यान प्रथाओं की जाँच के माध्यम से हुआ, जिसने विविध बौद्ध परंपराओं की सैद्धांतिक और व्यावहारिक रूपरेखाओं की स्थायी प्रासंगिकता को प्रदर्शित किया। अंतर-सांस्कृतिक अध्ययनों ने ऐतिहासिक ज्ञान को आधुनिक संदर्भों के साथ जोड़ा, जिसने नैतिक, आध्यात्मिक, अनुष्ठान और सौंदर्य ढाँचे के जीवंत संचरण को चित्रित किया। इन अध्ययनों ने यह उजागर किया कि भारतीय दार्शनिक और अनुष्ठान परंपराएँ नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और शासन से जुड़ी प्रथाओं को गहराई से प्रभावित करती हैं।इसमें भारत में नव बौद्ध धर्म और म्यांमार के मोप्यार गिंग आंदोलन, श्री हर्श के नाटक 'नागानंद' में जिमुतवाहन के बोधिसत्व आदर्शों, थेरवाद और शुद्ध भूमि परंपराओं में बुद्धानुसती प्रथाओं, पाली विहित स्रोतों से 'सत्ता बोज्झंग' के सैद्धांतिक महत्व, सामाजिक रूप से संलग्न बौद्ध धर्म और लाओस में सामाजिक-आर्थिक अधिकारों के साथ ब्रह्मविहार के सहसंबंध, और बुद्ध के मानवरूपी रूपों के तुलनात्मक विश्लेषण जैसे विषय शामिल थे।

शोध में यह अध्ययन किया गया कि भारतीय दार्शनिक दृष्टिकोण किस प्रकार एशिया में शासन, आध्यात्मिकता और सामाजिक संरचनाओं को प्रभावित करते हैं। इसमें नालंदा के दार्शनिक नागार्जुन और शांतिदेव का भूटान के सकल राष्ट्रीय खुशी दर्शन पर प्रभाव, तिब्बती पुनर्जन्म परंपराएँ, आश्रित उत्पत्ति और उसके निहितार्थ, जन्म और मृत्यु की अवधारणाओं का विश्लेषण, वियतनाम की शुद्ध भूमि परंपराएँ, लाओस के आध्यात्मिक अभ्यासों पर नाग पौराणिक कथाओं का प्रभाव, तथा असंग और वसुबंधु की मन की व्याख्या का पश्चिमी मनोविज्ञान के साथ तुलनात्मक अध्ययन शामिल था।

हिंदू अध्ययन में एम.ए. कार्यक्रम ने शास्त्रीय भारतीय ज्ञान परंपराओं के गहन अध्ययन को प्रदर्शित किया। इसमें ज्ञान-आधारित शासन के लिए अन्विक्षिकी के निहितार्थ, धर्मशास्त्र और आयुर्वेद के दृष्टिकोण से गर्भदान से जातकर्म तक के संस्कारों का अध्ययन, और नाट्य परंपरा में नाट्यशास्त्र के दार्शनिक प्रतिबिंबों पर किए गए शोध शामिल थे। इन अध्ययनों ने यह उजागर किया कि भारतीय दार्शनिक और अनुष्ठान परंपराएँ नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और शासन से जुड़ी प्रथाओं को गहराई से प्रभावित करती हैं।

▼ विद्यार्थियों के सेमीनार प्रस्तुति का मूल्यांकन करते एसबीएसपीसीआर के प्राध्यापक

विविध शोध के तहत नालंदा की बौद्धिक विरासत को विमर्श और अंतरसांस्कृतिक संवाद के माध्यम से बनाए रखना और आगे बढ़ाना है, इस विद्यापीठ का एक लक्ष्य है। भारत तथा भूटान, लाओस, वियतनाम, म्यांमार और तिब्बत जैसे देशों के बीच विद्वानों के संबंधों को मजबूत बनाकर, विद्यार्थियों ने यह दर्शाया कि भारतीय ज्ञान परंपरा न केवल अतीत की धरोहर है, बल्कि वर्तमान और भविष्य की दिशा को आलोकित करने वाली प्रेरक शक्ति भी है।

शैक्षिक उत्कृष्टता के प्रति नालंदा की प्रतिबद्धता को मजबूत करने के लिए, इस विद्यापीठ ने विविध शैक्षिक कार्यक्रम, संगोष्ठियां, सम्मेलन और व्याख्यान श्रृंखलाएं आयोजित की, जिससे विश्वविद्यालय का शैक्षणिक वातावरण काफी समृद्ध हुआ। आईसीएचआर समर्थित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी "सभ्यतागत आत्म की पुनः खोज: भारतीय संस्कृति, दर्शन और इतिहास पर धर्मपाल के आवश्यक तत्व" में गीता धर्मपाल, जे.के. बजाज, राधवल्लभ त्रिपाठी, पवन गुप्ता, अंकुर कक्कड़, श्रीजीत दत्ता, एम.डी. श्रीनिवास और अन्य सहित प्रख्यात विद्वानों ने भारत के सभ्यतागत विचार और धर्मपाल की बौद्धिक विरासत पर आलोचनात्मक संवाद के लिए भाग लिया। आईसीपीआर अध्ययन मंडल व्याख्यान श्रृंखला में कई महत्वपूर्ण प्रस्तुतियाँ शामिल थी। इनमें प्रोफेसर अंगराज चौधरी का "प्रारंभिक बौद्ध धर्म की चिंतनशील परंपराएँ: समता और विपश्यना ध्यान के सिद्धांत और अभ्यास", आदरणीय गेशे दोरजी दामदुल का "विपश्यना ध्यान: शून्यता के मध्यमक दृष्टिकोण की अंतर्दृष्टि", प्रोफेसर अरिंदम चक्रवर्ती का "स्वामी विवेकानंद का प्रेम का वेदांत", प्रोफेसर रजनीश कुमार मिश्रा का "त्रिका योग में समाधि", और प्रोफेसर प्रदीप पी. गोखले का "चार उदात्त दृष्टिकोणों (ब्रह्मविहार) की खेती" विषयक व्याख्यान शामिल थे। इन प्रस्तुतियों ने दार्शनिक और धार्मिक परंपराओं में अनुसंधान के दृष्टिकोण को समृद्ध किया।यूनेस्को विश्व दर्शन दिवस के अवसर पर, विद्यापीठ ने विद्यार्थियों को "पवित्र स्थान के रूप में पृथ्वी: पारिस्थितिकी-संरक्षण की भारतीय परंपरा" विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता और "विश्व शांति की खोज में भारतीय दर्शन की समकालीन प्रासंगिकता" विषय पर निबंध प्रतियोगिता के माध्यम से सक्रिय रूप से जोड़ा।इन आयोजनों ने दार्शनिक, नैतिक, पर्यावरणीय और सातत्यता (स्थायित्व) से संबंधित मुद्दों पर आलोचनात्मक सोच और सहभागिता के लिए एक सशक्त मंच प्रदान किया।

महाभारत, अनुप्रयुक्त बौद्ध दर्शन और अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध संस्थानों के ऑनलाइन व्याख्यानों ने वैश्विक विद्वानों के बीच संवाद और अंतर-विषयक सहयोग को इस विद्यापीठ ने सशक्त बनाया। बोधगया में बोध महोत्सव, लखीसराय में पर्यटन संगोष्ठी और हेरिटेज वॉक जैसे कार्यक्रमों ने विद्यार्थियों को अनुभवात्मक शिक्षा का अवसर प्रदान किया। लखीसराय स्थित बालगुद्दर और लाली पहाड़ी की यात्राओं ने पाठ्य अध्ययन को जीवंत सांस्कृतिक अनुभवों से जोड़ा।

“भारतीय चिंतनशील परंपराएं: पाठ्य, उद्धारशास्त्रीय और तुलनात्मक अंतर्दृष्टि” विषय पर आयोजित बुद्ध जयंती समारोह में ध्यान प्रथाओं, पाठ्य अध्ययन और बौद्ध चिंतन पर प्रस्तुतियों ने आलोचनात्मक और बौद्धिक संवाद को और गहराई दी। इन आयोजनों ने संकाय अनुसंधान और विद्यार्थी शिक्षण को समृद्ध करते हुए एक प्रेरक शैक्षणिक वातावरण का निर्माण किया। बौद्ध अध्ययन के विद्यार्थियों ने सहभागिता पहल के अंतर्गत पिलखी गांव का दौरा किया, जहां उन्होंने नैतिकता, शिक्षा और बहुभाषिकता के महत्व पर सार्थक संवाद और परस्पर सीखने के अनुभव साझा किए। शैक्षणिक वर्ष 2024-2025 के दौरान, ने गहन शैक्षणिक अध्ययन, सघन और उच्च स्तरीय शोध और विद्यापीठ सेमिनारों और कार्यक्रमों के माध्यम से प्राचीन भारतीय ज्ञान को समकालीन अनुसंधान और वैश्विक प्रासंगिकता के साथ एकीकृत करने की अपनी प्रतिबद्धता को सफलतापूर्वक बनाए रखा है। आगामी वर्ष को देखते हुए, निरंतर वृद्धि और विकास के लिए तैयार है। इसके तहत, पाठ्यक्रम को समृद्ध बनाने तथा अनुवाद पर ध्यान केंद्रित करते हुए अपने भाषा कार्यक्रमों को और मजबूत बनाने की योजना पर काम चल रहा है।विद्यापीठ विद्यार्थी गतिशीलता और संकाय आदान-प्रदान के माध्यम से अपनी अंतर्राष्ट्रीय साझेदारी और सहयोग को मजबूत करने के लिए भी प्रयासरत है।

इस विद्यापीठ की योजना विद्यार्थियों को पाली, संस्कृत, इंडोनेशियाई भाषा, खमेर, चीनी, तिब्बती में संरक्षित भारतीय ज्ञान के अनुवाद में शामिल करने की है। स्थानीय समुदायों को सार्वजनिक व्याख्यान और विशेष विद्यापीठ गतिविधियों और कार्यक्रमों में शामिल करने के लिए योजनाएँ विकसित की जा रही हैं।

एसबीएसपीसीआर डॉक्टरेट विद्यार्थियोंके लिए अपना समर्थन बढ़ाने तथा के विद्वत्तापूर्ण शिक्षण और अनुसंधान वातावरण को समृद्ध करने के लिए पोस्ट-डॉक्टरल फेलो रखने के लिए प्रतिबद्ध है। स्थिरता और पर्यावरण चेतना विद्यापीठ के लिए महत्वपूर्ण प्राथमिकताएँ बनी हुई हैं। जैसे-जैसे भविष्य की ओर अग्रसर है, वह अपने मूल उद्देश्य के प्रति गहराई से प्रतिबद्ध है —प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय की उस भावना को पुनर्जीवित करना, जो शिक्षा का ऐसा केंद्र था जहाँ मन की साधना, द्वंद्वात्मक चिंतन और गहन अनुसंधान का समन्वय होता था। विद्यापीठ इस बात को मान्यता देता है कि आज की तीव्रता से बदलती और परस्पर जुड़ती दुनिया में, बौद्ध और हिंदू परंपराओं की अंतर्दृष्टि पहले से कही अधिक प्रासंगिक और आवश्यक हो गई है।

प्रकाशन और अन्य शैक्षणिक योगदान

प्रकाशन

- डबराल, पूजा. 2024. “**महाकरुणा और प्रतित्यासमुत्तपादः सार्वभौमिक शांति और सद्भाव के लिए बुद्ध की विरासत.**” प्रज्ञा (बुद्धि) 22, सं. 1. बिहार: बोधगया मंदिर प्रबंधन समिति. आईएसएसएन 2250-1983.
- डबराल, पूजा. 2024. **प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय और इसका पुनरुद्धारः ज्ञानोदय का एक प्रकाशस्तंभ.** अमेरिका, स्कॉटलैंड, सी.टी.: बुद्धि का वन.
- डबराल, पूजा. 2025. **बौद्ध मनोविज्ञान.** अंग्रेजी से हिंदी में अनुवादित. पूजा डबराल द्वारा संपादित. नई दिल्ली: तिब्बत हाउस नालंदा शिक्षा पोर्टल.
- डबराल, पूजा. 2025. “**प्रज्ञा-प्रेरित बोधिसत्व क्रियाएँः विश्व शांति और सतत विकास के लिए बौद्ध अंतर्दृष्टि.**” मानव गरिमा के लिए एकता और समावेशिता: विश्व शांति और सतत विकास के लिए बौद्ध अंतर्दृष्टि (वेसाक 2025), मोस्ट वेन द्वारा संपादित. थिच नहत तु. वियतनाम: वियतनाम बौद्ध विश्वविद्यालय प्रकाशन.
- डबराल, पूजा. 2025. “**आत्मनिर्भरता पर बौद्ध अंतर्दृष्टिः नालंदा ग्रंथों से विचार.**” प्रज्ञा (बुद्धि). बिहार: बोधगया मंदिर प्रबंधन समिति. आईएसएसएन 2250-1983.
- घोष, के., और राजेश्वर मुखर्जी. 2024. “**अवष्टन्नयः गहरी अंतर्दृष्टि.**” वैज्ञानिक गुस्सा 15, संख्या 2: 2342–2348. https://doi.org/10.58414/SCIENTIFICTEMPER.2024.15.2.49.
- ली, ब्रेंडा हुआंग जुआन. 2025. “**अनुसातीः इसके मनोवैज्ञानिक प्रभाव की पुनः जांच.**” महाबोधि: अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध जर्नल 134: 118–122. आईएसएसएन 0025-0406.
- मिश्र, गोदाबरीश. “**अनुभव की आलोचना के रूप में दर्शनः भारतीय परिप्रेक्ष्य.**” जर्नल ऑफ होलिस्टिक साइंस रिसर्च इंस्टीट्यूट. सूरत: 226–238.
- मिश्र, गोदाबरीश. 2025. “**सत्ता और राजनीति से परेः सार्वभौमिक शांति और सद्भाव की नीव के रूप में बौद्ध धर्म.**” कैसुरेः सांस्कृतिक अनुवाद की कविताएँ 6, संख्या 2. आईएसएसएन 2454-9495.
- मिश्र, गोदाबरीश एड. 2025. **कैसुरेः सांस्कृतिक** अनुवाद की कविताएँ 6, संख्या 2. आईएसएसएन 2454-9495.
- समदर्शी, प्रांशु. 2024. “**बौद्ध धर्म के इतिहासलेखन में विसंगतियां और पूर्वाग्रह (बौद्ध धर्म के इतिहासलेखन में विसंगतियां और पूर्वाग्रह).**” चेतना 8: 60–71. शिमला: भारतीय उन्नत अध्ययन संस्थान.
- समदर्शी, प्रांशु. 2025. “**बौद्ध विरासत का पुनरुद्धार और औपनिवेशिक भारत में पाली विद्वानों का योगदान).**” प्रज्ञा 23, सं. 1. बोधगया: बोधगया मंदिर प्रबंधन समिति (बीटीएमसी), बिहार सरकार.

सम्मेलनों में प्रस्तुतियाँ और आमंत्रित व्याख्यान

- आचार्य, कुमुद प्रसाद. “**अमृतगीता में योग और प्राणायाम की अवधारणा (अभिराम परमहंस देव के संदर्भ में).**” राष्ट्रीय संगोष्ठी “**अभिराम साहित्य के आयामः योग और आयुर्वेद के विशेष संदर्भ में**” में ऑनलाइन शोधपत्र प्रस्तुत किया गया, जिसका आयोजन अभिराम सरस्वत परिषद्–पूर्णमासी पाठागार, कटक, ओडिशा द्वारा किया गया, दिनांक 8 दिसंबर 2024.
- आचार्य, कुमुद प्रसाद. “**रस की परिणतिः मायारस की अवधारणा – विद्यराम की ‘रसदीर्घिका’ के व्याख्यात्मक दृष्टिकोण से.**” अंतर्राष्ट्रीयसम्मेलन “**भारतीय ज्ञान प्रणाली (वैदिक और उत्तरवैदिक साहित्य सहित)**” में शोधपत्र प्रस्तुत किया गया, जिसका आयोजन संस्कृत और इंडोलॉजी विभाग, विश्व बांग्ला विश्वविद्यालय, बोलपुर, पश्चिम बंगाल द्वारा भारतीय दर्शन अनुसंधान परिषद (आईपीसीआर), नई दिल्ली के वित्तीय सहयोग से किया गया, 29–30 मार्च 2025.
- आचार्य, कुमुद प्रसाद. “**‘मा निषाद’ टीकाकारों की दृष्टि सेः एक विश्लेषणात्मक विवेचन.**” दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी “**ओडिशा का ज्ञान तंत्रः स्वदेशी बुद्धि और बौद्धिक परंपरा**” में ऑनलाइन शोधपत्र प्रस्तुत किया गया, जिसका आयोजन ब्रह्मवाक एजुकेशनल एंड चैरिटेबल ट्रस्ट एवं संस्कृत विभाग, बी.जे.बी. स्वायत्त महास्कूल, भुवनेश्वर द्वारा संयुक्त रूप से किया गया, 24–25 मार्च 2025.

संकाय प्रकाशन और अन्य शैक्षणिक योगदान

- डबराल, पूजा. “**बौद्ध धर्म और व्यवसायिक नैतिकताः प्राचीन नालंदा ग्रंथों से अंतर्दृष्टि.**” स्पिरिचुअल कॉन्क्लेव ऑन इंटीग्रेटिंग स्पिरिचुअलिटी इन्टू बिजनेस में शोधपत्र प्रस्तुत किया गया, एक्सएलआरआई, ज़ेवियर विद्यापीठ ऑफ मैनेजमेंट, जमशेदपुर, 10 फरवरी 2025.
- डबराल, पूजा. “**क्रोध के दोषः बोधिचर्यावतार से गहन प्रतिरोधक उपाय.**” तुषित मेडिटेशन सेंटर, नई दिल्ली में व्याख्यान, 5 अक्टूबर 2024.
- डबराल, पूजा. “**भावनाओं और अनुभूति के तत्त्व.**” फॉरेस्ट ऑफ विजडमः प्लांटिंग सीड्स ऑफ कंपैशन एंड रूट्स ऑफ विजडम, स्कॉटलैंड, अमेरिका द्वारा आयोजित ऑनलाइन व्याख्यान, 11 जनवरी 2025.
- डबराल, पूजा. “**माध्यमक दर्शन में शून्यता और परस्पर निर्भर उत्पत्ति का विवेचन – बोधिचर्यावतार के संदर्भ में.**” तुषिता मेडिटेशन सेंटर, हिमाचल प्रदेश में आयोजित शांतिदेव के बोधिचर्यावतार पर अध्ययन शिविर में समीक्षा व्याख्यान, 4–7 जुलाई 2024.
- डबराल, पूजा. “**बोधिसत्व के मार्गदर्शक ग्रंथ ‘बोधिचर्यावतार’ के आधार पर मन के प्रशिक्षण हेतु मनोविज्ञान.**” फॉरेस्ट ऑफ विजडम, स्कॉटलैंड, अमेरिका द्वारा आयोजित ऑनलाइन व्याख्यान, 29 मार्च 2025.
- डबराल, पूजा. “**अनुभूति और धारणा की दुनिया को समझना.**” फॉरेस्ट ऑफ विजडम, स्कॉटलैंड, अमेरिका द्वारा आयोजित ऑनलाइन व्याख्यान, 18 जनवरी 2025.
- डबराल, पूजा. “**मन पर बौद्ध अंतर्दृष्टियाँः नालंदा ग्रंथों से परावर्तन.**” कॉन्फ्रेंस ऑन परस्पेक्टिव्स ऑफ मेंटल एक्सपीरियंसेज़: न्यूरोसाइंस एंड साइकोलॉजी (श्रृंखला IX), तिब्बत हाउस, इंडिया हैबिटेट सेंटर, नई दिल्ली, 3 जनवरी 2024.
- ली, ब्रेंडा हुयोंग जुआन. “**बौद्ध नैतिकताः नकारात्मक भावनाओं के रूपांतरण का मार्ग.**” त्रान न्हान तोंग संस्थान, हनोई राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, वियतनाम में अतिथि व्याख्यान, 21 अक्टूबर 2024.
- ली, ब्रेंडा हुयोंग जुआन. “**दक्षिण-पूर्व एशिया में कृषि संस्कृति से जुड़ी बौद्ध परंपरा.**” सांस्कृतिक अध्ययन विभाग, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी विश्वविद्यालय, हो ची मिन्ह सिटी में अतिथि व्याख्यान, 5 जून 2025.
- ली, ब्रेंडा हुयोंग जुआन. “**मरणासन्न रोगियों के लिए समग्र देखभाल.**” होमी भाभा कैंसर अस्पताल एवं अनुसंधान केंद्र, मुजफ्फरपुर द्वारा बोधगया में आयोजित कार्यक्रम में अतिथि व्याख्यान, 10–11 अगस्त 2024.
- ली, ब्रेंडा हुयोंग जुआन. “**बौद्ध मनोविज्ञान का अवलोकन.**” सामाजिक विज्ञान और मानविकी विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग, हो ची मिन्ह सिटी में अतिथि व्याख्यान, 14 जून 2025.
- ली, ब्रेंडा हुयोंग जुआन. “**निकाय में शुद्धभूमि की अवधारणा.**” वियतनामी महासंघ, यूरोप–धर्म प्रचार परिषद द्वारा आयोजित ऑनलाइन अतिथि व्याख्यान, 15 अगस्त 2024.
- ली, ब्रेंडा हुयोंग जुआन. “**महायान साधना में निकाय की भूमिका.**” वियतनाम बौद्ध विश्वविद्यालय में आयोजित अंतर्राष्ट्रीयसम्मेलन “**हिज एमिनेंस थिच मिन्ह चाउः विज़न एंड मिशन**” में शोधपत्र प्रस्तुत, 20 अक्टूबर 2024.
- मिश्र, गोदाबरीश. “**भारत और उससे परे बौद्ध धर्म.**” आईकेएस 2025 व्याख्यान श्रृंखला के अंतर्गत आईआईटी गांधीनगर, 14 जनवरी 2025.
- मिश्र, गोदाबरीश. “**ब्रह्म से शून्यता तकः वेदांत और बौद्ध धर्म के बीच साझा क्षितिज की खोज.**” दलाई लामा सेंटर फॉर तिब्बतन एंड इंडियन एंशिएंट विजडम, बोधगया द्वारा आयोजित अखिल भारतीय सम्मेलन में व्याख्यान, 3–4 अप्रैल 2025.
- मिश्र, गोदाबरीश. “**भारतीय भौतिकवाद.**” **आईसीपीआर राष्ट्रीय संगोष्ठी ‘भारतीय अध्यात्म के व्यापक संदर्भ में भारतीय भौतिकवाद’**, श्यामा प्रसाद मुखर्जी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, 16–17 अप्रैल 2025.
- मिश्र, गोदाबरीश. “**चित्त की युक्तिसंगत और क्रियात्मक प्रतिमानः अस्तित्व के रूप में चेतना और चेतना के रूप में अस्तित्व.**” सीसुरे कलेक्टिव सोसाइटी के VI अंतर्राष्ट्रीयसम्मेलन में मुख्य व्याख्यान, कूचबिहार कॉलेज, पश्चिम बंगाल, 9–11 अप्रैल 2025.

संकाय प्रकाशन और अन्य शैक्षणिक योगदान

- मिश्र, गोदाबरीश. **आईसीपीआर राष्ट्रीय संगोष्ठी 'भारतीय भौतिकवाद'**, एसपीएम कॉलेज फॉर वीमेन, दिल्ली विश्वविद्यालय, 7 अप्रैल 2025 में शोधपत्र प्रस्तुत.
- मिश्र, गोदाबरीश. **राष्ट्रीय संगोष्ठी 'वचनामृत और शिक्षा पत्री'**, श्री स्वामीनारायण मंदिर, वडताल, गुजरात, 16–18 सितंबर 2024 में शोधपत्र प्रस्तुत.
- मिश्र, गोदाबरीश. एशियाई बौद्ध शिखर सम्मेलन में भागीदारी — "**एशिया को सशक्त बनाने में बुद्ध धर्म की भूमिका**", इंटरनेशनल बौद्ध कन्फेडरेशन (आईबीसी), नई दिल्ली, 5–6 नवंबर 2024.
- मिश्र, गोदाबरीश. **श्री शंकर अध्ययन मंडल**, श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, कालडी, में अध्यक्षीय व्याख्यान, 19 अगस्त 2024.
- मिश्र, गोदाबरीश. "**शंकर का अपरोक्षानुभूति का सिद्धांत.**" रामकृष्ण मिशन, मुजफ्फरपुर में ऑनलाइन व्याख्यान, 6 अप्रैल 2025.
- मिश्र, गोदाबरीश. "**वेदांत—मैं भ्रम हूं और विट्गेंश्टाइन.**" राष्ट्रीय संगोष्ठी 'विट्गेंश्टाइन रीइमैजिन्ड: भारतीय दर्शन के परिप्रेक्ष्य में भाषा, शब्द और मन की खोज', आईआईटी बॉम्बे, 19–20 मार्च 2025.
- समदर्शी, प्रांशु. "**तिब्बत अध्ययन पाठ्यक्रम के अंतर्गत संसाधन व्यक्ति के रूप में व्याख्यान श्रृंखला.**" मेजर बॉब खातिंग इंस्टीट्यूट ऑफ हिमालयन स्टडीज़ और गजराज कोर, ईस्टर्न कमांड, भारतीय सेना, अरुणाचल प्रदेश, 16–17 अगस्त 2024.
- समदर्शी, प्रांशु. "**शास्त्रीय भाषाओं के रूप में संस्कृत और पाली की स्थायी विरासत: बौद्ध धरोहर के माध्यम से एशियाई देशों के पारस्परिक संबंध.**" अंतर्राष्ट्रीयअभिधम्म दिवस और पाली को शास्त्रीय भाषा के रूप में मान्यता का उत्सव, इंटरनेशनल बौद्ध कन्फेडरेशन, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, विज्ञान भवन, नई दिल्ली, 17 अक्टूबर 2024.
- समदर्शी, प्रांशु. "**साहित्यिक अनुसंधान में प्रश्न निर्माण और सैद्धांतिक अनुसंधान**" प्राकृतिक चिकित्सा और योग विभाग, हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, 15–16 नवंबर 2024.
- समदर्शी, प्रांशु. "**बौद्ध दर्शन और न्यूरोसाइंस: मन और अनुभूत विश्व.**" राष्ट्रीय सम्मेलन 'मानसिक अनुभवों के दृष्टिकोण: न्यूरोसाइंस और मनोविज्ञान', तिब्बत हाउस, इंडिया हैबिटेट सेंटर, नई दिल्ली, 4 जनवरी 2025.
- समदर्शी, प्रांशु. "**पाली भाषा की विरासत: उसका सांस्कृतिक प्रभाव और बौद्ध एशिया में एकीकरण की संभावनाएँ.**" बोध महोत्सव 2025 – अंतर्राष्ट्रीयसंगोष्ठी, बोधगया, 1 फरवरी 2025.

विद्यापीठ द्वारा आयोजित शैक्षणिक कार्यक्रम

- डॉ. विक्रम सम्पत — पुस्तक विमोचन और वार्ता "**वेटिंग फॉर शिव: अनअर्थिंग द ट्रुथ ऑफ काशी-ज्ञानवापी**" पर, 13 अगस्त 2024.
- प्रोफेसर अंगराज चौधरी — आईसीपीआर स्टडी सर्कल के अंतर्गत व्याख्यान "**प्रारंभिक बौद्ध धर्म की चिंतनपरक परंपराएँ: समथ और विपश्यना ध्यान के सिद्धांत और अभ्यास**" पर, नालंदा विश्वविद्यालय के मिनी ऑडिटोरियम में, 30 सितंबर 2024.
- डॉ. जतिंदर कुमार बजाज — आईसीपीआर व्याख्यान "**अन्नं बहु कुरवीत: भारतीय अनुशासन की स्मृति – प्रचुर मात्रा में अन्न उगाने और साझा करने की परंपरा**" पर, अक्टूबर 2024.
- प्रोफेसर वागीश शुक्ला, आईआईटी दिल्ली — **महाभारत पर ऑनलाइन व्याख्यान श्रृंखला**, 26 और 29 नवंबर 2024.
- राष्ट्रीय संगोष्ठी — "सभ्यतागत आत्म की पुनर्खोज: भारतीय संस्कृति, दर्शन और इतिहास पर धरमपाल के आवश्यक विचार" विषय पर, भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद (आईसीएचआर) के सहयोग से, 20–22 अक्टूबर 2024 को आयोजित. प्रमुख प्रतिभागियों में गीता धरमपाल, जे. के. बजाज, राधावल्लभ त्रिपाठी, पवन गुप्ता, अंकुर कक्कड़, स्रिजीत दत्ता, एम. डी. श्रीनिवास, विजय राघवन चारियार, प्रबोल रॉय चौधरी, और के. केशव राव शामिल थे.

- गेशे दोरजी दामदुल, निदेशक, तिब्बत हाउस, दिल्ली — **"विपश्यना ध्यानः शून्यता पर माध्यमक दर्शन की सत्ता-सिद्धांतगत अंतर्दृष्टि"** विषय पर व्याख्यान, आईसीपीआर स्टडी सर्कल के अंतर्गत, नालंदा विश्वविद्यालय के मिनी ऑडिटोरियम में आयोजित, 30 अक्टूबर 2024.
- कार्यशाला — अनुप्रयुक्त बौद्ध दर्शन, आयोजित - 3 दिसंबर 2024.
- प्रोफेसर अरिंदम चक्रवर्ती — विशिष्ट व्याख्यान **"स्वामी विवेकानंद का प्रेम-वेदान्त"** विषय पर, विश्व दर्शन दिवस और स्वामी विवेकानंद जयंती के उपलक्ष्य में, एनयू–आईसीपीआर दिल्ली व्याख्यान श्रृंखला के अंतर्गत, नालंदा विश्वविद्यालय के मिनी ऑडिटोरियम में, 12 जनवरी 2025 को आयोजित.
- प्रोफेसर रजनीश कुमार मिश्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली — बौद्ध दर्शन पर ऑनलाइन व्याख्यान, 13–14 फरवरी 2025.
- प्रोफेसर के. टी. एस. साराओ — **बौद्ध इतिहास पर व्याख्यान श्रृंखला (कुल बारह सत्र)** आयोजित, 19 मार्च – 18 अप्रैल 2025.

▲ नालंदा-खंडहर के निकट स्थित रुक्मिणीस्थान के क्षेत्र-भ्रमण के दौरान एसबीएसपीसीआर के विद्यार्थी एवं प्राध्यापक

भाषा और साहित्य/मानविकी विद्यापीठ

मानविकी को पुनः परिभाषित करने और पुनर्विचार करने के लिए समर्पित यह विद्यापीठ, मानविकी को ज्ञान के क्षेत्र के रूप में स्थापित करने वाले आधारभूत प्रश्नों पर शोध करने के लिए सुदृढ़ दृष्टिकोण अपनाता है, तथा एशियाई और गैर-एशियाई संदर्भों में भाषा, साहित्य, संस्कृति और जीवन के बीच अंतर्संबंधों की खोज करता है। नालंदा महाविहार के सार और समग्र विश्वविद्यालय के चरित्र को ध्यान में रखते हुए, यह एक विविध और जीवंत बौद्धिक संस्कृति को बढ़ावा देने और बनाए रखने का प्रयास करता है; जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों को सांस्कृतिक संदर्भ और विश्व साहित्य की समृद्ध विविधता के परिप्रेक्ष्य की सराहनीय और व्यावहारिक समझ हासिल करने की क्षमता प्रदान करना है।
विद्यापीठ में विशेषज्ञता प्रारंभिक लिखित पांडुलिपियों से लेकर 21वी सदी के नवीनतम साहित्य तक तथा एशिया, यूरोप, अफ्रीका, अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया के साहित्य सहित कई महाद्वीपों में सार्वभौमिकता तक फैली हुई है। यहाँ की शिक्षण और अनुसंधान पद्धतियाँ भारतीय सैद्धांतिक दृष्टिकोण के ढाँचे के भीतर ज्ञान परंपराओं के विशाल क्षेत्र को समझने पर केंद्रित हैं।
वर्ष 2024–25 में वैश्विक संदर्भ में मानविकी पर पुनर्विचार करने की दिशा में निरंतर प्रयास किए गए, जिसमें पूर्व और पश्चिम, परंपरा और आधुनिकता, तथा कला और जीवन के बीच संवाद पर जोर दिया गया।

भाषा और साहित्य/मानविकी

यह विद्यापीठ पूर्व के समाजों में परिकल्पित ढाँचे के भीतर दुनिया की भाषाओं और साहित्य को समझने की दृष्टि से शैक्षणिक कार्यक्रम और पाठ्यक्रम संचालित करता है। पाठ्य विचार प्रक्रियाओं (जिनमें एशिया और उसके बाहर के कई देशों की पाठ्य और जीवंत परंपराओं की बड़ी छाप है) को दुनिया भर में विभिन्न विद्वानों के कार्यों में सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली है। यहाँ के एम.ए. और पी.एच.डी. कार्यक्रम इन विद्वत्तापूर्ण कार्यों को एक उभरते विश्वदृष्टिकोण के साथ समझने पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जो संपूर्ण विश्व को सभी प्राणियों के बीच पारस्परिक सम्मान के साथ सह-अस्तित्व का एक एकीकृत स्थान मानता है।

शैक्षणिक वर्ष 2024-25 में, ने विश्व साहित्य में एमए और विश्व साहित्य में पीएचडी को प्रस्तुत किया। दोनों कार्यक्रमों में भाषा, साहित्य और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं पर शिक्षण और अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य का अन्वेषण किया गया।

विद्यापीठ ने भाषा शिक्षण में कई अंशकालिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए, जिससे बड़े पैमाने पर लोगों के कौशल विकास में योगदान मिला। एम.ए. और पी.एच.डी. दोनों कार्यक्रमों में भाषा और साहित्य पर चर्चा को समझने और उसे आकार देने में भारतीय बौद्धिक परंपराओं के अनुप्रयोग पर नवीन और चिंतनशील पाठ्यक्रम शामिल थे। व्याकरण, साहित्य और दर्शन पर अध्ययन की भारतीय परंपराओं (जैसा कि भारतीय दर्शन के विभिन्न शैक्षिणक संस्थानों में मौजूद है) को लिपिबद्ध, मौखिक और दृश्य ग्रंथों के विश्लेषण में लागू किया गया है।

बौद्ध विचारों पर साहित्यिक विश्लेषण और आलोचना पर उनके अनुप्रयोग के संदर्भ में चर्चा की गई है। भाषा और साहित्य अध्ययन के क्षेत्र में अनुसंधान पद्धति विकसित करने के लिए न्याय दर्शन को लागू किया गया। ये पाठ्यक्रम आलोचनात्मक और रचनात्मक जांच के लिए भविष्य की नीव रखते हैं, साथ ही यूरो-अमेरिकी विचार प्रक्रियाओं के विकास में प्राच्य दृष्टिकोणों के समायोजित करने की समझ विकसित करते हैं।इस प्रकार, विद्यापीठ विश्व साहित्यिक और भाषाई संस्कृतियों पर भारतीय दृष्टिकोणों में गहराई से उतरता है।

संकाय विशेषज्ञता के विशिष्ट क्षेत्रों में साहित्यिक और सांस्कृतिक अध्ययन, विश्व साहित्य, भारतीय काव्यशास्त्र, सौंदर्यशास्त्र, दृश्य अध्ययन, डिजिटल मानविकी और प्रदर्शन परंपराएं, भारतीय साहित्य, भाषा और साहित्य अध्ययन से संबंधित भारतीय विचार प्रणालियां आदि शामिल हैं।

यह विद्यापीठ एशियाई और गैर-एशियाई संदर्भों में मानविकी, भाषा, साहित्य, संस्कृति और जीवन के बीच अंतर्संबंधों को पुनः परिभाषित करने और पुनर्विचार करने के लिए समर्पित है। यह मानविकी को ज्ञान के क्षेत्र के रूप में स्थापित करने वाले आधारभूत प्रश्नों पर अनुसंधान के लिए गहन दृष्टिकोण अपनाता है।

विद्यार्थियों को न केवल वैश्विक और भारतीय साहित्यिक परंपराओं के साथ जुड़ाव प्रदर्शित करने के लिए प्रोत्साहित किया गया, अपितु परिष्कृत सैद्धांतिक ढांचे और बहुभाषी दक्षताओं के अनुप्रयोग को भी प्रदर्शित करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। उदाहरण के लिए: एक विद्यार्थी ने अभिनवगुप्त के विचारों के माध्यम से संस्कृत काव्यशास्त्र और स्वदेशी सौंदर्य सिद्धांत को सामने रखा; जबकि दूसरे ने दृष्टिबाधिता में स्मृति और पहचान की खोज की, जिसने विश्व साहित्य को नैतिक और दार्शनिक लेंस के माध्यम से पढ़ने की विधि को दर्शाया। "द लिमिनल कैरेक्टर, द पोएट, एंड द हीलर" नामक एक अध्ययन द्वारा ओडिसी की पुस्तक में हेलेन के प्रतिनिधित्व का व्याख्यात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया, जिसमें शास्त्रीय भाषा विज्ञान को तुलनात्मक साहित्यिक विधियों के साथ जोड़ा गया।

दक्षिण-पूर्व एशियाई आख्यानों के साथ विद्यापीठ का जुड़ाव, आबिदा अल खलीकी के उपन्यास 'कार्तिनी' और लिलिस निहवान के उपन्यास 'कार्ति वालिदाह: मदर ऑफ द इंडोनेशियाई नेशन' में नायिकाओं के रूप में कार्तिनी और सिती वालिदाह पर किए गए शोध में स्पष्ट दिखाई दिया, जिसने नारीवादी पक्ष को उत्तर-औपनिवेशिक और सांस्कृतिक इतिहास-लेखन के भीतर रखा। क्रॉस-दार्शनिक व्याख्या को एक शोध प्रबंध में नागार्जुन के बौद्ध सैद्धांतिक पक्ष के माध्यम से काफ्का के परीक्षण को पढ़कर प्रदर्शित किया गया, जिसने भौगोलिक बायनेरिज़ से परे संवादात्मक विचार के लिए प्रतिबद्धता पर प्रकाश डाला।

बिमल डे के यात्रा लेखन में तिब्बत की धारणा पर एक अध्ययन में हिमालय की साहित्यिक कल्पना का पता लगाया गया, जिसमें यह शोध किया गया कि कथा में भूगोल, आध्यात्मिकता और प्रतिनिधित्व, किस प्रकार एक दूसरे से जुड़ते हैं।

विद्यार्थियोंके शोध प्रबंध यह दर्शाते हैं कि वे न केवल ज्ञान के प्राप्तकर्ता हैं, अपितु तुलनात्मक और अंतर-सभ्यतागत विद्यार्थीवृत्ति को आकार देने में सक्रिय भागीदार भी हैं। आलोचनात्मक शोध, रचनात्मकता, भाषाई बहुलता और अंतरसांस्कृतिक संवेदनशीलता को विकसित करके, विद्यापीठ एक विद्वतापूर्ण वातावरण का निर्माण जारी रखता है जो नालंदा के ऐतिहासिक लोकाचार को प्रतिबिंबित करता है।

शैक्षणिक वर्ष 2024–25 के दौरान, भाषा और साहित्य/मानविकी विद्यापीठ के संकाय सदस्यों और विद्वानों ने भारतीय सौंदर्यशास्त्र, बौद्ध अध्ययन, अनुवाद सिद्धांत, योग और समकालीन साहित्यिक और सांस्कृतिक आलोचना को शामिल करते हुए अनुसंधान के विविध क्षेत्रों में योगदान देना जारी रखा। प्रोफेसर सुशांत कुमार मिश्रा ने प्रकाशनों के माध्यम से भारतीय और यूरोपीय साहित्यिक विचारों के अंतर्संबंधों पर अनुसन्धान किया।

डॉ. मीर इस्लाम के शोध प्रकाशनों में लिंग, पहचान और सांस्कृतिक विमर्श के साथ अंतर-विषयक जुड़ाव प्रतिबिंबित हुआ। डॉ. स्मिता सिंह के शैक्षणिक योगदान ने प्राचीन ज्ञान प्रणालियों को समकालीन वैश्विक विचार के साथ एकीकृत करने के के दृष्टिकोण को प्रतिबिंबित किया। वैदिक दर्शन, मौखिक परंपराओं और नारीवादी तत्वमीमांसा पर उनके शोध ने "दुनिया" को एक साझा साहित्यिक और नैतिक स्थान के रूप में फिर से परिभाषित किया। डॉ. दिव्या शर्मा ने बी.आर. शर्मा के साथ मिलकर योग, ध्यान और मनोशारीरिक स्वास्थ्य पर अध्ययनों की एक श्रृंखला तैयार की, जिससे योग और स्वास्थ्य अनुसंधान के बढ़ते क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान मिला।

विश्वविद्यालय की योजना भाषा और साहित्य के अध्ययन में और अधिक कार्यक्रम विकसित करने की है। इसमें विदेशी विद्यार्थियों को हिंदी सहित विभिन्न भारतीय भाषाओं की शिक्षा, अनुवाद की दक्षता और विशेषज्ञता की प्राप्ति पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।

मार्च, 2025 में भाषा और साहित्य/मानविकी विद्यापीठ के विद्यार्थियों द्वारा आयोजित 'पुस्तक विनिमय' (बुक स्वैप) कार्यक्रम।

ऑफ़ लैंग्वेजेज एंड लिटरेचर / ह्यूमैनिटीज़ के विद्यार्थी एवं प्राध्यापक

संकाय प्रकाशन और अन्य शैक्षणिक योगदान

प्रकाशन

- डबराल, पूजा. 2025. “**हृदय सूत्र और उसका विश्व साहित्य में योगदान.**” द महा बोधि: द इंटरनेशनल बौद्ध जर्नल 134 (मई): 70–80. ISSN 0025-0406.
- इस्लाम, मीर. 2025. डिज़ायर ऑफ द विदर्ड फ्लावर. अनुवाद: मीर इस्लाम. बोइवाला पब्लिकेशन्स. ISBN 978-93-49288-1-4.
- इस्लाम, मीर, अविनाश मोहापात्रा, मड्डुपोजु सुदीप्ति, सुरेश कुमार गुप्ता, राजा अंबेठकर मट्टा, एवं लुईश गोगोई. 2025. “**समकालीन भारतीय साहित्य में लैंगिक भूमिकाओं की पुनर्कल्पना: एक नारीवादी समीक्षा.**” जर्नल ऑफ अप्लाइड बायोएनालिसिस 11, संख्या 3 (जून): 882–888.
- इस्लाम, मीर, पी. देइवनई, सम्पदा बैस कश्यप, चेतना राय, कुमार निशांत, एवं लीलावती पमार्थी. 2025. “**राष्ट्रीय पहचान के निर्माण में सांस्कृतिक धरोहर की भूमिका: एक व्यापक विश्लेषण.**” इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज़ एंड सोशल साइंस 10, संख्या 1 (मई). ISSN 2208-2190. यह लेख डीओएजे , ईबीएससीओ. और गेलके माध्यम से उपलब्ध है.
- मिश्र, सुषांत कुमार. 2024. “**उन्नीसवी सदी की फ्रांसीसी कविता: विश्व साहित्यिक संस्कृतियों से सूक्ष्म बोध.**” चरैवेति (जुलाई–दिसंबर). बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी.
- मिश्र, सुषांत कुमार. 2025. “**अनुवाद उपकरण: भारत में शब्दसमानता ग्रंथों का इतिहास.**” चरैवेति (जनवरी–जून). बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी.
- मिश्र, सुषांत कुमार. 2025. “**इंडिया ऑन होराइजन्स: सेंटुरीज़ ऑफ़ ल्युमिएर्स इन यूरोप.**” संपादित ग्रंथ डायमेंशंस ऑफ फिलॉसफी में, नई दिल्ली: डी. के. प्रिंटवर्ल्ड प्रा. लि.
- मिश्र, सुषांत कुमार. 2025. **कल्चरल ट्रांसपोज़िशन्स इन ट्रांसलेटिंग टेक्स्ट्स: ग्लिम्प्सेस फ्रॉम इंडिक सोर्सेज.** अनुवाद: ट्रांसलेटर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया, अप्रैल.
- शर्मा, दिव्या, एवं बी. आर. शर्मा. 2024. “**जेरियाट्रिक देखभाल में योग का महत्व: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन.**” इंडियन जर्नल ऑफ योगा एक्सरसाइज़ एंड स्पोर्ट साइंस एंड फिजिकल एजुकेशन 9, संख्या 2: 77–81.
- शर्मा, दिव्या, एवं बी. आर. शर्मा. 2024. “**जेरियाट्रिक स्वास्थ्य के प्रमुख पहलुओं पर रिस्टोरेटिव योग के विशिष्ट अनुप्रयोग का प्रभाव.**” सीसीआरवाईएन इंडियन जर्नल ऑफ योगा एंड नेचुरोपैथी 1, संख्या 1 (जनवरी–दिसंबर): 1–6
- शर्मा, दिव्या, एवं बी. आर. शर्मा. 2024. “**योग और ध्यान का मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य पर प्रभाव.**” जर्नल ऑफ आयुर्वेद एंड इंटीग्रेटिव मेडिकल साइंसेज़ 9, संख्या 5: 144–153
- शर्मा, दिव्या, एवं बी. आर. शर्मा. 2025. “**यौन विकारों के उपचार में योग की चिकित्सीय संभावनाएँ.**” इंडियन जर्नल ऑफ हेल्थ, सेक्सुअलिटी एंड कल्चर 10, संख्या 1: 23–29
- शर्मा, दिव्या, एवं बी. आर. शर्मा. 2025. “**बुढ़ापा, यौनिकता और निकटता: क्या योग सहायता कर सकता है?**” जर्नल ऑफ साइकोसेक्शुअल हेल्थ 7, संख्या 2: 98–106. सेज पब्लिकेशन्स.
- सिंह, स्मिता. 2025. “**शी हू इज़ ऑल: वैदिक चिंतन और स्तोत्रों में नारी का ब्रह्मांडीय स्वरूप.**” रिसर्च रिव्यू जर्नल ऑफ इंडियन नॉलेज सिस्टम्स 2, संख्या 2 (जुलाई–दिसंबर).
- सिंह, स्मिता. 2025. “**काला पानी के पार के गीत: गिरमिटिया अनुभव के मौखिक अभिलेख के रूप में भोजपुरी लोकगीत.**” शोध संगम 8, संख्या 3 (जुलाई–सितंबर): 1219–1228.

सम्मेलन प्रस्तुतियाँ, आमंत्रित व्याख्यान

- मिश्रा, सुशांत कुमार. 2025. “**कहानी कहने की कला: एक अंतर-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य.**” आमंत्रित व्याख्यान, बिड़ला इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, मेसरा, रांची, 20 फरवरी.

संकाय प्रकाशन और अन्य शैक्षणिक योगदान

- मिश्रा, सुशांत कुमार. 2025. “**अतिथी देवो भव बनाम पधारो म्हारे देसः एक अंतर-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य.**” ऑनलाइन व्याख्यान, रिफ्रेशर कोर्स, असम विश्वविद्यालय, सिलचर, 21 अप्रैल.
- मिश्रा, सुशांत कुमार. 2025. “**विज्ञान और तर्क के युग में मानविकीः तर्कसंगतता और डिजिटलीकरण.**” आमंत्रित व्याख्यान, क्लस्टर विश्वविद्यालय, जम्मू, 22 अगस्त.
- मिश्रा, सुशांत कुमार. 2025. “**चौराहे पर मानविकीः विभेदक या अभिन्न.**” ऑनलाइन संकाय विकास व्याख्यान, एमिटी विश्वविद्यालय, राजस्थान, २२ अप्रैल.
- मिश्रा, सुशांत कुमार. 2025. “**अंग्रेजी और भारतीय लेखकों पर फ्रांसीसी साहित्य का प्रभाव.**” संसाधन व्यक्ति के रूप में ऑनलाइन व्याख्यान, कला और सामाजिक विज्ञान में बहुविषयक संवाद और प्रवचन, यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड सोशल साइंसेज, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद, 3 जुलाई.
- मिश्रा, सुशांत कुमार. 2025. “**L'Utilisation des textes littéraires dans l'enseignement du FLE.**” आमंत्रित व्याख्यान, फ्रेंच विभाग, विज्ञान और मानविकी संकाय, एसआरएम विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान (एसआरएमआईएसटी), कट्टनकुलथुर, चेन्नई, 7 जनवरी.
- मिश्रा, सुशांत कुमार. 2025. “**चौराहे पर साहित्यिक अध्ययनः नवीन वैश्विक और डिजिटल प्रतिमान.**” तुलनात्मक साहित्य में पुनश्चर्या पाठ्यक्रम के दौरान दिया गया व्याख्यान, यूजीसी–एमएमटीटीसी, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी, २५ जून.
- मिश्रा, सुशांत कुमार. 2025. “**अनुसंधान पद्धतिः भाषा अध्ययन.**” व्याख्यानों की श्रृंखला, कानपुर विश्वविद्यालय, 17 और 21 फरवरी.
- मिश्रा, सुशांत कुमार. 2025. “**सामग्री और भाषा एकीकृत शिक्षण (सीएलआईएल).**” ऑनलाइन व्याख्यान, संकाय विकास कार्यक्रम, एमिटी विश्वविद्यालय, कोलकाता, 8 जुलाई.
- सिंह, स्मिता. 2024. “**पवित्र शरीर और उपचारात्मक शक्तियाँः वैदिक साहित्य में स्त्री दिव्यता और चिकित्सा मानविकी में इसकी प्रतिध्वनि.**” आमंत्रित व्याख्यान, महिला एवं लिंग अध्ययन विभाग, साउथ कैरोलिना यूनिवर्सिटी, कोलंबिया, संयुक्त राज्य अमेरिका, दिसंबर.
- सिंह, स्मिता. 2024. “**देवी की आवाज़ेंः भारतीय वैदिक ग्रंथों में स्त्री सार की पुनर्प्राप्ति**” अतिथि व्याख्यान, महिला एवं राजनीति कोर कैपस्टोन कोर्स, स्कूल ऑफ पब्लिक अफेयर्स, अमेरिकी यूनिवर्सिटी, वाशिंगटन, डीसी, यूएसए.
- सिंह, स्मिता. 2024. “**स्त्री दिव्यः भारतीय वैदिक साहित्य में ब्रह्मांड के सार की खोज.**” जुलाई में ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी, लंदन, यूके में ऑक्सफोर्ड महिला नेतृत्व संगोष्ठी में प्रस्तुत किया गया.
- सिंह, स्मिता. 2024. “**छठ पूजाः ग्लोबल साउथ में पारंपरिक पारिस्थितिक प्रथाओं को समकालीन पर्यावरणीय स्थिरता के साथ जोड़ना.**” पर्यावरण मानविकी और ग्लोबल साउथ पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत पेपरः पारिस्थितिक न्याय के लिए परिप्रेक्ष्य, भारतीय उन्नत अध्ययन संस्थान, शिमला, 21–22 जून.
- सिंह, स्मिता. 2024. “**बुद्धकारिता में रस के दार्शनिक और सौंदर्य आयामों का अनावरणः एक साहित्यिक अन्वेषण.**” बौद्ध अध्ययन और दर्शन पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (आईसीबीएसपी-24) में प्रस्तुत पेपर, थिम्पू, भूटान, 27 मार्च–28.
- सिंह, स्मिता. 2024. “**सामंजस्यपूर्ण दर्शनः मानसिक कल्याण पर हृदय सूत्र और योग.**” स्वास्थ्य मानविकी पर राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत पेपरः स्वास्थ्य, साहित्य, कला, समाज और संस्कृति का अंतर्संबंध, एसडीएनबीवी कॉलेज फॉर विमेन (मद्रास विश्वविद्यालय), 29 जनवरी – 2 फरवरी.
- सिंह, स्मिता. 2025. “**अनिश्चितता के युग में चिकित्सा मानविकी पर पुनर्विचार.**” बीमारी, कल्याण और फिटनेस पर राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत किया गया पेपर, अंग्रेजी और सांस्कृतिक अध्ययन विभाग, क्राइस्ट यूनिवर्सिटी, बैंगलोर, 20–22 जनवरी.

संकाय प्रकाशन और अन्य शैक्षणिक योगदान

विस्तार व्याख्यान

- प्रोफेसर रजनीश कुमार मिश्रा. **बौद्ध दर्शन** पर व्याख्यान. 17–22 मार्च, 2025.
- प्रोफेसर एलेन डेसोलिएरेस. लैटिन, **रोमन और पुर्तगाली साहित्य में महाकाव्य परंपराओं** पर व्याख्यान: एक तुलनात्मक और अंतर-सांस्कृतिक अध्ययन. 24–29 मार्च, 2025.
- प्रोफेसर करम तेज सिंह सराओ. **सिख भक्ति परंपराओं और तीर्थयात्रा अध्ययन पर व्याख्यानः गुरु जनक की शिक्षाएं और दर्शन.** मार्च–अप्रैल 2025.
- प्रोफेसर बिजॉय एच. बोरुआ. काण्टीय सौंदर्यशास्त्र पर ऑनलाइन व्याख्यान: **सुन्दर और उदात्त.** 3 और 17 अप्रैल, 2025.
- प्रोफेसर ओलिवियर आरिफोन. कथा और सार्वजनिक कूटनीति पर व्याख्यान: **सांस्कृतिक पहचान और सॉफ्ट पावर संचार.** 7–9 अप्रैल, 2025.
- प्रोफेसर अतनु भट्टाचार्य. अंग्रेजी भाषा शिक्षण (ईएलटी) पर व्याख्यान: **सिद्धांत, प्रौद्योगिकी, सामग्री और अनुसंधान संभावनाएं.** 15–19 अप्रैल, 2025.
- प्रोफेसर बालाजी रंगनाथन. **भारत के पुनर्जागरण के बारे में श्री अरबिंदो के दृष्टिकोण और देशिवदा के दर्शन** पर ऑनलाइन व्याख्यान. 28–30 अप्रैल, 2025.

▼ अतिथि प्रोफेसर के साथ भाषा और साहित्य/मानविकी के विद्यार्थी एवं प्राध्यापक

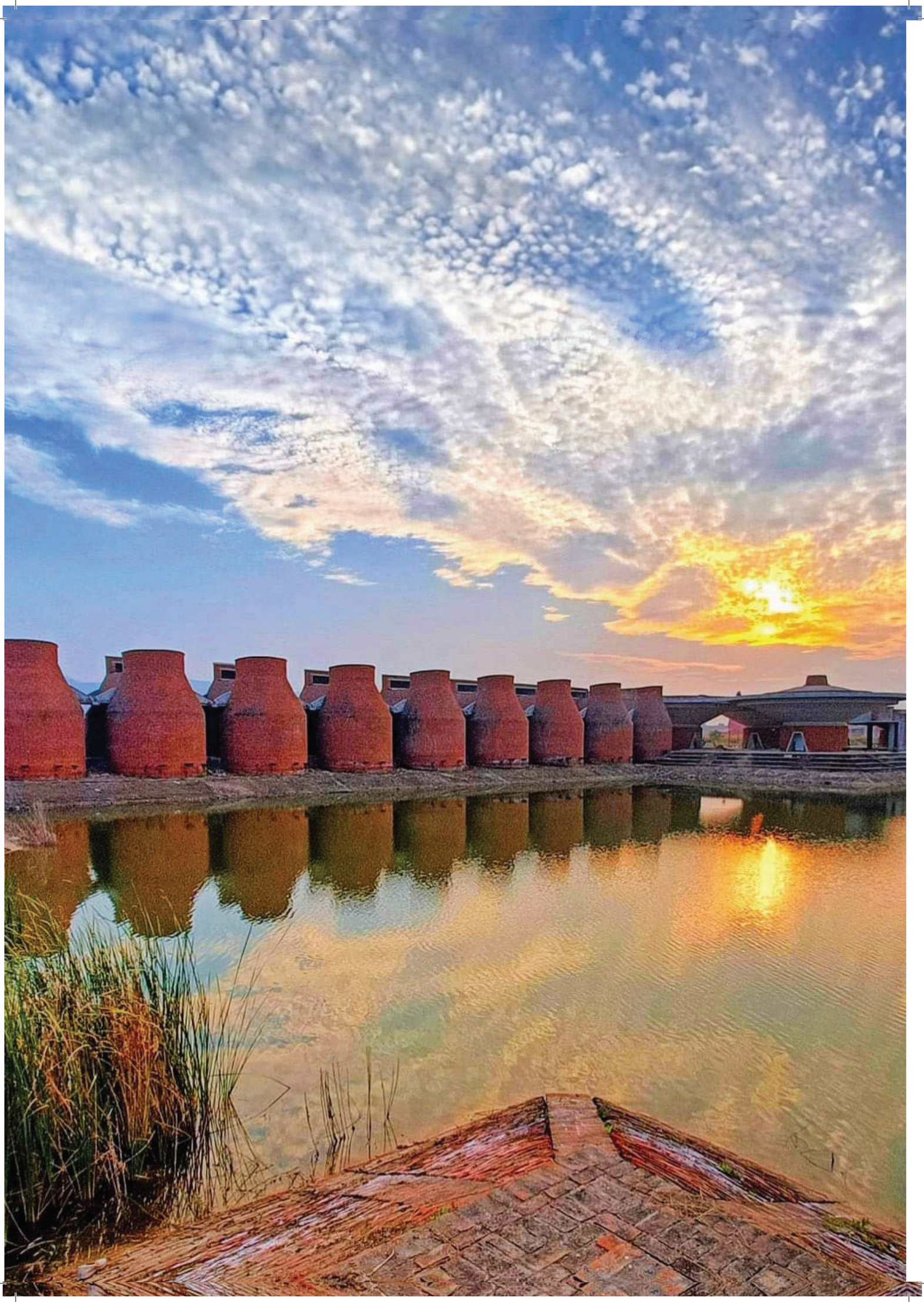

प्रबंधन अध्ययन
विद्यापीठ

प्रबंधन अध्ययन विद्यापीठ प्रबंधन विषयक शिक्षा को बढ़ावा देने के अपने मुख्य मिशन को आगे बढ़ा रहा है। शैक्षणिक वर्ष 2024-25 ने समेकन और विकास के एक चरण को चिह्नित किया, जिससे सातत्यता-उन्मुख प्रबंधन शिक्षा में अग्रणी के रूप में विद्यापीठ की स्थिति मजबूत हुई।वैश्विक नागरिकता और स्थायी नेतृत्व को पोषित करने के नालंदा विश्वविद्यालय के दृष्टिकोण पर आधारित, विद्यापीठ ने प्रबंधन सीखने के सभी आयामों—रणनीति और शासन से लेकर नवाचार और सामाजिक प्रभाव तक—में सातत्यता को शामिल करने के लिए अपनी प्रतिबद्धता को गहरा किया।

प्रबंधन अध्ययन

2024–25 के लिए विषयगत लक्ष्य अनुप्रयुक्त सातत्यता और जिम्मेदार व्यवसाय परिवर्तन पर केंद्रित था, जिसमें कार्रवाई योग्य शिक्षा, उद्योग–अकादमिक सहयोग और नीति जुड़ाव पर जोर दिया गया।सुदृढ़ पाठ्यक्रम, लाइव कॉर्पोरेट परियोजनाओं और अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान सहयोग के मिश्रण के माध्यम से, यह विद्यापीठ तेजी से विकास की ओर अग्रसर हो रहा है। यहाँ के पाठ्यक्रम उन विश्लेषणात्मक, नैतिक और नेतृत्व दक्षताओं को सुदृढ़ बनाते हैं जो वैश्विक परिदृश्य की जटिलताओं को समझने (नगण्य करने) के लिए आवश्यक हैं।

सतत विकास और प्रबंधन में एमबीए (एमबीए–एसडीएम) कार्यक्रम प्रबंधन उत्कृष्टता को सातत्यता अनिवार्यताओं के साथ एकीकृत करने के विद्यापीठ के दृष्टिकोण का प्रतीक है। इसका विशेष पाठ्यक्रम, जिसमें मूलभूत, ब्रिज और उन्नत पाठ्यचर्या सम्मिलित हैं, विद्यार्थियों को व्यावसायिक नैतिकता, पर्यावरणीय प्रबंधन और स्थिरता के सामाजिक और आर्थिक आयामों की समग्र समझ प्रदान करता है।

इस के आधारभूत पाठ्यक्रम प्रबंधकीय योग्यता विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जिसमें संगठनात्मक व्यवहार और मानव संसाधन प्रबंधन, मात्रात्मक विधियाँ, मैक्रो- और माइक्रोइकॉनॉमिक्स, सातत्यता प्रबंधन के सिद्धांत और व्यवसाय कानून जैसे विषय शामिल हैं।ब्रिज-स्तरीय पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को वैचारिक शिक्षा से व्यावहारिक व्यावसायिक ढाँचे में संक्रमण में मदद करते हैं।

ये पाठ्यक्रम व्यवसाय रणनीति और नीति, सतत विपणन रणनीतियों, व्यावसायिक नैतिकता और कॉर्पोरेट प्रशासन, और सीएसआर एवं सामाजिक उद्यमिता जैसे पाठ्यक्रमों के माध्यम से व्यापक सातत्यता आयामों को पेश करते हैं। व्यावसायिक संचार पर पाठ्यक्रम आलोचनात्मक सोच, अनुसंधान अभिव्यक्ति, प्रबंधकीय संचार और प्रेरक तर्क कौशल को और बढ़ाते हैं।

ग्रीष्मकालीन इंटर्नशिप के बाद, विद्यार्थी अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, वित्त, सातत्यता रिपोर्टिंग और ईएसजी ढांचे पर जोर देने वाले विशेष और व्यावहारिक पाठ्यक्रमों में आगे बढ़ते हैं। नवीन नवीकरणीय संसाधन, एकीकृत जल संसाधन प्रबंधन, कृषि एवं विकास, सतत आजीविका, जलवायु परिवर्तन एवं विकास, तथा सतत शहरीकरण एवं विकास जैसे वैकल्पिक तत्व पाठ्यक्रम की सुदृढ़ता और प्रायोगिकता को दर्शाते हैं। सातत्यता, व्यवसाय और नीति अंतर्संबंधों की साक्ष्य-आधारित समझ सुनिश्चित करने के लिए, विद्यार्थी कॉर्पोरेट अनुभव या शोध प्रबंध परियोजना के माध्यम से अनुप्रयुक्त अनुसंधान करते हैं, जिसमें 18 पूर्ण शैक्षणिक क्रेडिट शामिल होते हैं।

यह विद्यापीठ शिक्षाविदों और पेशेवरों के एक विशिष्ट समूह पर आधारित है, जिसमें विविध क्षेत्रों में विशेषज्ञता रखने वाले अंतर्राष्ट्रीय संकाय भी सम्मिलित हैं।इस प्रकार, विशेष पाठ्यक्रम और बहुसांस्कृतिक संकाय निकाय उच्च स्तर की शैक्षणिक सहभागिता और व्यावसायिक मार्गदर्शन को बढ़ावा देता है, तथा स्नातकों को उभरती वैश्विक अर्थव्यवस्था में जिम्मेदार नेतृत्व बनने के लिए तैयार करता है।

शैक्षणिक वर्ष के दौरान, भारत और विदेशों के कई प्रतिष्ठित विद्वानों और चिकित्सकों ने विद्यापीठ के शैक्षणिक और अनुभवात्मक शिक्षण वातावरण में योगदान दिया। अंतर्राष्ट्रीय विजिटिंग फैकल्टी में प्रोफेसर अंबिका जुत्शी (ऑस्ट्रेलियाई कैथोलिक विश्वविद्यालय, ऑस्ट्रेलिया), प्रोफेसर सीज़र मारोला (हार्वर्ड विश्वविद्यालय की सातत्यता के लिए सलाहकार समिति), डॉ. श्रीरंगन राजगोपाल (सीईओ, यूमोबी सॉल्यूशंस, यूएसए), डॉ. अभिषेक कुमार (साउथेम्प्टन विश्वविद्यालय, यूके), प्रोफेसर मौलौद मदौल (ईएसएसईसी पेरिस) और डॉ. ग्राहम शेरबुट (निदेशक, सोचा एलएलसी, यूएसएआईडी, जाम्बिया) शामिल थे। उनकी गतिविधियों ने पाठ्यक्रम को सातत्यता, शासन और नवाचार पर विविध वैश्विक दृष्टिकोणों से समृद्ध किया।

यूएन जीसीएनआई के सागर केंद्र (आईएचसी, नई दिल्ली) के उद्घाटन में एमबीए छात्र समूह

प्रोफेसर सीज़र मरोला (हार्वर्ड यूनिवर्सिटी की संधारणीयता सलाहकार समिति), डॉ. श्रीरंगन राजगोपाल (सीईओ, यूमोबी सॉल्यूशंस, यूएसए), डॉ. अभिषेक कुमार (साउथेम्प्टन विश्वविद्यालय, यूके), प्रोफेसर मौलौद माडौल (ईएसएसईसी पेरिस), और डॉ. ग्राहम शेरबट (निदेशक, सोचा एलएलसी, यूएसाईड, जाम्बिया) सहित प्रतिष्ठित वैश्विक शिक्षाविदों और पेशेवरों के जुड़ावों ने संधारणीयता, शासन और नवाचार पर विविध वैश्विक दृष्टिकोणों के साथ पाठ्यक्रम को समृद्ध किया।

भारतीय विजिटिंग फैकल्टी में प्रोफेसर मृणालिनी साहा (आईआईएमटी, गाजियाबाद), प्रोफेसर आनंदी पांडे (महिंद्रा विश्वविद्यालय), डॉ. अघिला शशिधरन (जिंदल ग्लोबल बिजनेस), प्रोफेसर रविंदर कुमार (जमिया मिलिया इस्लामिया), डॉ. गोपाल सारंगी (टेरी एसएएस), डॉ. सुनील कुमार (दिल्ली विश्वविद्यालय), प्रोफेसर आशीष माथुर (हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय) और सुश्री जयति तलपात्रा (एमडीआई और टेरी एसएएस) शामिल थे। उनके कक्षा शिक्षण और व्यावहारिक सत्रों ने विद्यार्थियों को सतत विकास और प्रबंधन अभ्यास के विभिन्न आयामों में व्यावहारिक अंतर्दृष्टि प्रदान की।'

इसके अलावा, डॉ. प्रजल प्रधान (यूनिवर्सिटी ऑफ ग्रोनिंगन), प्रोफेसर सत परसहर (यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया), डॉ. सुगंधा श्रीवास्तव (ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी), डॉ. रोहित शर्मा (डिजिटल ग्रीन) और सुश्री सिमरन सिन्हा (ग्रीन हाइड्रोजन ऑर्गनाइज़ेशन स्विट्जरलैंड) उन सम्मानित विशेषज्ञों और शोधकर्ताओं में शामिल थे, जिन्होंने विविध सातत्यता-संबंधी विषयों पर अतिथि व्याख्यान दिए। इन सत्रों ने वैश्विक सातत्यता पहलों और सर्वोत्तम प्रथाओं के बारे में बहुमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान की, तथा कक्षा में सीखने को वास्तविक दुनिया के अनुप्रयोगों के साथ प्रभावी ढंग से जोड़ा।

हाल के शैक्षणिक वर्षों की ग्रीष्मकालीन इंटर्नशिप और कॉर्पोरेट अनुभव परियोजनाएँ 2020 में एमबीए–एसडीएम कार्यक्रम के प्रारम्भ के बाद से नालंदा विश्वविद्यालय द्वारा स्थापित अद्वितीय स्थान का उदाहरण प्रस्तुत करती हैं।

बैच 2024–26 के विद्यार्थियों ने संयुक्त राष्ट्र ग्लोबल कॉम्पैक्ट नेटवर्क इंडिया, भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (एसआईडीबीआई), राष्ट्रीय ताप विद्युत निगम (एनटीपीसी), इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (आईओसीएल), और मैंगनीज अयस्क (भारत) लिमिटेड (अनुलग्नक) जैसे अग्रणी संगठनों के साथ सफलतापूर्वक इंटर्नशिप पूरी की।

इस बीच, कॉर्पोरेट इंटर्नशिप कर रहे बैच 2023–25 के विद्यार्थियों ने इंडियन विद्यापीठ ऑफ बिजनेस, इंडीक्यूब बैंगलोर, सामवित विकास प्राइवेट लिमिटेड और अन्य विकासात्मक संगठनों (अनुलग्नक II) सहित प्रतिष्ठित संस्थानों के साथ काम किया। इन कार्यक्रमों से विद्यार्थियों को विभिन्न उद्योगों में सतत विकास का प्रायोगिक अनुभव प्राप्त हुआ, जिससे उत्तरदायित्व पूर्ण नेतृत्व के बारे में उनकी समझ गहरी हुई।

शैक्षणिक वर्ष 2024–25 के दौरान, विद्यापीठ ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज (एसएमएस) ने उल्लेखनीय अनुसंधान सहभागिता और अंतःविषय विद्यार्थीवृत्ति का प्रदर्शन किया। संकाय सदस्यों ने सातत्यता, नीति और विकास के समकालीन मुद्दों पर शोध प्रबंध परियोजनाओं की एक श्रृंखला का मार्गदर्शन किया। डॉ. मुनीर अहमद माग्री ने सातत विकास से आजीविका, जलवायु परिवर्तन इंटरफेस, सार्वजनिक नीति, पर्यावरण व्यवहार और सामाजिक सुरक्षा में अपनी बहुमुखी विशेषज्ञता को दर्शाते हुए कई शोध प्रबंधों का पर्यवेक्षण किया। उनके मार्गदर्शन में परियोजनाओं में सामाजिक सुरक्षा पहल, उपयुक्त उपभोग पैटर्न और व्यावसायिक रणनीतियों में पारिस्थितिकी प्रणालियों के एकीकरण जैसे प्रमुख विषयों पर चर्चा की गई। डॉ. आनंद कुमार ने सातत्यता, पर्यावरणीय मुद्दों, जल संसाधन प्रबंधन और जलवायु नीति में अपनी विशेषज्ञता के अनुरूप शोध प्रबंध अनुसंधान का मार्गदर्शन किया। उनकी देखरेख में किए गए शोध में एक मजबूत दृष्टिकोण अपनाया गया, जिसमें म्यांमार, भूटान, नेपाल, श्रीलंका, कंबोडिया और भारत सहित विविध भौगोलिक क्षेत्र शामिल थे।

'हरित हाइड्रोजन के क्षेत्र में प्रगति' पर संगोष्ठी के दौरान एमबीए के विद्यार्थी

इस वर्ष इस विद्यापीठ द्वारा अनुसंधान में भी महत्वपूर्ण योगदान देखने को मिला। स्प्रिंगर और एल्सेवियर जैसी अग्रणी अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में आठ पियर-रिव्यूड प्रकाशन प्रकाशित हुए। अनुसंधान का यह बढ़ता हुआ स्वरुप सातत्यता और विकास के नवीन सोपानों पर विद्यापीठ के उभरते नेतृत्व को रेखांकित करता है।

इस अनुसंधान के अंतर्गत जलवायु परिवर्तन अनुकूलन, स्थाई आजीविका, जल संसाधन प्रबंधन, कृषि वानिकी, व्यापार रणनीति और विकास अर्थशास्त्र जैसे विषय शामिल हैं।

संकाय प्रकाशन और अन्य शैक्षणिक योगदान

प्रकाशन

- चेट्री, एल., और मुनीर अहमद मैग्री. "**बड़ी इलायची (अमोमम सबुलैटम रॉक्सब.) का एकीकृत मूल्य श्रृंखला विश्लेषणः भूटान का एक मामला.**" वन एवं समाज जर्नल. प्रकाशन हेतु स्वीकृत.
- मैग्री, मुनीर अहमद, डेमियन काहिल, जॉन रूक्स और एसए नरूला. 2025. "**क्या सामाजिक-आर्थिक कारक गैर-लकड़ी वन उत्पाद-आधारित आय को प्रभावित करते हैं?**" मानव पारिस्थितिकी 53, संख्या 1: 165–179.
- शर्मा, पी., आनंद कुमार, और जे. शांग. 2025. "**छिद्रयुक्त माध्यम में बायोचार कोलाइड्स के साथ सह-अस्तित्व वाले संदूषकों का परिवहन और प्रतिधारणः एक समीक्षा.**" कुल पर्यावरण इंजीनियरिंग 100021.
- तेवतिया, एस., मुनीर अहमद मैग्री, एसए नरूला, सी. जमीर, और एन. अनवर. 2025. "**राजस्थान में खेती की स्थिरता में किसान उत्पादक संगठनों की सामाजिक-आर्थिक भूमिका.**" इंडियन जर्नल ऑफ इकोनॉमिक्स एंड डेवलपमेंट 21, संख्या 2: 243–256.
- वर्मा, ए., आनंद कुमार, पी. शर्मा, ए. शर्मा, आर.के. सिन्हा, और एस. फरत्याल. 2025. "**मध्य गंगा के मैदानों में भूजल की गुणवत्ता पर हाइड्रोजियोकेमिकल प्रक्रियाएं और मानवजनित प्रभाव.**" जर्नल ऑफ़ हैज़र्डस मैटेरियल्स एडवांस 100818.
- वांगमो, के., आनंद कुमार, एसए नरूला, और मुनीर अहमद मैग्री. 2025. "**जलवायु जोखिम और आजीविका स्थिरता के लिए प्रकृति-आधारित समाधान के रूप में कृषि वानिकी प्रणालियाँः भूटान से एक केस स्टडी.**" कृषि वानिकी प्रणालियाँ 99, संख्या 6: 1–26.
- वांगमो, के., और मुनीर अहमद मैग्री. 2024. "**भूटान की वन संरक्षण नीतियों का मूल्यांकनः लिंग संबंधी विचारों के प्रति संवेदनशीलता और जवाबदेही.**" संरक्षण 1, संख्या 1: 10.

सम्मेलन प्रस्तुतियाँ और आमंत्रित वार्ताएँ

- मैग्री, मुनीर ए. 2025. फ्लेयर 2025 **(वन और आजीविकाः मूल्यांकन, अनुसंधान और सहभागिता)**, नोट्रे डेम विश्वविद्यालय, लीमा, पेरू में वक्ता के रूप में आमंत्रित.
- कुमार, आनंद. 2025. काठमांडू विश्वविद्यालय, पॉट्सडैम जलवायु प्रभाव अनुसंधान संस्थान और एआईटी थाईलैंड द्वारा आयोजित **फॉरहिमएसडीजी कार्यशाला** में प्रतिभागी.
- छेत्री, आर., आनंद कुमार, और मुनीर ए. मैग्री. 2025. "**थिम्पू, भूटान में जलवायु परिवर्तन के प्रभावों और अनुकूली उपायों पर लिंग धारणा.**" बर्लिन में जलवायु परिवर्तन पर 5वें वैश्विक सम्मेलन में प्रस्तुत किया गया पेपर.
- आंग, के.टी., आनंद कुमार, और मुनीर ए. मैग्री. 2025. "**म्यांमार में जलवायु प्रभाव चालकों पर जलवायु परिवर्तन नीतियों की प्रभावशीलता.**" जलवायु परिवर्तन पर दूसरे वैश्विक शिखर सम्मेलन, लॉस एंजिल्स में प्रस्तुत किया गया पेपर.
- छेत्री, आर., आनंद कुमार, और मुनीर ए. मैग्री. 2025. "**समावेशी जलवायु लचीलेपन की ओर.**" कोपेनहेगन में जलवायु परिवर्तन और ग्लोबल वार्मिंग पर छठे वैश्विक सम्मेलन में प्रस्तुत किया गया पेपर.

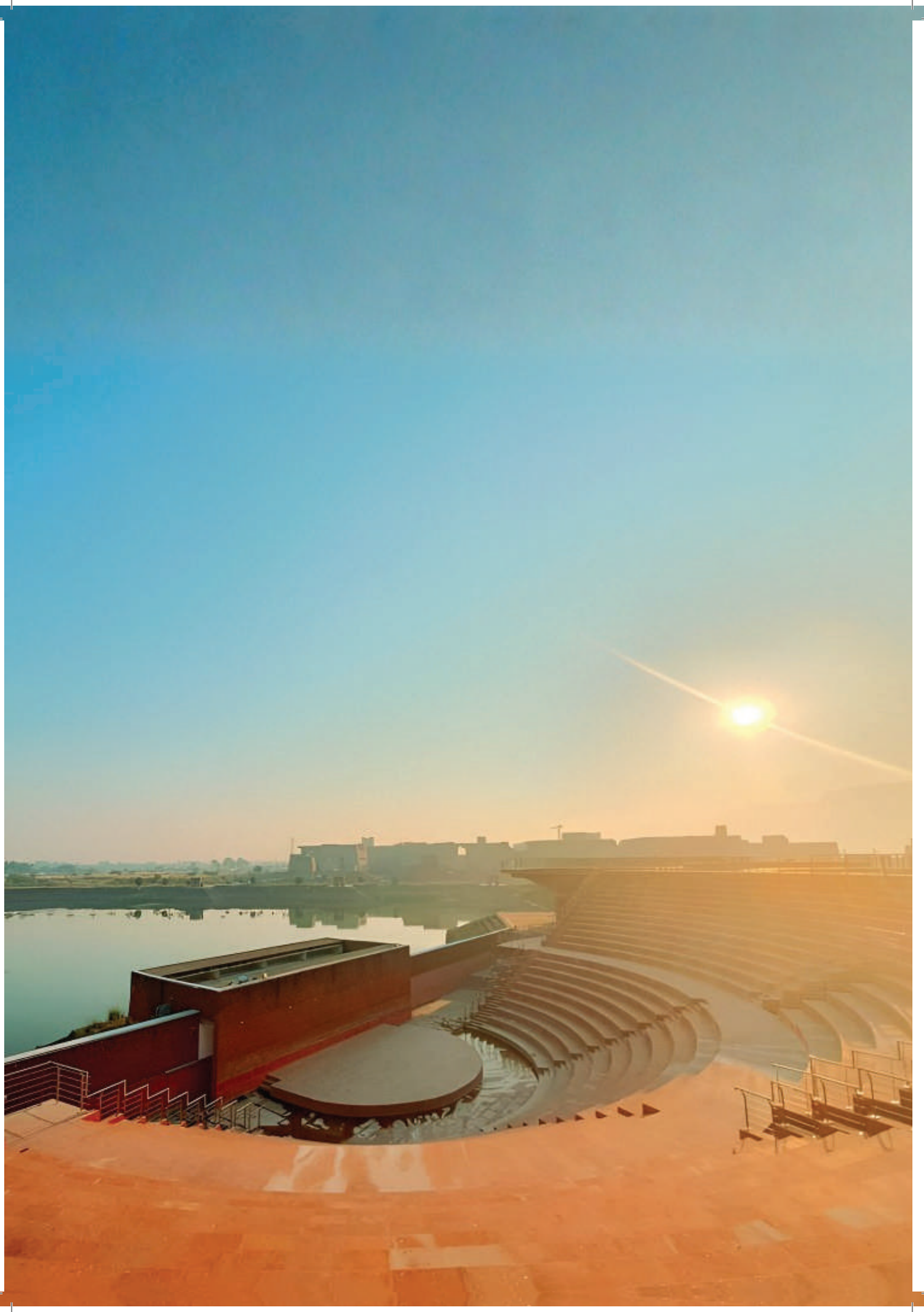

अंतर्राष्ट्रीय संबंध और शांति अध्ययन

वर्तमान परिवर्तनों के दौर में, नालंदा विश्वविद्यालय का अंतर्राष्ट्रीय संबंध और शांति अध्ययन विद्यापीठ (एसआईआरपीएस) वैश्विक परिप्रेक्ष्य को नए आयाम प्रदान कर रहा है। शांति अध्ययन को अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के साथ समेकित करने वाले चुनिंदा वैश्विक संस्थानों में एसआईआरपीएस विशिष्ट स्थान रखता है। यह विषय स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों और पारंपरिक बोध पर केंद्रित अंतःविषय दृष्टिकोण में अग्रणी स्थान रखता है।

अनुसंधान, संवाद और सतत पहल के माध्यम से एसआईआरपीएस के संकाय एवं विद्यार्थी पाश्चात मान्यताओं पर आधारित विचारों को संतुलित और पुनर्परिभाषित करने का प्रयास करते हैं। वे भारत के दर्शन, अर्थशास्त्र, संस्कृति और इतिहास के आलोक में अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की अवधारणाओं एवं व्यवहारों पर पुनर्विचार का आग्रह करते हैं। इनकी विद्वता भारतीय एवं वैश्विक बौद्धिक परंपराओं से प्रेरित है, जो नालंदा की सभ्यतागत आत्मा को साकार करती है, जिसमें ज्ञान और शांति का अर्जन एक महत्त्वपूर्ण लक्ष्य है।

अंतर्राष्ट्रीय संबंध और शांति अध्ययन

इस विद्यापीठ का विशिष्ट दृष्टिकोण इस विश्वास पर आधारित है कि ज्ञान प्रणालियों को प्रतिस्पर्धा करने की आवश्यकता नही है, वरन् वे सह-अस्तित्व में रह सकती हैं और एक-दूसरे को समृद्ध कर सकती हैं। विद्यार्थी यहाँ बैरी बुज़ान और केनेथ वाल्ट्ज जैसे पश्चिमी विचारकों के साथ-साथ के. सुब्रह्मण्यम और मोहम्मद अयूब जैसे भारतीय एवं एशियाई विद्वानों के दृष्टिकोणों से जुड़ते हैं। इस प्रकार, वे शक्ति, संस्कृति और शांति को समझने के लिए विभिन्न विचारधाराओं का सहारा लेते हैं। पाठ्यक्रम में भारतीय और पश्चिमी विचारों का मिश्रण किया गया है, जिससे वैश्विक मामलों की संतुलित और समावेशी समझ विकसित होती है। इसमें अंतर्राष्ट्रीय संबंध सिद्धांत, राष्ट्रीय सुरक्षा और भूराजनीति, संस्कृति और वैश्विक राजनीति से लेकर भारत का सांस्कृतिक इतिहास, धर्म और शांति, मार्गो की राजनीति, समकालीन यूरोप, खुफिया और अंतर्राष्ट्रीय संबंध, रणनीतिक विचार, अंतर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र, अंतर्राष्ट्रीय कानून, भारत का समुद्री इतिहास, विश्व इतिहास, शांति अध्ययन की प्रमुख अवधारणाएं और अनुसंधान पद्धति सम्मिलित हैं।

महाभारत और अर्थशास्त्र जैसे शास्त्रीय भारतीय ग्रंथों का अध्ययन यथार्थवाद, उदारवाद और रचनावाद के आधुनिक सिद्धांतों के साथ किया जाता है। यह समानांतर अध्ययन इस सिद्धांत को पुष्ट करता है कि भारतीय रणनीतिक और दार्शनिक परंपराएँ वैश्विक विमर्श से अलग नही हैं, अपितु उसका एक अनिवार्य हिस्सा हैं। इस तरह, एसआईआरपीएस सभ्यताओं का मिलन स्थल बन जाता है, जहाँ पश्चिमी सिद्धांतों का अध्ययन भारतीय सिद्धांतों के साथ संवाद में किया जाता है, जिससे बौद्धिक खुलेपन और सांस्कृतिक आत्मविश्वास दोनों को बढ़ावा मिलता है।

एसआईआरपीएस में मास्टर कार्यक्रम एक विशिष्ट अंतःविषयक पेशकश है जो अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को शांति अध्ययन के साथ एकीकृत करता है, तथा विद्यार्थियों को रणनीतिक और नैतिक दोनों दृष्टिकोणों से वैश्विक मुद्दों को संबोधित करने के लिए तैयार करता है।

पाठ्यक्रम में भूराजनीति, शांति स्थापना, संस्कृति, पर्यावरण और अंतर्राष्ट्रीय शासन को शामिल किया गया है, तथा विद्वानों को विविध क्षेत्रों और संदर्भो में आलोचनात्मक ढंग से सोचने के लिए प्रशिक्षण दिया गया है।

इस विद्यापीठ में अनुसंधान और शैक्षणिक गतिविधियाँ एक अंतर्विषयक सिद्धांत के साथ संचालित होती हैं जो रणनीतिक, सांस्कृतिक और सभ्यतागत दृष्टिकोण को एकीकृत करती हैं। का कार्य भारत की विदेश नीति, रणनीतिक विचार, समुद्री सुरक्षा और बंगाल की खाड़ी क्षेत्र—जैसे आपस में गहराई से जुड़े क्षेत्रों के अध्ययन पर केंद्रित है जो नालंदा के ऐतिहासिक लोकाचार को प्रतिबिंबित करते हैं। संकाय और विद्यार्थी कूटनीति, गुटनिरपेक्षता और सह-अस्तित्व के सभ्यतागत विचारों का उपयोग करते हुए भारत की उभरती विदेश नीति और ग्लोबल साउथ तथा प्रमुख शक्तियों के साथ उसके संबंधों का अध्ययन करते हैं। एसआईआरपीएस में रणनीतिक विचार का अध्ययन कौटिल्य के अर्थशास्त्र और महाभारत जैसी शास्त्रीय भारतीय परंपराओं को यथार्थवाद, उदारवाद और रचनावाद के पश्चिमी सिद्धांतों के साथ संवाद में लाता है। यह संवादात्मक दृष्टिकोण वैश्विक रणनीति और शासन की सूक्ष्म समझ को सक्षम बनाता है जो नैतिकता पर आधारित रहते हुए व्यावहारिकता को महत्व देता है। समुद्री सुरक्षा और भारत की समुद्री दृष्टि पर समानांतर शोध देश की प्राचीन समुद्री विरासत, हिंद महासागर और हिंद-प्रशांत क्षेत्रों की समकालीन गतिशीलता, तथा सहयोग, कनेक्टिविटी और लचीलेपन के क्षेत्र के रूप में बंगाल की खाड़ी के रणनीतिक महत्व की पड़ताल करता है।

इन प्रमुख क्षेत्रों के साथ-साथ, एसआईआरपीएस में अनुसंधान का विस्तार उभरते और अंतर-विषयक क्षेत्रों में भी हुआ है, जिनमें साइबर सुरक्षा, आतंकवाद और डार्क-वेब नेटवर्क, जलवायु प्रवास और डिजिटल शासन समाहित शामिल हैं। कई परियोजनाएं धर्म, शांति और कूटनीति के अंतर्संबंध की जांच करती हैं, जिनमें बौद्ध परंपराओं और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों पर भारत के आध्यात्मिक प्रभावों पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

एसआईपीएस के विद्यार्थी लेफ्टिनेंट जनरल (डॉ.) पी.सी. नायर, पीवीएसएम, एवीएसएम, वाईएसएम (सेवानिवृत्त) के साथ।

अन्य परियोजनाएँ सांस्कृतिक और समुद्री कूटनीति, समुद्री मार्गों के रणनीतिक महत्व और बदलते एशियाई सुरक्षा परिदृश्य के भीतर भारत–चीन संबंधों से जुड़ी हैं।

शैक्षणिक वर्ष के दौरान प्रकाशनों में भारत की विदेश नीति, क्षेत्रीय सहयोग, समुद्री शासन और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में संस्कृति की भूमिका जैसे विषयों पर चर्चा की गई। सामूहिक रूप से, ये पहल एसआईआरपीएस की उस विद्वत्ता के उत्पादन के प्रति प्रतिबद्धता को प्रतिबिंबित करती हैं जो स्वदेशी और वैश्विक विचारों के बीच सेतु का काम करती है तथा सभ्यतागत ज्ञान को समकालीन विश्व के लिए कार्यान्वयन योग्य अंतर्दृष्टि में परिवर्तित करती है।

विद्यापीठ राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के साथ शैक्षणिक संबंधों को मजबूत करने का कार्य भी कर रहा है। संकाय और विद्यार्थी भारतीय विश्व मामलों की परिषद (आईसीडब्ल्यूए), विकासशील देशों के लिए अनुसंधान और सूचना प्रणाली (आरआईएस), संयुक्त युद्ध अध्ययन केंद्र (सेनजॉज़), प्रायद्वीप फाउंडेशन और इंडोनेशिया की पीपुल्स कंसल्टेटिव असेंबली (एमपीआर आरआई) के साथ सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं। विदेश मंत्रालय, भारत में राजनयिक मिशन, भारतीय सशस्त्र बल (सेना, नौसेना, वायु सेना), दक्षिण एशियाई विश्वविद्यालय, एस राजरत्नम ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज (आरएसआईएस), राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद सचिवालय, एशियाई विकास बैंक, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय आदि जैसे संस्थानों के विजिटिंग प्रोफेसर, बाहर से आमंत्रित विद्वान ने पाठ्यक्रम और व्याख्यान श्रृंखला में योगदान दिया।

सहयोगात्मक गतिविधियों —जैसे कि सिनर्जिया फाउंडेशन के साथ आयोजित बिम्सटेक और खाड़ी पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन— ने बंगाल की खाड़ी क्षेत्र में अनुसंधान संबंधों को और गहरा किया।

सिनर्जिया फाउंडेशन के साथ आयोजित बिम्सटेक और बंगाल की खाड़ी पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन जैसे सहयोगी जुड़ावों ने बंगाल की खाड़ी क्षेत्र में अनुसंधान संबंधों को और अधिक गहरा किया।

इस विद्यापीठ के विद्यार्थियों ने क्राइस्ट यूनिवर्सिटी और यूएस के सहयोग से रायसिना डायलॉग 2025और यूएस–इंडिया कोऑपरेशन सर्कल (यूएसआईसीसी) पैनल चर्चा सहित प्रमुख अंतर्राष्ट्रीयमंचों पर नालंदा विश्वविद्यालय का भी प्रतिनिधित्व किया।

विद्यापीठ ने सक्रिय शैक्षणिक और संस्थागत साझेदारियाँ स्थापित की हैं जो इसके अनुसंधान पारिस्थितिकी तंत्र को समृद्ध करती हैं और अनुभवात्मक शिक्षा को बढ़ाती हैं। नई दिल्ली में आईसीडब्ल्यूए और आरआईएस के साथ सहयोग विद्यार्थी इंटर्नशिप, नीति अनुसंधान और राष्ट्रीय सम्मेलनों में भागीदारी का समर्थन करता है। सीईएनजेओडब्ल्यूएस और सीएलएडब्ल्यूएसके साथ जुड़ाव ने रक्षा और रणनीतिक अध्ययन को उन्नत किया है, जबकि पेनिनसुला फाउंडेशन, चेन्नई के साथ साझेदारी ने नीति विश्लेषण और क्षेत्र अनुसंधान के लिए मूल्यवान अनुभव प्रदान किया है।

एसआईपीएस के विद्यार्थी एक संवाद के दौरान

नालंदा विश्वविद्यालय में बंगाल की खाड़ी अध्ययन केंद्र समुद्री और क्षेत्रीय सहयोग अनुसंधान में एक प्रमुख भागीदार के रूप में कार्यरत है, और क्राइस्ट यूनिवर्सिटी में पूर्वी एशियाई अध्ययन केंद्र अनुसंधान और शैक्षणिक प्रशिक्षण में आदान-प्रदान की सुविधा प्रदान करता है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर, इंडोनेशिया की पीपुल्स कंसल्टेटिव असेंबली (एमपीआर आरआई) के साथ सहयोग विद्यार्थियों को विधायी और राजनयिक मामलों में प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करने में सक्षम बनाता है।

ये संबंध सामूहिक रूप से सहयोग के एक जीवंत नेटवर्क को बढ़ावा देते हैं, तथा विद्यार्थियोंऔर विद्वानों को अंतर्राष्ट्रीय संबंधों और रणनीतिक विचारों के विशेषज्ञों के साथ सीधे जुड़ने का अवसर प्रदान करते हैं।

शैक्षणिक वर्ष के दौरान विशिष्ट व्याख्यानों और चर्चा-सत्रों की एक श्रृंखला ने एसआईआरपीएस के बौद्धिक वातावरण को समृद्ध किया और विद्यार्थियों को विविध वैश्विक और क्षेत्रीय दृष्टिकोणों से अवगत कराया। प्रोफेसर संजय चतुर्वेदी ने "गैर-पश्चिमी वैश्विक आईआर और भूराजनीति की खोज" विषय पर एक तीक्ष्ण व्याख्यान दिया, जिसमें उन्होंने यूरोकेन्द्रित प्रतिमानों से परे वैश्विक संबंधों की पुनर्कल्पना का आग्रह किया। लेफ्टिनेंट जनरल (डॉ.) पीसी नायर, पीवीएसएम, एवीएसएम, वाईएसएम (सेवानिवृत्त) ने भारत में नार्को-आतंकवाद पर परिचालन और रणनीतिक अंतर्दृष्टि साझा किया।

इसी तरह प्रोफेसर प्रबीर डे (आरआईएस) ने नीतिगत सारांश और समुद्री आर्थिक ढांचे के व्यावहारिक पहलुओं के माध्यम से विद्यार्थियोंका मार्गदर्शन किया। कर्नल (डॉ.) तेजिंदर हुंदल, वीएसएम ने उभरते हिंद-प्रशांत संदर्भ में भारत–ऑस्ट्रेलिया रणनीतिक साझेदारी का विश्लेषण प्रस्तुत किया, तथा डॉ. थुटा आंग (मांडले फोरम) ने सही आजीविका (सम्मा आजीव) पर एक वैचारिक नेतृत्व के रूप में भारत की भूमिका पर चर्चा की।

डॉ. सिरिसुंडा (थाईलैंड) ने ब्ल्यू-इकोनोमी को क्षेत्रीय स्थिरता से जोड़ा, और अन्य विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित डॉ. विक्रम संपत, प्रोफेसर अरविंद पनागरिया और डॉ. वसुधा पांडे के व्याख्यानों में भारत के ऐतिहासिक आख्यानों, शासन मॉडल और पर्यावरणीय परिवर्तनों पर चर्चा की गई। साथ में, इन संलग्नताओं ने संवाद-आधारित शिक्षा और बहु-विषयक और तुलनात्मक दृष्टिकोण के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीयसंबंधों की व्यापक समझ विकसित करने के लिए की प्रतिबद्धता को मजबूत किया।

शैक्षणिक वर्ष के दौरान, एसआईआरपीएस विद्यार्थियों ने शैक्षणिक, नीतिगत और सांस्कृतिक पहलों की एक विस्तृत श्रृंखला में सक्रिय रूप से भाग लिया, जिससे कक्षा से परे भी शिक्षा का विस्तार हुआ।उन्होंने "एशिया में संघर्ष और समाधान की स्थिति" पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया, शांति और अंतर-सांस्कृतिक संवाद पर केंद्रित एसआईआरपीएस रीडिंग सर्किल सत्रों की मेजबानी की।

इस विद्यापीठ में स्नातकोत्तर कार्यक्रम एक विशिष्ट अंत:विषयक पाठ्यक्रम है जो अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को शांति अध्ययन के साथ एकीकृत करता है और विद्यार्थियों को रणनीतिक और नैतिक दोनों दृष्टिकोणों से वैश्विक मुद्दों पर विचार करने के लिए तैयार करता है। एसआईपीएस अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में नवोन्मेषी और सभ्यतागत रूप से निहित अनुसंधान के केंद्र के रूप में निरंतर विकसित हो रहा है। भारतीय और पश्चिमी रणनीतिक विचार, बंगाल की खाड़ी के अध्ययन और ग्लोबल साउथ सहयोग पर इसका ध्यान नालंदा की संवाद और समावेशिता की विरासत को दर्शाता है।

अंतर्राष्ट्रीय संबंध और शांति अध्ययन विद्यापीठ का मास्टर कार्यक्रम एक विशिष्ट अंतर्विषयक कार्यक्रम है जो अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को शांति अध्ययन के साथ एकीकृत करता है, तथा विद्यार्थियों को वैश्विक मुद्दों को रणनीतिक और नैतिक दोनों दृष्टिकोणों से संबोधित करने के लिए तैयार करता है।

अंतर्राष्ट्रीय संबंध और शांति अध्ययन विद्यापीठ अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में अभिनव और सभ्यतागत रूप से मूल अनुसंधान के लिए एक केंद्र के रूप में विकसित होना जारी है। भारतीय और पश्चिमी रणनीतिक विचारों, बंगाल की खाड़ी अध्ययन और ग्लोबल साउथ सहयोग पर इसका ध्यान नालंदा की संवाद और समावेशन की विरासत को दर्शाता है।

इस विद्यापीठ ने अनुसंधान पद्धति प्रदर्शनी और “युगों से भारत के अंतर्राष्ट्रीय संबंध” पर हैकथॉन शैली के समूह चर्चा में भाग लिया। प्रमुख राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर उनके प्रतिनिधित्व ने विद्यापीठ की बढ़ती उपलब्धियों को प्रदर्शित किया —सबसे उल्लेखनीय रूप से रायसिना डायलॉग 2025 में, जहां विद्यार्थियों ने वैश्विक नेताओं और नीति विशेषज्ञों के साथ बातचीत की। विद्यार्थियों ने इंडियन ऑफ पब्लिक पॉलिसी में एसएएनएसएडी-25 पॉलिसी पार्लियामेंट, आईएमईसी कॉन्क्लेव 2025 और इंडिया हैबिटेट सेंटर में आयोजित सम्मेलन में भी भाग लिया। इसके अतिरिक्त, उन्होंने यूएसआईसीसी पैनल, राष्ट्रीय सेमिनारों और विश्वविद्यालय हैकथॉन में अपनी भागीदारी के माध्यम से नीति और अकादमिक चर्चा में योगदान दिया।

शिक्षा के अलावा, विद्यार्थी सांस्कृतिक एवं फिल्म क्लब, विश्वविद्यालय एक्सपेडीशन क्लब, बंगाल की खाड़ी अध्ययन केंद्र के साथ जुड़ाव और अंतर्राष्ट्रीय शांति दिवस जैसे समारोहों के माध्यम से परिसर जीवन में सक्रिय थे।

सामूहिक रूप से, ये गतिविधियाँ अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के वैश्विक रूप से जागरूक, सामाजिक रूप से सजग और सक्रिय रूप से संलग्न विद्वानों को विकसित करने पर के ज़ोर को दर्शाती हैं।

एसआईआरपीएस विद्यार्थियों ने प्रमुख राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के साथ इंटर्नशिप हासिल की, तथा नीति अनुसंधान, रणनीतिक विश्लेषण और क्षेत्रीय सहयोग में व्यावहारिक अनुभव प्राप्त किया।

आईसीडब्ल्यूए, नई दिल्ली में चंदन कन्नम, कुशुबू कुमारी यादव, प्रीति कुमारी, हर्षिता बंगा और स्वेतांग चौबे सहित विद्यार्थियों ने कई प्रमुख कार्यक्रमों में भाग लिया। इनमें पैनल चर्चा "ऑपरेशन सिंदूर: एक नई कहानी शुरू करना?" और यूनाइटेड सर्विस इंस्टीट्यूशन ऑफ इंडिया के सहयोग से आयोजित रणनीतिक गेमिंग अभ्यास "नीति कौशल 2025" शामिल थे। इसके अतिरिक्त, विद्यार्थियों ने चक्र फाउंडेशन के साथ आयोजित "अंतर्राष्ट्रीय संबंध अनुसंधान के लिए डिजिटल टूल्स (एआई और जीआईएस सहित) का लाभ उठाना" पर दो दिवसीय कार्यशाला में भी भाग लिया।

आरआईएस में प्रशिक्षु ऋचा शर्मा, आयुषी पांडे, अनंत चक्रवर्ती, नंदीगल्ला करण कुमार और फहद ज़ेया ने ताज पैलेस, नई दिल्ली में अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन “ग्लोबल साउथ और त्रिकोणीय सहयोग: उभरते पहलू” के आयोजन और रिपोर्टर टीमों में काम किया और शहरी अड्डा सम्मेलन में योगदान दिया। नई दिल्ली स्थित सीईएनजेओडब्ल्यूएस में इंटर्नशिप कर रही मोनिका कुमारी ने सीईएनजेओडब्ल्यूएस के सहयोग से सीआईएससी के वैज्ञानिक सलाहकार द्वारा आयोजित महत्वपूर्ण घटकों (यूएवी और सी - यूएएस) के स्वदेशीकरण पर एक सेमिनार के लिए समारोह संचालक के रूप में कार्य किया।

श्रेया रेड्डी, हिमांशी गुप्ता और आरभी भट्ट ने नीति विश्लेषण और रणनीतिक मामलों पर पेनिनसुला फाउंडेशन में इंटर्नशिप की; श्रीनवंती नायक और अमन कुमार ने क्राइस्ट यूनिवर्सिटी, बेंगलुरु में सेंटर फॉर ईस्ट एशियन स्टडीज (सीईएएस) में इंटर्नशिप की; और सिद्धार्थ एस ने सेंटर फॉर लैंड वारफेयर स्टडीज (सीएलएडब्ल्यूएस), नई दिल्ली में रक्षा अनुसंधान में योगदान दिया।

बंगाल की खाड़ी अध्ययन केंद्र (सीबीएस) में अनुष्का अंत्रोलिकर और समृद्धि खंडेलवाल ने समुद्री और क्षेत्रीय सहयोग पर शोध किया, जबकि संघर्ष प्रबंधन संस्थान में क्षितिज मौर्य की इंटर्नशिप आंतरिक और सीमा पार सुरक्षा गतिशीलता पर केंद्रित थी।

अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में नवीन और सभ्यतागत अनुसंधान के केंद्र के रूप में विकसित हो रहा है। भारतीय और पश्चिमी रणनीतिक विचार, बंगाल की खाड़ी अध्ययन और ग्लोबल साउथ सहयोग पर इसका ध्यान नालंदा की संवाद और समावेशिता की विरासत को दर्शाता है।

आदर्श वाक्य, 'आ नो भद्राः क्रतवो यंतु विश्वतः' ("सभी दिशाओं से महान विचार हमारे पास आएं") से प्रेरित होकर, एसआईआरपीएस सहयोगात्मक अनुसंधान, अंतर्राष्ट्रीय साझेदारी और ज्ञान प्रसार के माध्यम से अपनी पहुंच का विस्तार करने की आकांक्षा रखता है, जो विरासत को समकालीन विद्वत्ता के साथ जोड़ता है।

▲ एक संगोष्ठी के दौरान एसआईपीएस के विद्यार्थी, लेफ्टिनेंट जनरल अनिंद्य सेनगुप्ता, (केंद्र में) और एयर मार्शल एम. माथेस्वरन (सेवानिवृत्त) (बाएँ में) के साथ।

त्रि मलिंडा और अल्मा फ़ूजी अनुग्राह ने इंडोनेशिया गणराज्य की पीपुल्स कंसल्टेटिव असेंबली (एमपीआर आरआई) के सचिवालय जनरल के साथ इंटर्नशिप की और विधायी और राजनयिक अनुसंधान में योगदान दिया।

भारत की प्राचीन अंतर्दृष्टि को आधुनिक शैक्षणिक दृढ़ता के साथ जोड़कर, एसआईआरपीएस ऐसे विद्वानों का पोषण कर रहा है जो दुनिया को न केवल विश्लेषकों के रूप में बल्कि शांति, समझ और नैतिक नेतृत्व के राजदूत के रूप में देखते हैं।

संकाय प्रकाशन और अन्य शैक्षणिक योगदान

प्रकाशन

- चतुर्वेदी, राजीव आर., और ग्राहम शेरबट. **"भारत – दक्षिण अफ्रीका समुद्री साझेदारी के काम करने के लिए, इसे प्रतीकवाद से परे जाने की जरूरत है."** इंडियन एक्सप्रेस, 2025.

प्रस्तुतियाँ, वार्ताएँ और सम्मेलन

- चतुर्वेदी, राजीव आर. **दक्षिण एशियाई, पश्चिम एशियाई और अफ्रीकी अध्ययन संस्थान, वियतनाम सामाजिक विज्ञान अकादमी और भारतीय दूतावास**, हो ची मिन्ह सिटी, वियतनाम, 2025 द्वारा सह-आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुति.
- चतुर्वेदी, राजीव आर. ट्रान नहान टोंग इंस्टीट्यूट, वियतनाम नेशनल यूनिवर्सिटी, हनोई, 2025 में प्रस्तुति.
- चतुर्वेदी, राजीव आर. **"भारत की उभरती रूपरेखा – अफ्रीका साझेदारी"** भारतीय विश्व मामलों की परिषद (आईसीडब्ल्यूए) और सोमैया विद्याविहार विश्वविद्यालय, मुंबई, 2025 द्वारा सह-आयोजित भारत–अफ्रीका विकास साझेदारी: एक सतत भविष्य की कल्पना, जुड़ाव का विस्तार पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत पेपर.
- चतुर्वेदी, राजीव आर. ने दौत्यम और सोमैया विद्याविहार विश्वविद्यालय, मुंबई, 2025 द्वारा आयोजित युवा आईआर कॉन्क्लेव 2025 में **"भारतीय विदेश नीति की विकसित रूपरेखा"** पर एक सत्र की अध्यक्षता की.
- चतुर्वेदी, राजीव आर. ने विकासशील देशों के लिए अनुसंधान और सूचना प्रणाली (आरआईएस) और आईएसईएएस–यूसुफ इशाक संस्थान, सिंगापुर, 2024 द्वारा आयोजित आसियान–भारत थिंक टैंक नेटवर्क के 8वें गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया. विषय: **"परिवर्तनशील विश्व की यात्रा: आसियान–भारत सहयोग के लिए एजेंडा."**
- चतुर्वेदी, राजीव आर. ने आईटीसी मौर्य, नई दिल्ली में आईएमईसी कॉन्क्लेव 2025 में भाग लिया, जिसे विकासशील देशों के लिए अनुसंधान और सूचना प्रणाली (आरआईएस), सेंटर फॉर इंडिया–यूरोप अंडरस्टैंडिंग (सीआईईयू) और डालबर्ग, 2025 द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया था.

अध्ययन केंद्र और शैक्षणिक सहयोग

बंगाल की खाड़ी (बिम्सटेक) अध्ययन केंद्र

भारत सरकार के सहयोग से स्थापित नालंदा विश्वविद्यालय में बंगाल की खाड़ी अध्ययन केंद्र, बंगाल की खाड़ी क्षेत्र पर अंतःविषय अनुसंधान के लिए समर्पित एक अग्रणी शैक्षणिक मंच के रूप में कार्य करता है. 2018 में माननीय प्रधानमंत्री द्वारा घोषित और 2022 में उद्घाटन किया गया यह केंद्र खाड़ी के सभ्यतागत, सांस्कृतिक, पारिस्थितिक और रणनीतिक आयामों का पता लगाता है। इसके अनुसंधान में इतिहास, समुद्री व्यापार, पर्यावरणीय स्थिरता और क्षेत्रीय सहयोग शामिल हैं। शैक्षिक कार्यक्रमों और सहयोगात्मक पहलों के माध्यम से, सीबीएस सुरक्षा, विकास और पारिस्थितिकी में उभरती चुनौतियों का समाधान करते हुए खाड़ी के वैश्विक महत्व की समझ को बढ़ाने का प्रयास करता है।

सामान्य अभिलेखीय संसाधन केंद्र

सामान्य अभिलेखीय संसाधन केंद्र एक डिजिटल आर्काइव उपक्रम है जो एशिया से संबंधित जानकारी और संसाधनों को संरक्षित और साझा करने के लिए प्रतिबद्ध है। यह केंद्र एशिया के इतिहास, भौतिक संस्कृति, व्यापार नेटवर्क, विरासत, धार्मिक विचारों और प्रथाओं, मौखिक और प्रदर्शनात्मक परंपराओं, तथा सभ्यता और बातचीत के एशियाई नेटवर्क को उजागर करता है। केंद्र का लक्ष्य इन क्षेत्रों की निरंतर खोज के अवसर पैदा करना है। क्षेत्रीय शांति को बढ़ावा देना विश्वविद्यालय के मूलभूत उद्देश्यों में से एक है, इसलिए केंद्र समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा, विरासत, इतिहास और सभ्यतागत आदान-प्रदान से संबंधित पूरे एशिया, विशेष रूप से दक्षिण पूर्व एशिया से डिजिटल संग्रह तैयार करने का प्रयास करता है।

शैक्षणिक सहयोग

नालंदा विश्वविद्यालय ने वर्ष 2024–2025 में अपने अंतर्राष्ट्रीय शैक्षणिक सहयोग और अंतर-संस्थागत संबंधों को और अधिक सुदृढ़ किया है। यह प्रयास विश्वविद्यालय के मिशन "प्राचीन ज्ञान को आधुनिक सहयोग के माध्यम से पुनर्जीवित" करने की पुनर्पुष्टि करता है। समझौता ज्ञापन के रूप में ये शैक्षणिक सहयोग विश्वविद्यालय की एशिया और उससे परे विस्तारित होती शैक्षणिक उपस्थिति का प्रतीक हैं, जो सांस्कृतिक संरक्षण, अनुसंधान नवाचार, और क्षेत्रीय एकीकरण को भी प्रोत्साहित करते हैं।

- **22 द्विपक्षीय समझौता-ज्ञापन भारतीय और अंतर्राष्ट्रीयसंस्थानों के साथ हस्ताक्षरित किए गए हैं, जिनमें निम्नलिखित संस्थान शामिल हैं —**
- यूनिवर्सिटास सुमात्रा उत्तरा (इंडोनेशिया), सय्याह कुआला यूनिवर्सिटी (इंडोनेशिया), लुंबिनी बौद्ध विश्वविद्यालय (नेपाल), केलानिया विश्वविद्यालय (श्रीलंका), सलामांका यूनिवर्सिटी (स्पेन), द एशियाटिक सोसाइटी (भारत), और रिसर्च एंड इन्फॉर्मेशन सिस्टम फॉर डेवलपिंग कंट्रीज (आर.आई.एस, भारत)।

- **23 शैक्षणिक सहयोग (MoUs) आसियान–भारत विश्वविद्यालय नेटवर्क (आसियान–इंडिया नेटवर्क ऑफ यूनिवर्सिटीज, ए आई एन यू) के तहत हस्ताक्षरित किए गए हैं—**
- इन समझौतों के माध्यम से भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, जोधपुर, भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान, इलाहाबाद, भारतीय प्रबंधन संस्थान, बोध गया,
- उदयाना यूनिवर्सिटी (इंडोनेशिया), यूनिवर्सिटास इंडोनेशिया, यूनिवर्सिटास बेंगकुलु (इंडोनेशिया), यूनिवर्सिटी मलाया (मलेशिया),
- प्रिंस ऑफ सोंगक्ला यूनिवर्सिटी (थाईलैंड), चियांग माई यूनिवर्सिटी (थाईलैंड), उबोन रत्चाथानी यूनिवर्सिटी (थाईलैंड), और यूनिवर्सिटी ऑफ कंप्यूटर स्टडीज़, मांडले (म्यांमार)

नालंदा विश्वविद्यालय द्वारा वर्ष 2024-2025 में हस्ताक्षरित द्विपक्षीय समझौता ज्ञापनों की सूची

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण -फरवरी, 2024
श्री अरबिंदो सेंटर फॉर एडवांस्ड रिसर्च (एसएसीएआर) ट्रस्ट, पॉन्डिचेरी -अगस्त, 2024
भारतीय ऐतिहासिक और सांस्कृतिक अनुसंधान फाउंडेशन, बेंगलुरु -अगस्त, 2024
द एशियाटिक सोसाइटी -जनवरी, 2025

सयाह कुआला यूनिवर्सिटी, आचे -फरवरी, 2025
यूनिवर्सिटास सुमातेरा उतारा -फरवरी, 2025

यूनिवर्सिटी ऑफ़ मैनेजमेंट एंड इकोनॉमिक्स, बट्टामबांग -अप्रैल, 2024

यूनिवर्सिटी ऑफ केलानिया -सितंबर, 2024

यूनिवर्सिटी ऑफ़ सालमंका -अक्टोबर, 2024

वर्ष 2024- 2025 में नालंदा विश्वविद्यालय द्वारा ए आई एन यू के साथ हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापनों की सूची

डॉ. बीआर अंबेडकर राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान(एनआईटी), जालंधर -मार्च, 2024
राष्ट्रीय औषधीय शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान(नाइपर), गुवाहाटी -अप्रैल, 2024
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, (आईआईटी) कानपुर -अप्रैल, 2024
राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, (एनआईटी) दिल्ली -मई, 2024
भारतीय प्रबंध संस्थान, (आईआईएम) बोध गया -जून, 2024
भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी और प्रबंधन संस्थान(आईआईआईटीएम), ग्वालियर -सितंबर, 2024
इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ़ इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी इलाहाबाद -अक्टूबर, 2024
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर -अक्टूबर, 2024

यूनिवर्सिटास इंडोनेशिया -जुलाई, 2024
उदयाना यूनिवर्सिटी -जनवरी, 2025
सयाह कुआला यूनिवर्सिटी, आचे -फरवरी, 2025
यूनिवर्सिटास सुमातेरा उतारा -फरवरी, 2025

यूनिवर्सिटी ऑफ़ कंप्यूटर स्टडीज, मांडले -फरवरी, 2024

यूनिवर्सिटी ऑफ़ कंप्यूटर स्टडीज, मांडले -फरवरी, 2025

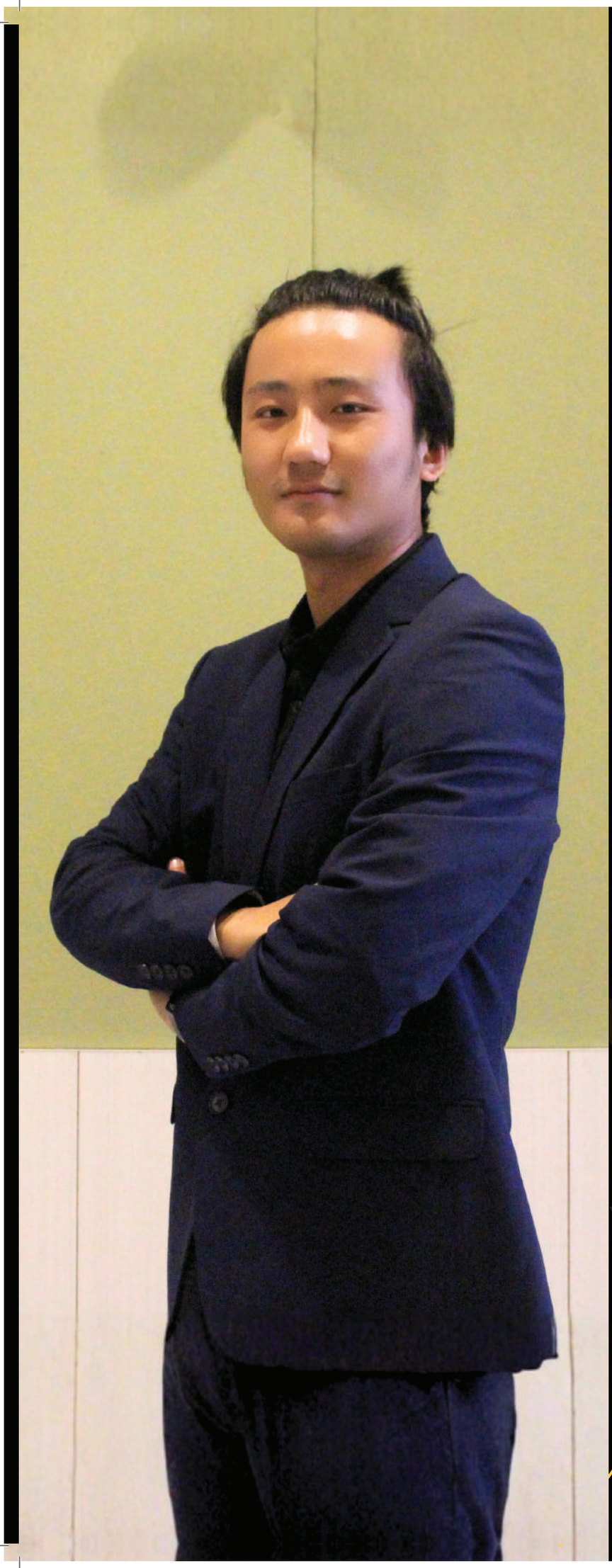

विद्यार्थी अनुसंधान अन्य शैक्षणिक गतिविधियाँ

विद्यार्थी अनुसंधान

एम.ए. शोधप्रबंध: इतिहास अध्ययन

- ऐश्वर्या सहाना. **सीमाओं से परे: प्राचीन भारत में भाड़े के सैनिक और युद्ध की कला.** पर्यवेक्षक: प्रोफेसर अभय कुमार सिंह.
- आलोक हालदार. **भारत में प्रारंभिक बौद्ध कला का सांकेतिक महत्व (300 ईसा पूर्व से 1000 ईस्वी तक).** पर्यवेक्षक: डॉ. इलोरा त्रिबेदी.
- अन्वेषी बिष्ट. **गहरे जल में कदम: हिंद महासागर विश्व में समुद्री डकैती की एक वैकल्पिक समझ.** पर्यवेक्षक: डॉ. अमिता सत्या.
- ऐशी पोद्दार. **पहाड़पुर महाविहार: पहाड़पुर और नालंदा महाविहार की कला का तुलनात्मक अध्ययन.** पर्यवेक्षक: डॉ. तोसाबंता पधान.
- बुन लक. **कंबोडिया में शिव और विष्णु मंदिरों का प्रसार और विकास.** पर्यवेक्षक: प्रोफेसर अभय कुमार सिंह.
- चेतन छेरिंग. **भूटान में सिरेमिक उत्पादन का इतिहास: गांगज़ुर और लांगथेल मिट्टी-शिल्प केंद्रों का अध्ययन.** पर्यवेक्षक: डॉ कशफ़ ग़नी.
- दिवाकर कुमार. **तेलहारा का महाविहार: श्री प्रथमशिवपुर महाविहार में प्राचीन शिक्षा केंद्र की विरासत.** पर्यवेक्षक: डॉ. प्रांशु समदर्शी.
- दिव्या वशिष्ठ. **मालदीव में उपचार और भौतिकता: प्रारंभिक आधुनिक काल में कौड़ी मुद्रा का प्रचलन.** पर्यवेक्षक: डॉ. अमिता सत्या.
- मु. बुलबुल हसन. **बांग्लादेश के राजनीतिक संक्रमण और उनके क्षेत्रीय जल कूटनीति पर प्रभाव (2009–2024).** पर्यवेक्षक: डॉ. राजीव रंजन चतुर्वेदी.
- मु. तौकीर अहमद. **सुंदरबन: लोक परंपराओं और उनके उपासना–अनुष्ठानों का पुनर्परीक्षण.** पर्यवेक्षक: डॉ. इलोरा त्रिबेदी.
- पी. थारिंदु एम. पीरिस. **प्राचीन श्रीलंका में राज्य और संघ के बीच अंतःक्रिया, विशेष रूप से प्राचीन जलाशयों पर केंद्रित अध्ययन.** पर्यवेक्षक: डॉ. इलोरा त्रिबेदी.
- किन्नरी पोलाडिया. **गोवा में शिलाचित्रों और भूचित्रों का पुरातात्विक अध्ययन.** पर्यवेक्षक: डॉ. तोसाबंता पधान.
- पुर्बाशा दत्ता. **मसाला व्यापार के प्रभाव का अन्वेषण: 15वी–17वी शताब्दी के दौरान हिंद महासागर में समुद्री संपर्कों का अध्ययन.** पर्यवेक्षक: डॉ. अमिता सत्या.
- रिफात हुसैन रकीब. **इतिहास और अभिव्यक्ति: एंसलम कीफर द्वारा देखे गए होलोकॉस्ट की व्याख्या.** पर्यवेक्षक: डॉ कशफ़ ग़नी.
- सूई आंग थाँग. **स्वतंत्रता के बाद भारत–बर्मा संबंधों का ऐतिहासिक सर्वेक्षण (1947–2000 के दशक).** पर्यवेक्षक: डॉ. राजीव रंजन चतुर्वेदी.
- सुमध चकमा. **1971 के बाद से बांग्लादेश में भारत की सांस्कृतिक कूटनीति: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन.** पर्यवेक्षक: डॉ. राजीव रंजन चतुर्वेदी.
- थिएन होआ थी वो. **बौद्ध चिंतनपरक परंपराओं का रूपांतरण: प्रारंभिक बौद्ध धर्म से चीनी चान परंपरा तक.** पर्यवेक्षक: डॉ. अमिता सत्या.
- ट्रान तान हिएप गुयेन. **शांति निर्माण के धार्मिक दृष्टिकोण: तिब्बत और वियतनाम में बौद्ध प्रतिक्रियाओं का अध्ययन.** पर्यवेक्षक: डॉ. राजीव रंजन चतुर्वेदी.
- जमीनुर रहमान. **क़ुतुब और जामा मस्जिदों का इतिहास, कला और वास्तुकला: एक तुलनात्मक अध्ययन.** पर्यवेक्षक: डॉ कशफ़ ग़नी.

एम.एससी. शोधप्रबंध: पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण अध्ययन

- एडविन सरकार त्रिष्टो — **जलीय पारितंत्रों में जैव अपघटनीय प्लास्टिक के अपघटन के प्रभाव.** मार्गदर्शन: डॉ. सयान भट्टाचार्य.
- ऐशा मोहापात्र — **अपशिष्ट से समृद्धि तक: महाबोधि मंदिर में पुष्प अपशिष्ट प्रबंधन का एक अध्ययन.** मार्गदर्शन: डॉ. किशोर धावला.

- अलंकृता महापात्र — **ग्रामीण विकास नीतियों का महिलाओं के सशक्तिकरण पर प्रभाव का आकलनः बिहार और ओडिशा का एक अध्ययन.** मार्गदर्शनः डॉ. किशोर धावला.
- अर्पिता दास — **नालंदा विश्वविद्यालय में कचरा पृथक्करण प्रथाओं के व्यवहारिक निर्धारकों का मूल्यांकन.** मार्गदर्शनः डॉ. किशोर धावला.
- आर्यन — **पराली अपशिष्ट प्रबंधनः पर्यावरणीय दायित्व से जैव-आर्थिक संपत्ति की ओर.** मार्गदर्शनः डॉ. किशोर धावला.
- ए. बी. एम. रोबिल हसन — **सिलहट, बांग्लादेश में बाढ़ जोखिम क्षेत्र निर्धारणः एक भू-स्थानिक दृष्टिकोण.** मार्गदर्शनः डॉ. सत्यनारायण शास्त्री.
- क्रिस्डा फ्रे — **ब्राज़ाविल, कांगो में बाढ़ जोखिम क्षेत्र निर्धारणः एक भू-स्थानिक दृष्टिकोण.** मार्गदर्शनः डॉ. सत्यनारायण शास्त्री.
- डेंडप वांगचुक — **भूटान में हरित ऊर्जा और इसकी सतत विकास लक्ष्य 7 के साथ अनुरूपता.** मार्गदर्शनः डॉ. किशोर धावला.
- दिब्यरंजन गिरि — **ओडिशा के महानदी हाथी अभयारण्य में एशियाई हाथियों में सूक्ष्म-प्लास्टिक के संपर्क का अध्ययन.** सह-मार्गदर्शनः डॉ. सयान भट्टाचार्य.
- लांगा दोरजी — **भूटान के सम्तसे जिले में रिमोट सेंसिंग और जीआईएस तकनीक का उपयोग कर भूजल की संभावनाओं का मानचित्रण.** मार्गदर्शनः डॉ. सत्यनारायण शास्त्री.
- जुनायेदुर रहमान — **भारत के पूर्वी हिमालयी क्षेत्र की मिट्टी में सूक्ष्म-प्लास्टिक संदूषण का अध्ययन.** मार्गदर्शनः डॉ. सयान भट्टाचार्य.
- मार्शिया राफेल — **बोआने, मोज़ाम्बिक में रिमोट सेंसिंग और जीआईएस आधारित वेटेड ओवरले विश्लेषण द्वारा भूजल संभावित क्षेत्रों का सीमांकन.** मार्गदर्शनः डॉ. सत्यनारायण शास्त्री.
- एम.डी. अरिफुल हक ज़ाबेर — **सुंदरबन पारिस्थितिक तंत्र का पुनर्स्थापन और मूल्यांकन.** मार्गदर्शनः डॉ. किशोर धावला.
- एम.डी. असीकुर रहमान — **ईएसजी का 11ई फ्रेमवर्कः बांग्लादेश के वस्त्र उद्योग के लिए एक एकीकृत मॉडल.** मार्गदर्शनः डॉ. किशोर धावला.
- नंदिता प्रभु — **वायनाड, भारत में भूस्खलन संवेदनशीलता मानचित्रणः एक जीआईएस आधारित बहु-मापदंडीय निर्णय विश्लेषण दृष्टिकोण.** मार्गदर्शनः डॉ. सत्यनारायण शास्त्री.
- पॉपी तिरपुरा — **बांग्लादेश के बंदरबन में भूस्खलन और बाढ़ जोखिम क्षेत्र निर्धारणः जलवायु परिवर्तन प्रभाव का एक भू-स्थानिक अध्ययन.** मार्गदर्शनः डॉ. सत्यनारायण शास्त्री.
- प्रत्यूषा माझी— **पारंपरिक प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन प्रथाएँः ओडिशा के बोध क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन से निपटने का एक सतत तरीका.** मार्गदर्शनः डॉ. सत्यनारायण शास्त्री.
- रहायू पितवारी — **पदांग, इंडोनेशिया में मैंग्रोव और युवा तटीय मैदान आधारित पारिस्थितिक तंत्र सेवाओं का मूल्यांकन.** मार्गदर्शनः डॉ. सत्यनारायण शास्त्री.
- रवि कुमार — **बिहार में जलवायु-स्मार्ट कृषिः स्थिरता की दिशा में एक मार्ग.** मार्गदर्शनः डॉ. सयान भट्टाचार्य.
- शम्सुद्दीन अब्दुल्लाही — **उत्तर-पूर्वी नाइजीरिया में भूजल गुणवत्ता का व्यापक मूल्यांकनः सार्वजनिक स्वास्थ्य और पर्यावरण प्रबंधन के निहितार्थ.** मार्गदर्शनः डॉ. सयान भट्टाचार्य.
- शौहम आमिर सान्याल — **राजगीर, बिहार के होटलों में कचरा प्रबंधन प्रथाओं का अध्ययन.** मार्गदर्शनः डॉ. सयान भट्टाचार्य.
- सूर्य प्रकाश — **रोहतास, बिहार, भारत में जीआईएस आधारित वेटेड ओवरले विश्लेषण द्वारा भूजल संभावित क्षेत्रों का सीमांकन.** मार्गदर्शनः डॉ. सत्यनारायण शास्त्री.
- तीरापोन सुथिनुन — **भारत के उभरते हवाई अड्डों में वायु गुणवत्ता प्रबंधन में सुधार के लिए सुवर्णभूमि हवाई अड्डे से प्राप्त सबक.** मार्गदर्शनः डॉ. किशोर धावला.
- विजया भारती — **नालंदा जिला, बिहार में भूजल संसाधनों का मूल्यांकनः रिमोट सेंसिंग (आरएस) और भू-स्थानिक सूचना प्रणाली (जीआईएस) दृष्टिकोण.** मार्गदर्शनः डॉ. सत्यनारायण शास्त्री.

विद्यार्थी इंटर्नशिपः पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण अध्ययन

- अभिलाष त्रिपाठी — **इंडियन स्पेस अकादमी**, नई दिल्ली.
- अचिन्त्य घोषाल — **अशोका–एनवायरनमेंटल डिफेंस फंड क्लाइमेट कॉर्प्स फेलोशिप**, तमिलनाडु.
- ऐश्वर्या महेन्द्र पाटिल — **वन्यजीव और संरक्षण अध्ययन के उत्कृष्टता केंद्र**, गुजरात.

- आकाश राज — **भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएसएसआर)**, नालंदा विश्वविद्यालय.
- आकृति कुशवाहा — **भारतीय विज्ञान अकादमी**, देहरादून.
- अम्बुज सिंह — **भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएसएसआर)**, नालंदा विश्वविद्यालय.
- आनंद वर्धन — **इंडियन स्पेस अकादमी**, नई दिल्ली.
- अनुशिन राय — **राष्ट्रीय तटीय अनुसंधान केंद्र (एनसीसीआर)**, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार, चेन्नई, तमिलनाडु.
- अर्का मुखर्जी — **भारतीय विज्ञान अकादमी**, गुवाहाटी.
- बबीता शर्मा — **इंडियन स्पेस अकादमी**, नई दिल्ली.
- देवांश पांडे — **भारतीय विज्ञान संस्थान (आईआईएससी)**, बेंगलुरु.
- गार्गी गौर — **सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरनमेंट (सीएसई)**, नई दिल्ली.
- इन्द्रयान राय — **आसनसोल इंजीनियरिंग कॉलेज**, पश्चिम बंगाल.
- के. लया वेंकट — **इंडियन स्पेस अकादमी**, नई दिल्ली.
- कप्पला स्वप्ना शालेम — वराहा, हरियाणा.
- कौशिक कुमार दास — **विश्व-भारती विश्वविद्यालय**, पश्चिम बंगाल.
- एम.एस.टी. मजमुमास सालेहिन — **इंडियन स्पेस अकादमी**, नई दिल्ली.
- मुहम्मद फ़ख़री विजयांतो — **प्रेप्ली**, संयुक्त राज्य अमेरिका.
- नंदन कुमार — **भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएसएसआर)**, नालंदा विश्वविद्यालय.
- नंदिनी झा — **क्लाइमेट रेज़िलिएंट ऑब्जर्विंग-सिस्टम्स प्रमोशन काउंसिल (क्रॉपक)**, नई दिल्ली.
- नागुनूरी सैनीशिथा — **वर्ल्ड वाइड फंड फॉर नेचर (डब्ल्यूडब्ल्यूएफ–इंडिया)**, हैदराबाद.
- परिजात रक्षित — **बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू)**, उत्तर प्रदेश.
- रेवुरु साई विष्णु वर्धन — **सेंटर फॉर इकोनॉमिक्स एंड सोशल स्टडीज (सेस)**, हैदराबाद.
- रितम कुमार मेड्या — **भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएसएसआर)**, नालंदा विश्वविद्यालय.
- रितिका घोग — **रिमोट सेंसिंग एप्लीकेशन सेंटर**, महाराष्ट्र.
- शेख मज़हर — **पर्यावरण संरक्षण प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान (ईपीटीआरआई)**, हैदराबाद.
- शाम्भवी वर्दान — **पारिस्थितिकी और पर्यावरण अध्ययन विद्यापीठ**, नालंदा विश्वविद्यालय.
- वैष्णवी — **इंडियन स्पेस अकादमी**, नई दिल्ली.

एम.ए. शोध प्रबंध: बौद्ध अध्ययन, दर्शनशास्त्र और तुलनात्मक धर्म

- अंकित कुशवाहा — **महायान सूत्रों की प्रामाणिकता पर ऐतिहासिक विमर्श: नालंदा आचार्यों के सिद्धांतिक और पाठीय परिप्रेक्ष्य में अध्ययन.** पर्यवेक्षण: डॉ. प्रांशु समदर्शी.
- अन्ह थी किम त्रिन्ह — **बुद्ध की शिक्षण उत्कृष्टता: दर्शन और कार्यप्रणाली.** पर्यवेक्षण: प्रोफेसर जी. मिश्रा एवं डॉ. पूजा डबराल.
- आशिन ज़ॉतिकर्लिकार — **ईर्ष्या एवं मात्सर्य: बौद्ध शिक्षाओं में नैतिक निहितार्थ.** पर्यवेक्षण: डॉ. ब्रेंडा एच. एक्स. ली.
- बौनफेट फेट फोमावोंग — **सामाजिक रूप से संलग्न बौद्ध धर्म: लाओस में युवाओं की बौद्ध साधना में भागीदारी को प्रोत्साहन.** पर्यवेक्षण: डॉ. ब्रेंडा एच. एक्स. ली.
- बुई थी नो एन — **सार्वभौम सम्राट (चकवर्ती) और राजनीतिक अधिकार.** पर्यवेक्षण: प्रोफेसर जी. मिश्रा एवं डॉ. ब्रेंडा एच. एक्स. ली.
- बुई थांग वान — **अनात्मा: आत्म-सहायता के प्रति एक बौद्ध दृष्टिकोण.** पर्यवेक्षण: डॉ. ब्रेंडा एच. एक्स. ली.
- गोपा (इशे अंगमो) — **लद्दाख में छोद साधना: इसके अनुष्ठान और दार्शनिक आधार.** पर्यवेक्षण: डॉ. पूजा डबराल.
- होआ बा लू — **वियतनाम में शुद्धभूमि (सुखावती) साधना का संवर्धन: थिच तिन्ह के योगदान का अध्ययन.** पर्यवेक्षण: प्रोफेसर जी. मिश्रा एवं गेशे लुंगटोक शेराप.
- जोई बौध्थासिथ — **ब्रह्मविहारों और लाओस में सामाजिक-आर्थिक अधिकारों के पारस्परिक संबंधों का विश्लेषण.** पर्यवेक्षण: डॉ. ब्रेंडा एच. एक्स. ली.
- कर्मा दोर्जी — **आर्य नागार्जुन के नैतिक शासन पर विचार: भूटान के सकल राष्ट्रीय सुख (जी.एन.एच) दर्शन पर प्रभाव का विश्लेषण.** पर्यवेक्षण: डॉ. पूजा डबराल.
- कर्मा वांडा — **महायान बौद्ध धर्म में सप्ताङ्ग साधना: इसके दार्शनिक आयामों और नैतिक निहितार्थों का आलोचनात्मक अध्ययन.** पर्यवेक्षण: डॉ. पूजा डबराल.

- खामसिनसाई सुघापान्या — **नालंदा परंपरा में शास्त्रीय टीका लेखनः वसुबंधु की व्याख्यायुक्ति में पंचबिंदु विश्लेषण का अध्ययन.** पर्यवेक्षणः गेशे लुंगटोक शेराप.
- थान न्गान गुयेन — **जीमूतवाहन और बोधिसत्व के आत्म-बलिदान आदर्शः श्रीहर्ष के नाटक नागानंद में परोपकारी आयाम.** पर्यवेक्षणः प्रोफेसर जी. मिश्रा एवं डॉ. प्रांशु समदर्शी.
- त्रांग दुयोंग थी थुई — **महायान परंपरा में प्रतीत्यसमुत्पादः आंतरिक और सार्वभौमिक शांति की ओर एक दृष्टिकोण.** पर्यवेक्षणः डॉ. पूजा डबराल.
- त्रांग माई ले — **श्रावकयान और महायान परंपरा में दानः एक तुलनात्मक अन्वेषण.** पर्यवेक्षणः डॉ. पूजा डबराल.
- त्रान थी फुओंग — **वेदनानुपश्यनाः चार आर्य सत्यों की समझ में इसकी भूमिका पर एक सैद्धांतिक अध्ययन.** पर्यवेक्षणः डॉ. प्रांशु समदर्शी.
- लान थी त्रान — **तिब्बती बौद्ध धर्म में पुनर्जन्म की भूमिकाः सांस्कृतिक और धार्मिक दृष्टिकोणों का अन्वेषण.** पर्यवेक्षणः गेशे लुंगटोक शेराप.
- मी ले थी गुयेन — **शांति और सद्भावः अंतर-धार्मिक संवाद में बौद्ध दृष्टिकोण.** पर्यवेक्षणः डॉ. ब्रेंडा एच. एक्स. ली.
- फी होई दुयोंग थुओंग — **शूरंगम सूत्र में रक्षक देवताओं का अध्ययनः संबंधित तांत्रिक ग्रंथों के साथ एक तुलनात्मक अध्ययन.** पर्यवेक्षणः डॉ. प्रांशु समदर्शी.
- सुइप्रुआंग मार्मा — **सत्त बोज्झंग का सिद्धांतिक महत्वः पालि कैनोनिकल स्रोतों पर आधारित अध्ययन.** पर्यवेक्षणः डॉ. प्रांशु समदर्शी.
- सोमफोन लुआयालाथ — **नेतृत्व में चार संघ-वत्तुओं की भूमिका.** पर्यवेक्षणः डॉ. ब्रेंडा एच. एक्स. ली.
- सौलिदेथ दूंगचानसी — **भारतीय धर्म और संस्कृति में नाग मिथक एवं आस्थाएँः लाओस की आध्यात्मिक साधना पर उनका प्रभाव.** पर्यवेक्षणः गेशे लुंगटोक शेराप.
- त्वेशा खानिजो — **“स्व” की सत्ता का सैद्धांतिक विश्लेषण और समकालीन नैतिकता में दो सत्यों का प्रयोग.** पर्यवेक्षणः प्रोफेसर जी. मिश्रा एवं डॉ. पूजा डबराल.
- वत सिवन — **कुशल चैतसिक और बौद्ध धर्म एवं जंगियन पॉज़िटिव साइकोलॉजी का तुलनात्मक अध्ययन.** पर्यवेक्षणः डॉ. पूजा डबराल.
- वेन. इन्दवम्सा — **प्रतिरोध, सुधार और धार्मिक असहमतिः भारत के नव-बौद्ध आंदोलन और मॉप्यार गैंग (म्यांमार) का तुलनात्मक अध्ययन.** पर्यवेक्षणः डॉ. प्रांशु समदर्शी.
- वेन. वननसिरी — **थेरवाद में भिक्षु शिक्षाः श्रीलंका, म्यांमार और थाईलैंड के संदर्भ में आलोचनात्मक अन्वेषण.** पर्यवेक्षणः प्रोफेसर जी. मिश्रा.
- वो दिन हुआन डो — **थेरवाद और सुखावती शुद्धभूमि परंपरा में बुद्धानुस्सतिः एक तुलनात्मक अध्ययन.** पर्यवेक्षणः प्रोफेसर जी. मिश्रा एवं डॉ. ब्रेंडा एच. एक्स. ली.

एम.ए. शोधप्रबंधः हिन्दू अध्ययन (सनातन धर्म)

- अभय कुमार लाल — **क्षेत्र–क्षेत्रज्ञ विभागयोगः एक अध्ययन.** पर्यवेक्षकः प्रोफेसर जी. मिश्रा एवं डॉ. कुमुद प्रसाद आचार्य.
- अभिमन्यु सिंह राघव — **भगवद्गीता और समग्र स्वास्थ्यः एक एकीकृत दृष्टिकोण.** पर्यवेक्षकः प्रोफेसर जी. मिश्रा.
- अंकिता दैमा — **भारतीय ज्ञान परंपराओं के दृष्टिकोण से स्वप्न का वैज्ञानिक अन्वेषणः योगसूत्र और उपनिषदों के विशेष संदर्भ में.** पर्यवेक्षकः डॉ. राजेश्वर मुखर्जी.
- भक्ति सुभाष जोशी — **आन्वीक्षिकीः सभी विद्याओं का दीपक.** पर्यवेक्षकः डॉ. कुमुद प्रसाद आचार्य.
- गोरडाना योवानोविच — **अद्वैत वेदान्त, माध्यमिक और निरपेक्षवाद.** पर्यवेक्षकः प्रोफेसर जी. मिश्रा.
- गुंजन राठौर — **चेतना का शाश्वत गतिक्रम.** पर्यवेक्षकः प्रोफेसर जी. मिश्रा.
- ज्योतिका — **जीवनशैली प्रबंधन हेतु योगः एक पाठ्य विश्लेषण.** पर्यवेक्षकः डॉ. राजेश्वर मुखर्जी.
- लक्ष्य चौहान — **ज्ञान–कर्म संयोगः एक समालोचनात्मक अध्ययन.** पर्यवेक्षकः प्रोफेसर जी. मिश्रा एवं डॉ. कुमुद प्रसाद आचार्य.

- फाम थी किम त्रिन्ह — **आनंद का अध्ययन: उपनिषदों और सुत्त पिटक के दृष्टिकोण से.** पर्यवेक्षक: डॉ. राजेश्वर मुखर्जी.
- संजय कुमार — **अवस्थात्रय और समाधि के संदर्भ में चेतना का अध्ययन.** पर्यवेक्षक: डॉ. राजेश्वर मुखर्जी.

एम.ए. शोधप्रबंध: भाषा एवं साहित्य / मानविकी अध्ययन विद्यापीठ

- गंगा गुरुंग — **समाज, अपराध और हिंसा: चार्ल्स डिकेन्स के 'ओलिवर ट्विस्ट' में महिला अपराधिता.** पर्यवेक्षक: डॉ. मीर इस्लाम.
- गरीमा त्रिपाठी — **स्मृति, पहचान और समुदाय: जोसे सारामागो के 'ब्लाइंडनेस' का अध्ययन.** पर्यवेक्षक: प्रोफेसर सुषांत कुमार मिश्रा.
- जौज़ा मुनिराह — **डिजिटल साहित्य की दुनिया: एटलस की 'पर्सोना 3' का एक अध्ययन.** पर्यवेक्षक: डॉ. मीर इस्लाम.
- लौरा एम. एलिज़ाल्डे — **सीमांत पात्र, कवि और चिकित्सक: 'ओडिसी' की चौथी पुस्तक में हेलेन के प्रतिनिधित्व का एक अन्वेषणात्मक अध्ययन.** पर्यवेक्षक: प्रोफेसर सुषांत कुमार मिश्रा.
- नारदा चथुरंगा शालिंदा इम्बुलेगामा आई. जी. — **वाल्मीकि रामायण में संगीत का वर्णन.** पर्यवेक्षक: प्रोफेसर सुषांत कुमार मिश्रा.
- फ्रा जक्कापन कोमोन — **स्व की रूपांतरण प्रक्रिया: काफ्का की 'द मेटामॉर्फोसिस' में पहचान और दुःख पर बौद्ध दृष्टिकोण.** पर्यवेक्षक: डॉ. मीर इस्लाम.
- पिंकी मुक्त दास — **बिमल डे के यात्रा लेखन में तिब्बत की धारणा.** पर्यवेक्षक: प्रोफेसर सुषांत कुमार मिश्रा एवं डॉ. पूजा डबराल.
- रिज़की मायलानी — **एका कुर्नियावन की 'ब्यूटी इज़ अ वूंड': जादुई यथार्थवाद के दृष्टिकोण से उत्पीड़न और प्रतिरोध का अन्वेषण.** पर्यवेक्षक: डॉ. मीर इस्लाम.
- सांगय वांगचुक — **भूटानी ध्वनिप्रणाली: लोकगीतों और आधुनिक गीतों का अध्ययन.** पर्यवेक्षक: प्रोफेसर सुषांत कुमार मिश्रा.
- शिवदी कुमार मिश्रा — **अभिनवगुप्त के 'लोचन' में व्याख्यात्मक दृष्टिकोण के अंतर्गत महाभारत में शांत रस.** पर्यवेक्षक: प्रोफेसर सुषांत कुमार मिश्रा.
- सौरव कुमार साहा — **काफ्का की 'द ट्रायल' की व्याख्या हेतु नागार्जुन के प्रतीत्यसमुत्पाद के सैद्धांतिक ढाँचे का अध्ययन.** पर्यवेक्षक: प्रोफेसर सुषांत कुमार मिश्रा.
- श्री इमावती — **अबिदाह एल खलीकी की 'कार्तिनी' और लिलिस निहवान की 'सिति वालिदाह: मदर ऑफ द इंडोनेशियन नेशन' में नायिकाओं का तुलनात्मक अध्ययन.** पर्यवेक्षक: प्रोफेसर सुषांत कुमार मिश्रा.
- छेवांग रिन्जिन — **कुंजांग छोडेन के उपन्यास 'दावा: द स्टोरी ऑफ अ स्ट्रे डॉग इन भूटान' में मौन की आवाज़.** पर्यवेक्षक: डॉ. मीर इस्लाम.
- उर्मी अख्तर — **हान कांग के उपन्यास 'द वेजिटेरियन' में शरीर, प्रतिरोध और आघात.** पर्यवेक्षक: डॉ. मीर इस्लाम.

प्रबंध परियोजनाएँ: एम.बी.ए. सतत विकास एवं प्रबंधन

- अंतोरा रे – **भारत में सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रमों का प्रभाव मूल्यांकन (बिहार राज्य-स्तरीय योजनाएँ).** पर्यवेक्षक: डॉ. मुनीर अहमद मैगरी.
- आशीष गौरव – **व्यापारिक रणनीतियों में प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र संरक्षण सोच का एकीकरण: एक अंतर-क्षेत्रीय विश्लेषण.** पर्यवेक्षक: डॉ. मुनीर अहमद मैगरी.
- छेंगलीब होउन – **कंबोडिया में हरित अर्थव्यवस्था का रूपांतरण: चुनौतियाँ और अवसर.** पर्यवेक्षक: डॉ. आनंद कुमार.
- ह्निन नंदर वाई – **भारत में कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व और महिला सशक्तिकरण: एक अंतर-क्षेत्रीय विश्लेषण.** पर्यवेक्षक: डॉ. आनंद कुमार.
- जॉय देव प्रताप सिन्हा – **बांग्लादेश में सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रमों का प्रभाव मूल्यांकन.** पर्यवेक्षक: डॉ. मुनीर अहमद मैगरी.
- क्याव टुन आंग – **म्यांमार में जलवायु परिवर्तन नीतियों की प्रभावशीलता का आकलन: जलवायविक प्रभाव चालकों पर अध्ययन.** पर्यवेक्षक: डॉ. आनंद कुमार.
- मैथ्यू सुआन मोंडोल – **श्रीलंका में सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रमों का प्रभाव मूल्यांकन.** पर्यवेक्षक: डॉ. मुनीर अहमद मैगरी.

- प्रीति झा – **स्वैच्छिक कार्बन बाजार में अवसर और चुनौतियाँ: नेपाल के तराई क्षेत्र का एक अध्ययन.** पर्यवेक्षक: डॉ. आनंद कुमार.
- पुनर्जी जी. डम्बोरगामा – **मानव कल्याण प्राप्त करने में सतत विकास लक्ष्यों की शक्ति का मूल्यांकन.** पर्यवेक्षक: डॉ. मुनीर अहमद मैगरी.
- रेन कीयरिन – **कंबोडिया में सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रमों का प्रभाव मूल्यांकन.** पर्यवेक्षक: डॉ. मुनीर अहमद मैगरी.
- रोस्मिता छेत्री – **भूटान के थिम्फू में जलवायु परिवर्तन, इनडोर वातावरण, और जल गुणवत्ता पर लैंगिक दृष्टिकोण.** पर्यवेक्षक: डॉ. आनंद कुमार.
- शोभा वी. सुजाता – **एम.बी.ए.–एस.डी.एम. पाठ्यक्रम की सतत विकास लक्ष्यों के साथ संगति का आकलन.** पर्यवेक्षक: डॉ. आनंद कुमार.
- श्रिष्टि कोंडा – **सतत उपभोग व्यवहार पर पर्यावरणीय ज्ञान, जोखिम धारणा, और पर्यावरणीय चिंता की भूमिका.** पर्यवेक्षक: डॉ. मुनीर अहमद मैगरी.
- श्रुति कुमार – **चयनित भारतीय राज्यों में महिलाओं के रोजगार का स्थानिक-कालिक मानचित्रण.** पर्यवेक्षक: डॉ. आनंद कुमार.
- यी मॉन सोए – **यांगून और मंडले क्षेत्रों में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन का एकीकृत दृष्टिकोण: स्वच्छ ऊर्जा और सतत विकास लक्ष्यों की दिशा में एक मार्ग.** पर्यवेक्षक: डॉ. आनंद कुमार.

कॉरपोरेट अनुभव (2024-25)

- अदी विजया – सतत मानवीय आपूर्ति श्रृंखला. आंतरिक पर्यवेक्षक: डॉ. मुनीर अहमद मैगरी. आयोजक संस्था: लेम्बागा रेसिलिएंसी बेंकाना, मुहम्मदियाह डिजास्टर मैनेजमेंट सेंटर, इंडोनेशिया.
- चिब्यूज़ पीटर एडेज़े – भारतीय औषधि उद्योग के वितरण चैनलों में दवा की बर्बादी. आंतरिक पर्यवेक्षक: डॉ. आनंद कुमार. आयोजक संस्था: आरएक्स मेडिको, नोएडा, भारत.
- मो. असदुल्लाह – सामाजिक प्रभाव और सामुदायिक उन्नयन. आंतरिक पर्यवेक्षक: डॉ. मुनीर अहमद मैगरी. आयोजक संस्था: भारतीय नीति संवाद केंद्र.
- मो. अशरफुज़्ज़मां अशरफ – वैश्विक युवाओं को सशक्त बनाना: सतत विकास हेतु सहयोगात्मक परिवर्तन को प्रोत्साहित करना. आंतरिक पर्यवेक्षक: डॉ. आनंद कुमार. आयोजक संस्था: कनेक्टिंग ड्रीम्स फाउंडेशन, नई दिल्ली, भारत.
- मोहिनी रत्ना अम्वस्थ – इंडीक्यूब ईएसजी रिपोर्टिंग . आंतरिक पर्यवेक्षक: डॉ. मुनीर अहमद मैगरी. आयोजक संस्था: सिम्प्लीएफआई सॉफ्टटेक, बेंगलुरु, भारत.
- वेला रत्ना विद्यासुती – जावा सागर, टुबन (इंडोनेशिया) में तह होने योग्य मछली पकड़ने के जाल की पर्यावरणीय अनुकूलता का मूल्यांकन. आंतरिक पर्यवेक्षक: डॉ. आनंद कुमार. आयोजक संस्था: वाल्ही , पूर्वी जावा, इंडोनेशिया.
- विष्णु दास एम. – जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में मसाला लघु -किसानों की जल-मौसम विज्ञान और जैविक खतरों के प्रति प्रतिरोधकता का मापन. आंतरिक पर्यवेक्षक: डॉ. आनंद कुमार. आयोजक संस्था: समावित विकास प्रा. लि., नोएडा, भारत.

ग्रीष्मकालीन इंटर्नशिप (बैच 2024-26)

- आकाश यादव – नेशनल थर्मल पावर कॉरपोरेशन लिमिटेड, नोएडा.
- अमन कुमार – अटल इनक्यूबेशन सेंटर – बिहार विद्यापीठ फाउंडेशन , पटना.
- अनोन्या पॉल – कनेक्टिंग ड्रीम्स फाउंडेशन, नई दिल्ली.
- बाप्पी कुमार गुप्ता – अटल इनक्यूबेशन सेंटर – बिहार विद्यापीठ फाउंडेशन , पटना.
- भावना सिन्हा – स्मॉल इंडस्ट्रीज डेवलपमेंट बैंक ऑफ इंडिया, पटना.
- गौतम कुमार मिश्रा – यूनाइटेड नेशन्स ग्लोबल कॉम्पैक्ट नेटवर्क इंडिया , नई दिल्ली.
- जागृति पाल – यूनाइटेड नेशन्स ग्लोबल कॉम्पैक्ट नेटवर्क इंडिया, नई दिल्ली.
- जिनी बिजू पुलोपिल्ली – इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन लिमिटेड, नई दिल्ली.
- कर्मा तेनजिन – जिग्मे नामग्येल इंजीनियरिंग कॉलेज, भूटान.
- मोहमिनुल इस्लाम – सीआरवाई – चाइल्ड राइट्स एंड यू, मुंबई.
- न्गुन था थोंग – इन-हाउस प्रोजेक्ट, नालंदा विश्वविद्यालय.
- प्रदीप कुमार – जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय , नई दिल्ली.

- रिविंदाना प्रियामंजली – यूनाइटेड नेशन्स ग्लोबल कॉम्पैक्ट नेटवर्क इंडिया, नई दिल्ली.
- सैम ई फ्यू ज़ॉ – सेव द चिल्ड्रन इंटरनेशनल ऑर्गनाइजेशन, म्यांमार.
- सौरव रौनियार – कनेक्टिंग ड्रीम्स फाउंडेशन, नई दिल्ली.
- सेजुती साहा – सीआरवाई – चाइल्ड राइट्स एंड यू, मुंबई.
- शेरब तेनजिन – भूटान पावर कॉरपोरेशन लिमिटेड, पूर्वी क्षेत्र, भूटान.
- शशांक कुमार – स्मॉल इंडस्ट्रीज डेवलपमेंट बैंक ऑफ इंडिया, पटना.
- श्राबंती चक्रवर्ती – एसआर एशिया – सीएसआर और सततता, नई दिल्ली.
- सौभाग्य शर्मा – यूनाइटेड नेशन्स ग्लोबल कॉम्पैक्ट नेटवर्क इंडिया, नई दिल्ली.
- सौम्यजीत मुखर्जी – यूनाइटेड नेशन्स ग्लोबल कॉम्पैक्ट नेटवर्क इंडिया (यूएनजीसीएनआई), नई दिल्ली.
- स्रेयनिच केओ – पीपल सेंटर फॉर डेवलपमेंट एंड पीस, कंबोडिया.
- सुनील कुमार महतो – टाटर फाउंडेशन, महाराष्ट्र सरकार.
- तेजस गुराओ – मैंगनीज ओअर (इंडिया) लिमिटेड, नागपुर.
- तेगुह मौलिदान – कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट, नेशनल चुंग चेंग यूनिवर्सिटी, ताइवान.
- थिदा – वाह वाह विन इंटरनेशनल कंपनी लिमिटेड, यांगून.
- टुन क्याव ह्लाइंग – कम्युनिटी पार्टनर्स इंटरनेशनल , म्यांमार.
- टुन पॉली – यूनाइटेड नेशन्स ग्लोबल कॉम्पैक्ट नेटवर्क इंडिया, नई दिल्ली.
- युवराज – यूनाइटेड नेशन्स ग्लोबल कॉम्पैक्ट नेटवर्क इंडिया , नई दिल्ली.

▼ विश्वविद्यालय में आध्यायनरत विभिन्न देशों के एम.बी.ए. के विद्यार्थी

विद्यार्थी प्रकाशन और सम्मेलन प्रस्तुतियाँ: अंतर्राष्ट्रीयसंबंध और शांति अध्ययन विद्यापीठ

- चक्रवर्ती, अनंता; सिद्धार्थ एस.; और क्षितिज मौर्य. **"गीग कार्यकर्ताओं के लिए शिकायत निवारण और विवाद समाधान तंत्र."** शोधपत्र प्रस्तुत किया गया संसद-25 में, जिसका आयोजन भारतीय लोक नीति स्कूल (ISPP), हौज खास, नई दिल्ली में किया गया, 2025.
- चौबे, स्वेतांग. **"हिंद-प्रशांत महासागर में भारत का महत्व: एक मानचित्रण."** अंतर्राष्ट्रीयभूगोल सम्मेलन में शोधपत्र प्रस्तुत किया गया, जिसका आयोजन दक्कन भूगोल सोसाइटी द्वारा केंद्रीय दक्षिण बिहार विश्वविद्यालय, गया में किया गया, 2025.
- चौबे, स्वेतांग. **"दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशिया में आर्थिक गलियारों का विकास."** अंतर्राष्ट्रीयसम्मेलन में शोधपत्र प्रस्तुत किया गया, विषय: भारतीय ज्ञान परंपराएँ और सतत संपर्क दृष्टि: क्षेत्रीय एकीकरण और विकास हेतु दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशिया की भूमिका,

आयोजन: अंतर्राष्ट्रीयसंबंध विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, सह-प्रायोजक: इंडियन काउंसिल ऑफ सोशल साइंस रिसर्च, इंडियन काउंसिल ऑफ वर्ल्ड अफेयर्स, और मौलाना अबुल कलाम आज़ाद एशियाई अध्ययन संस्थान, 2025.

- चौबे, स्वेतांग. **"दक्षिण चीन सागर पर संघर्ष: बढ़ते तनाव और कानूनी चुनौतियाँ."** प्रकाशित: जियोज्यूरिस-टुडे(ब्लॉग), 2025.
- चौबे, स्वेतांग. **"रूस के लिए अतिरिक्त समुद्री मार्गों की खोज."** प्रकाशित: इंटर्न्स कॉर्नर, इंडियन काउंसिल ऑफ वर्ल्ड अफेयर्स, 2025.
- खण्डेलवाल, समृद्धि; और राजीव रंजन चतुर्वेदी. **"भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक कूटनीति का लाभ."** शोधपत्र प्रस्तुत किया गया अंतर्राष्ट्रीयसंगोष्ठी में, विषय: भारत की उभरती सॉफ्ट पावर: रणनीतिक आयाम और वैश्विक पहुँच, आयोजन स्थल: इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली, आयोजन: महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के गांधीवादी और शांति अध्ययन विभाग द्वारा, सहयोगी संस्थान: इंडियन काउंसिल ऑफ वर्ल्ड अफेयर्स, अंतर्राष्ट्रीयसंबंध अध्ययन केंद्र, और इंडियन काउंसिल ऑफ सोशल साइंस रिसर्च, 2025.

कुमारी, मोनिका. **"समग्र राष्ट्र और समग्र सागर का दृष्टिकोण: एकीकृत समुद्री सुरक्षा के लिए संरचना."** प्रकाशित: संयुक्त युद्ध अध्ययन केंद्र , 2025.

- कुमारी, मोनिका. समीक्षा: **"रेडी, रेलवेंट एंड रिजर्जेंट: ए ब्लूप्रिंट फॉर द ट्रांसफॉर्मेशन ऑफ इंडिया's मिलिट्री"** — लेखक: जनरल अनिल चौहान. प्रकाशित: एविएशन एंड डिफेन्स यूनिवर्स, 2025.
- शर्मा, ऋचा. **"डार्क वेब और आतंकवाद के बीच के संबंधों की खोज."** प्रकाशित: इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ सस्टेनेबल डेवलपमेंट एंड पब्लिक पॉलिसी रिसर्च की आधिकारिक वेबसाइट पर, 2024.
- शर्मा, ऋचा. **"ग्लोबल साउथ में सुदृढ़ आपूर्ति श्रृंखलाएँ बनाना: भारत के रणनीतिक संपर्क प्रयासों से सबक."** शोधपत्र प्रस्तुत किया गया भारत और ग्लोबल साउथ में सार्वजनिक नीति पर राष्ट्रीय सम्मेलन में, आयोजन: पब्लिक पॉलिसी रिसर्च इंस्टीट्यूट, तिरुवनंतपुरम, सहयोग: इंडियन काउंसिल ऑफ सोशल साइंस रिसर्च, नई दिल्ली, 2025.
- यादव, खुशबू कुमारी. **"भारत और दक्षिण कोरिया की सेमीकंडक्टर साझेदारी: अमेरिका–चीन प्रतिद्वंद्विता के बीच रणनीतिक समन्वय."** प्रकाशित: इंटर्न्स कॉर्नर, इंडियन काउंसिल ऑफ वर्ल्ड अफेयर्स, 2025.

▲ नालंदा विश्वविद्यालय में अध्ययनरत म्यांमार विद्यार्थी समुदाय

विद्यार्थी क्लब और सोसाइटी

चाँटिंग क्लब (ध्वनि)

पाली और संस्कृत पाठ की प्राचीन परंपराओं में निहित, नालंदा का चाँटिंग क्लब भारतीय शास्त्रीय संगीत के माध्यम से विभिन्न परंपराओं के पवित्र ग्रंथों के सस्वर अध्ययन और अभ्यास के लिए समर्पित है। चाँटिंग क्लब की गतिविधियाँ मात्र ग्रंथों के पाठ से कही अधिक हैं; यह एक गहन योग-अभ्यास है जो मन को एकाग्र करता है और ध्यान की प्रक्रियाएँ भी इसमें समाहित हैं। क्लब का उद्देश्य विद्यार्थियों को प्राचीन भाषाओं की लयबद्ध, मधुर और स्वर-संधान की आध्यात्मिक विरासत से रू-ब-रू कराकर नालंदा की कालातीत परंपरा को पुनर्जीवित करना है। यह प्राचीन ध्वनि पद्धतियों पर आधारित मंत्र जप की परंपरा को समकालीन युग में प्रासंगिक बनाने का प्रयास भी है।

चाँटिंग क्लब की गतिविधियाँ उच्चारण की परिशुद्धता और सौंदर्यबोध के समझ को विकसित भी करती हैं। यह क्लब अपने गतिविधियों के माध्यम से सांस्कृतिक गहनता को आध्यात्मिकता के अभ्यास के साथ सामंजस्य स्थापित करता है।

सांस्कृतिक और फ़िल्म क्लब (अभिव्यक्ति)

सांस्कृतिक और फ़िल्म क्लब (अभिव्यक्ति) नालंदा विश्वविद्यालय के वैश्विक विद्यार्थियोंकी कलात्मक प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने और प्रस्तुत करने का एक मंच है। गायन, वाचन, नाटक और नृत्य जैसी गतिविधियाँ विद्यार्थियों की मंच-प्रस्तुति, आत्मविश्वास और अभिव्यक्ति कौशल को निखारती हैं। वर्ष 2024–25 में इस क्लब ने विश्वविद्यालय स्थापना दिवस और गणतंत्र दिवस समारोहों के साथ-साथ भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद द्वारा प्रायोजित प्रस्तुतियाँ और मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रम का सफल आयोजन किया।

फ़िल्म क्लब हर माह कला-प्रधान और साहित्यिक कृतियों पर आधारित सिनेमा की स्क्रीनिंग आयोजित करता है, जिसके बाद प्रोफेसर-मार्गदर्शित चर्चाएँ होती हैं। विद्यार्थी-संचालित इन चर्चाओं के माध्यम से गहन अवलोकन, विश्लेषणात्मक पठन और चिंतनशील निर्णय क्षमता का विकास होता है।

सांस्कृतिक क्लब ने भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के सहयोग से फरवरी 2025 में एक संयुक्त प्रस्तुति संध्या आयोजित की, जिसमें फ़िजी द्वीप से आई शोभना चैनल डांस ट्रूप ने मनमोहक नृत्य प्रस्तुति दी।

एक्सपीडिशन क्लब

नालंदा विश्वविद्यालय का एक्सपीडिशन क्लब राजगीर के आसपास की पहाड़ियों पर एक सातत्यता ट्रेक का आयोजन करता है, जिसका विषय सतत जीवन और स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र है। इसके कार्यक्रम के अंतर्गत प्रश्नोत्तरी और कचरा संग्रहण अभियान जैसी गतिविधियों के माध्यम से रोचक कार्यकलापों के साथ शिक्षा को जोड़ते हैं। यह क्लब टीम वर्क, पर्यावरण प्रबंधन और क्षेत्र की सांस्कृतिक और पारिस्थितिक विरासत संरक्षण को बढ़ावा देती है।

डिबेट सोसाइटी (डेबसोक)

यद्यपि नालंदा की स्थापना भारत में हुई थी, लेकिन परा और अपरा विद्या के एकीकृत अध्ययन के कारण इसके व्यापक और वैश्विक निहितार्थ थे। नालंदा ने परमार्थ-सत्य की खोज कर, विचारों को अत्यंत सटीकता के साथ परखा, विचारों को आकार दिया और वैश्विक दर्शन को प्रभावित किया। इसने विशिष्ट दार्शनिक अन्वेषण, सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों के विकास, तथा पृथ्वी के लिए पर्यावरण और सातत्यता संबंधी चिंताओं के समाधान को बढ़ावा दिया। यह परंपरा, जिसे कभी लुप्त माना जाता था, आज पुनर्जीवित हो रही है। हमारी डिबेट सोसाइटी (डेबसोक) एक विद्यार्थी-नेतृत्व वाली पहल है जिसका मिशन नालंदा के समानता, समावेशन, भागीदारी और बहुलता के कालातीत लोकाचार को फिर से जीना है— जो इसकी परम्परा में गहराई से निहित है।

डिबेट सोसाइटी का उद्देश्य शास्त्रार्थ की पद्धतियों को हमारे समकालीन युग के ताने-बाने में बुनना है, तथा ज्ञान के विविध क्षेत्रों में आलोचनात्मक सोच, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और बौद्धिक जिज्ञासा को विकसित करना है, ताकि हम अधिक दयालु और आशाजनक भविष्य के निर्माण की दिशा में काम कर सकें।

हेरिटेज क्लब

हेरिटेज क्लब ने भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण) के सहयोग से 'अंतर्राष्ट्रीयविरासत सप्ताह' का उत्सव विविध आकर्षक आयोजनों के साथ मनाया। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य विश्वविद्यालय और के स्तर पर सांस्कृतिक विरासत के प्रति जागरूकता और सम्मान को प्रोत्साहित करना था। कार्यक्रम में कई गणमान्य और प्रतिष्ठित वक्ताओं द्वारा व्याख्यान प्रस्तुत किए गए, जिनमें उन्होंने अपने क्षेत्रीय अनुभवों और मूर्त-अमूर्त विरासत, विश्व विरासत, पुरातत्व तथा सांस्कृतिक इतिहास पर अपने विचार और अनुभव साझा किए। इसके अतिरिक्त, इंटर- कहानी प्रतियोगिता, विरासत के ऊपर प्रश्नोत्तरी, पुरावशेषों/प्राचीन वस्तुओं की प्रदर्शनी तथा फोटोग्राफी प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया।

भारत सहित अंतर्राष्ट्रीयविद्यार्थी, जिनमें वियतनाम, इंडोनेशिया, कंबोडिया, म्यांमार, बांग्लादेश, श्रीलंका तथा अफ्रीकी देशों से आए विद्यार्थियों ने "हरेक की अपनी विरासत" विषय के अंतर्गत अपनी सांस्कृतिक विरासत और ज्ञान को आपस में साझा किया। के वैश्विक विद्यार्थियों ने सामूहिक रूप से विरासत प्रदर्शनी में पारंपरिक वस्त्र, कला सामग्री, सांस्कृतिक वस्तुएँ और पारंपरिक भोजन प्रस्तुत किए।

साहित्यिक क्लब (मंथन)

नालंदा विश्वविद्यालय का साहित्यिक क्लब, मंथन, पढ़ने, लिखने और चिंतनशील संवाद के लिए समर्पित एक जीवंत विद्यार्थी–संकाय मंच है — जो विचारों के अंतर्दृष्टि में रचनात्मक "मंथन" से प्रेरित है। क्लब ओपन-माइक, कविता और लघु-कथा पाठ, पुस्तक चर्चा, लेखक-बातचीत, रचनात्मक-लेखन कार्यशालाएँ, नाटकीय एकालाप और थिएटर प्रदर्शन, तथा बहुभाषी कहानी कहने के सत्र (हिंदी, अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं में) का आयोजन करता है। खुला, सम्मानजनक और समावेशी, मंथन क्लब एक ऐसा मंच है जहाँ विद्यार्थियोंके शब्दों को पंख लगते हैं, तर्क सुदृढ़ होते हैं, और सामूहिक स्वर सद्भाव में विकसित होते हैं।

फोटोग्राफी क्लब

नालंदा विश्वविद्यालय का फोटोग्राफी क्लब विद्यार्थियों को लेंस के माध्यम से अपने विशिष्ट दृष्टिकोण को ढूँढ़ने और फोटोग्राफी के माध्यम से व्यक्त करने के लिए एक रचनात्मक मंच प्रदान करता है। क्लब सदस्यों को फोटो वॉक, प्रदर्शनियों, कार्यशालाओं और फोटोग्राफिक तकनीकों पर चर्चा जैसी गतिविधियों में शामिल होकर तकनीकी दक्षता और सौंदर्य संवेदनशीलता विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। व्यावहारिक शिक्षण और सहयोगात्मक अन्वेषण के माध्यम से, क्लब दृश्य कथावाचन, वास्तुकला और भूदृश्य फोटोग्राफी, तथा विश्वविद्यालय परिसर के भीतर और बाहर अवलोकन की कला की गहन समझ को बढ़ावा देता है।

नालंदा परिवार

आवासीय प्रोफेसर

प्रोफेसर अभय कुमार सिंह

प्रोफेसर और डीन,
एसएचएस
विशेषज्ञता: प्राचीन भारतीय इतिहास और संस्कृति, इंडो-ग्रीक इतिहास, प्राचीन भारतीय मुद्राशास्त्र

डॉ. अमिता सत्याल

विजिटिंग फैकल्टी और एसोसिएट प्रोफेसर,
एसएचएस
विशेषज्ञता: प्रारंभिक बौद्ध दर्शन और इतिहास; पर्यावरणीय इतिहास; पारिस्थितिक ज्ञान; इतिहास - लेखन

डॉ. आनंद कुमार

सहायक प्रोफेसर,
एसएमएस
विशेषज्ञता: जल विज्ञान और जल संसाधन प्रबंधन; नीली अर्थव्यवस्था; प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन, पर्यावरण स्थिरता, और पर्यावरणीय जोखिम और सार्वजनिक स्वास्थ्य

डॉ ब्रेंडा हुआंग ज़ुआन ली

सहायक प्रोफेसर,
एसबीएसपीसीआर
विशेषज्ञता: पाली साहित्य, अभिधम्म, चीनी बौद्ध धर्म, महायान बौद्ध धर्म (चीनी और वियतनामी बौद्ध धर्म), बौद्ध दर्शन

डॉ दिव्या शर्मा

शिक्षण सहयोगी
एसएलएल/एच
विशेषज्ञता: वृद्धावस्था और स्वास्थ्य पर केंद्रित योग चिकित्सा

डॉ इलोरा त्रिवेदी

सहायक प्रोफेसर
समन्वयक, साझा बौद्ध विरासत पर एससीओ अध्यक्ष
विशेषज्ञता: पूर्व-आधुनिक दक्षिण एशिया में दृश्य संस्कृति, दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशियाई छवियों की प्रतिमा विज्ञान, दक्षिण एशियाई कला और पुरातत्व, एशिया में बौद्ध धर्म का पुरातत्व, विरासत और संग्रह इतिहास पर महत्वपूर्ण अध्ययन

गेशे लुंगटोक शेरप

शिक्षण सहयोगी
एसबीएसपीसीआर
विशेषज्ञता: तिब्बती भाषा और साहित्य; बौद्ध तर्कशास्त्र एवं दर्शन

प्रोफेसर गोदाबरिश मिश्र

प्रोफेसर और डीन
एसबीएसपीसीआर
विशेषज्ञता: भारतीय दर्शन, अद्वैत वेदांत, बौद्ध धर्म, संस्कृत और पश्चिमी व्याख्याशास्त्र

डॉ जयशंकर आर नायर

प्रोफेसर और डीन
एसईईएस (नवंबर 2024 तक)
विशेषज्ञता: रिमोट सेंसिंग, स्थलीय पारिस्थितिक प्रक्रियाएं, पारंपरिक ज्ञान का मात्रात्मक अध्ययन, आक्रामक पादप पारिस्थितिकी, ध्वनिक परिदृश्य लक्षण वर्णन

नालंदा परिवार

आवासीय प्रोफेसर

श्री कांबले धम्मपाल

टीचिंग एसोसिएट
एसएलएल/एच (मई 2024 तक)
विशेषज्ञता: अकादमिक लेखन, अंग्रेजी भाषा शिक्षण, स्थानीय भाषाओं, संस्कृतियों और साहित्य को एकीकृत करना

डॉ कशफ़ ग़नी

सहायक प्रोफेसर
एसएचएस
विशेषज्ञता: मध्यकालीन और प्रारंभिक आधुनिक भारत; भारत, मध्य और पश्चिम एशिया में सूफीवाद का इतिहास; सूफी अनुष्ठान और प्रथाएं, नेटवर्क, संस्थाएं; भारत-फारसी इतिहास और संस्कृति; सामाजिक-सांस्कृतिक संपर्क; एशियाई अंतर्संबंध

डॉ किशोर कुमार धवाला

एसोसिएट प्रोफेसर,
एसईईएस और डिप्टी डीन, अंतर्राष्ट्रीय संबंध
विशेषज्ञता: जलवायु परिवर्तन शमन, ऊर्जा नीतियां, प्राकृतिक संसाधनों का मूल्यांकन और नीली अर्थव्यवस्था

डॉ कुमुद प्रसाद आचार्य

सहायक प्रोफेसर
एसबीएसपीसीआर, एसएलएल/एच
विशेषज्ञता: संस्कृत साहित्य, काव्यशास्त्र, छंदशास्त्र, पाण्डुलिपि, हिंदू अध्ययन

डॉ मीर इस्लाम

सहायक प्रोफेसर
एसएलएल/एच
विशेषज्ञता: विश्व साहित्य, अंग्रेजी में दक्षिण एशियाई साहित्य, कथा साहित्य में चेतना का प्रतिनिधित्व, चिकित्सा मानविकी, दर्द, पीड़ा, आलोचनात्मक सोच, एशियाई सिनेमा, समकालीन अमेरिकी और पूर्वी यूरोपीय साहित्य, कला और विज्ञान, दर्शन

डॉ मुनमुन हिलोइधारी

टीचिंग फेलो
एसईईएस
विशेषज्ञता: नेट जीरो रोडमैप, जलवायु नीति के लिए एकीकृत मूल्यांकन मॉडलिंग (आईएएम), जीवन चक्र मूल्यांकन (एलसीए), एआई और डेटा-संचालित स्थिरता विश्लेषण, भू-स्थानिक नवीकरणीय ऊर्जा योजना

डॉ मुनीर अहमद माग्री

टीचिंग फेलो
एसएमएस
विशेषज्ञता: सतत आजीविका और जलवायु परिवर्तन इंटरफ़ेस; ग्रामीण विकास और सार्वजनिक नीति; कॉर्पोरेट स्थिरता और सामाजिक उत्तरदायित्व

प्रोफेसर पंचानन मोहंती

विजिटिंग प्रोफेसर और डीन (आई/सी)
एसएलएल/एच (जून 2024 तक)
विशेषज्ञता: मुख्य और अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान, भाषा खतरे का अध्ययन, अनुवाद अध्ययन

डॉ. पूजा डबराल

सहायक प्रोफेसर
एसबीएसपीसीआर और एसएलएल/एच
विशेषज्ञता: बौद्ध दर्शन, मनोविज्ञान, मध्यमक और अभिधर्म दर्शन, अवधारणा, बौद्ध तर्क, वाद-विवाद और सामाजिक पहलुओं पर अंतर्दृष्टि, बौद्ध प्रमाण और ज्ञानमीमांसा

नालंदा परिवार

आवासीय प्रोफेसर

डॉ प्रांशु समदर्शी

सहायक प्रोफेसर
एसएचएस/एसबीएसपीसीआर
विशेषज्ञता: प्राचीन भारतीय इतिहास और दार्शनिक परंपराएँ; भारत, नेपाल और तिब्बत में तांत्रिक ग्रंथ और परंपराएँ; कश्मीर शैववाद

डॉ राजीव रंजन चतुर्वेदी

एसोसिएट प्रोफेसर, एसएचएस/आईएस समन्वयक, सीबीबीएस डिप्टी डीन (विद्यार्थी कल्याण), डिप्टी डीन, एसआईपीएस
विशेषज्ञता: भारत की विदेश नीति, एशियाई क्षेत्रीय सुरक्षा और विकास, चीन-दक्षिणी एशिया रणनीतिक पहुंच, बंगाल की खाड़ी क्षेत्र, हिंद महासागर और दक्षिण चीन सागर में समुद्री सुरक्षा के मुद्दे, नीली अर्थव्यवस्था, अंतर्राष्ट्रीय कानून

डॉ राजेश्वर मुखर्जी

टीचिंग फेलो
एसबीएसपीसीआर
विशेषज्ञता: भारतीय ज्ञान प्रणाली, योग और वेदांत, शास्त्रीय-क्वांटम इंटरफेस, मस्तिष्क तरंगों का भौतिकी, चेतना के हस्ताक्षरों का गणितीय मॉडलिंग, योग और वेदांत में चेतना अध्ययन

प्रोफेसर सपना ए. नरूला

प्रोफेसर और डीन
एस.एम.एस (जून 2024 तक)
विशेषज्ञता: स्थिरता प्रबंधन और कॉर्पोरेट उत्तरदायित्व, ईएसजी, सीएसआर, सतत व्यवसाय रणनीति, तथा कृषि, ऊर्जा और उद्योग जैसे क्षेत्रों पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव

डॉ सत्यनारायण शास्त्री

एसोसिएट प्रोफेसर और डीन (प्रभारी)
एसईईएस
विशेषज्ञता: सुदूर संवेदन और भौगोलिक सूचना प्रणाली; आपदा लचीलापन और जोखिम न्यूनीकरण, पूर्वानुमान, शमन और प्रबंधन, जल विज्ञान, भू-आकृति विज्ञान और भूजल अन्वेषण, जलवायु परिवर्तन और सतत अनुकूलन

डॉ सायन भट्टाचार्य

सहायक प्रोफेसर
एसईईएस
विशेषज्ञता: पर्यावरण जैव प्रौद्योगिकी, जैव उपचार, उभरते प्रदूषकों और भूजल प्रदूषकों का अध्ययन, हिमालय में सामाजिक-पर्यावरणीय अध्ययन

डॉ सेराफिया हिएटमैन

एसोसिएट प्रोफेसर
एसबीएसपीसीआर और एसएलएल/एच (जून 2024 तक)
विशेषज्ञता: प्रारंभिक भारतीय बौद्ध धर्म और बौद्ध दर्शन, अभिसमयालानकार और संबंधित शैक्षिक ग्रंथ, मध्यमक अध्ययन, और नागार्जुन और भावीवका के कार्य

डॉ श्रीशा उडुपा

एसोसिएट प्रोफेसर
एसएलएल/एच और एसएचएस (जनवरी 2025 तक)
विशेषज्ञता: आलोचनात्मक मानविकी, सांस्कृतिक इतिहास, स्मृति की संस्कृतियाँ, डिजिटल मानविकी, सांस्कृतिक अध्ययन

डॉ श्याम एस. फर्त्याल

एसोसिएट प्रोफेसर
एसईईएस (मार्च 2025 तक)
विशेषज्ञता: बीज पारिस्थितिकी, नागरिक विज्ञान, वन अग्नि पारिस्थितिकी, सूक्ष्म जलवायु पारिस्थितिकी, अंकुरण पारिस्थितिकी और जैव विविधता संरक्षण

नालंदा परिवार

आवासीय प्रोफेसर

डॉ स्मिता सिंह

टीचिंग फेलो
एसएलएल/एच
विशेषज्ञता: स्वास्थ्य और बीमारी कथाओं पर ध्यान देने के साथ अंग्रेजी साहित्य में लिंग और कामुकता, चिकित्सा मानविकी

प्रोफेसर सुशांत कुमार मिश्रा

प्रोफेसर और डीन
एसएलएल/एच
विशेषज्ञता: अनुवाद अध्ययन, तुलनात्मक साहित्य, सांकेतिकता (भारतीय और यूरोपीय परंपराएँ)

डॉ तोसबंत पधान

टीचिंग फेलो
एसएचएस
विशेषज्ञता: क्षेत्रीय पुरातत्व, प्रागैतिहासिक पुरातत्व, शैल कला, ऐतिहासिक पुरातत्व, प्रायोगिक पुरातत्व, भू-पुरातत्व, नृजातीय पुरातत्व, डिजिटल पुरातत्व और विरासत प्रबंधन

नालंदा परिवार

विजिटिंग फैकल्टी

डॉ अभिषेक कुमार

साउथेम्प्टन यूनिवर्सिटी (यूके)

डॉ अघिला शशिधरन

आईआईएफएम भोपाल

प्रोफेसर अंबिका ज़ुत्शी

ऑस्ट्रेलियाई कैथोलिक यूनिवर्सिटी

प्रोफेसर अमित डे

कलकत्ता विश्वविद्यालय

प्रोफेसर आनंदी पांडे

आईआईएम लखनऊ

प्रोफेसर अरिंदम चक्रवर्ती

हवाई यूनिवर्सिटी और अशोक विश्वविद्यालय

प्रोफेसर आशीष माथुर

सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ हरियाणा

प्रोफेसर सीज़र मारोला

हार्वर्ड यूनिवर्सिटी की स्थिरता सलाहकार समिति

डॉ ग्राहम शेरबट

सो. चा एल.एल.सी (यू.एस.एआ.ई.डी, जाम्बिया) के निदेशक

डॉ गोपाल सारंगी

टेरी-एसएएस

सुश्री जयति तलपात्रा

एमडीआई और टेरी-एसएएस

प्रोफेसर केटीएस सराओ

दिल्ली विश्वविद्यालय

नालंदा परिवार

विजिटिंग फैकल्टी

प्रोफेसर मौलूद मदौन

ईएसएसईसी पेरिस

प्रोफेसर मृणालिनी साहा

आईआईएमटी
गाजियाबाद

डॉ प्रजल प्रधान

ग्रोनिंगन यूनिवर्सिटी

प्रोफेसर रविंदर कुमार

जामिया मिलिया इस्लामिया

डॉ रोहित शर्मा

खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ),
रोम

प्रोफेसर सत परसहर

कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी

डॉ श्रीरंगन राजगोपाल

सीईओ, यूमोबी सॉल्यूशंस (यूएसए)

सुश्री सिमरन सिन्हा

ग्रीन हाइड्रोजन संगठन, स्विट्जरलैंड

डॉ सुगंधा श्रीवास्तव

ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी

डॉ सुनील कुमार

दिल्ली विश्वविद्यालय

प्रोफेसर वागिश शुक्ला

आईआईटी दिल्ली

नालंदा परिवार

प्रशासनिक एवं सहायक कर्मचारी

डॉ. रमेश प्रताप सिंह परिहार

रजिस्ट्रार

श्री वी.आर. श्रीनिवासन

वित्त अधिकारी

श्री नागेंद्र शरण आंतरिक

आंतरिक लेखा परीक्षा अधिकारी

श्री जॉय चौधरी

कार्यकारी अभियंता (सिविल)

श्री मनोज कुमार

कार्यकारी अभियंता (इलेक्ट्रिकल)

डॉ. एस. श्याम सुंदर राव

उप पुस्तकालयाध्यक्ष

डॉ. बिस्वाचिंतमनी अंबिका

सहायक रजिस्ट्रार (शिक्षाविद)

मोहम्मद अरशद इकबाल

सहायक अभियंता (सिविल)

सुश्री मोनिका आहूजा

सहायक वित्त अधिकारी

श्री के. सीता राम कुमार

प्रशासनिक अधिकारी

श्री सुधीर कुमार पट्टनायक

प्रशासनिक अधिकारी

श्री आदित्य बल्लभ मोहंती

प्रशासनिक अधिकारी

सुश्री स्वाति कृष्ण

कनिष्ठ अभियंता (इलेक्ट्रिकल)

श्री राज आर्यन

कनिष्ठ अभियंता (सिविल)

श्री एल विजय भास्कर

सहायक लाइब्रेरियन

श्री पुष्कर कुमार

कनिष्ठ अभियंता (इलेक्ट्रिकल)

नालंदा परिवार

प्रशासनिक एवं सहायक कर्मचारी

सुश्री जयिता मजूमदार

सहायक लाइब्रेरियन

श्री अनिल कुमार एम.वी.

वरिष्ठ सहायक

श्री सागर

वरिष्ठ सहायक

श्री प्रसून

प्रशासनिक सहायक

श्री प्रमोद कुमार गुप्ता

खाता सहायक

सुश्री आभा सेठी

सहायक

श्री मृत्युंजय पांडे

सहायक

श्री सनी कुमार

नेटवर्क एवं सिस्टम प्रशासक

श्री मोहम्मद मोहसिन

सहायक

सुश्री कुमारी प्रज्ञा

निजी सहायक, वीसी कार्यालय

सुश्री ऋचा देवयानी

वित्त सहायक

श्री अमरजीत वर्मा

जूनियर मैनेजर (संचार)

श्री पिंटू कुमार सिंह

जूनियर सहायक सह टाइपिस्ट

श्री संदीप कुमार सिंह

जूनियर मैनेजर (शैक्षणिक/प्रवेश)

सुश्री प्रियंका सिन्हा

जूनियर सहायक सह टाइपिस्ट

श्री अनिकेत कुमार

जूनियर असिस्टेंट सह टाइपिस्ट

नालंदा परिवार

प्रशासनिक एवं सहायक कर्मचारी

श्री आशीष कुमार

जूनियर असिस्टेंट सह टाइपिस्ट

श्री मुन्ना कुमार

जूनियर मैनेजर (तकनीकी सुविधाएं)

श्री गौतम कुमार रेड्डी

जूनियर मैनेजर (गेस्ट हाउस)

श्री नवीन कुमार उपाध्याय

सहायक अधिकारी

डॉ. हेमंत मनीशी शुक्ला

सहायक पुरालेखपाल

श्री परीक्षित नारायण सुरेश

कार्यालय सहायक

सुश्री बानी अरोड़ा

कार्यालय समन्वयक

श्री धनंजय पांडे

केयरटेकर

श्री अनुज कुमार

आईटी-तकनीशियन

श्री अगम सोहम कुमार

आईटी-तकनीशियन

श्री निरंजन कुमार

प्लंबर

श्री बीरबल महतो

इलेक्ट्रीशियन

श्री राजा

एमटीएस

श्री तेज प्रताप

एमटीएस

श्री विनोद

कार्यालय कर्मचारी

श्री अरविंद कुमार

एमटीएस

नालंदा परिवार

प्रशासनिक एवं सहायक कर्मचारी

श्री राजेंद्र सिंह

एमटीएस

श्री कौशल कुमार रविदास

एमटीएस

श्री आनंद कुमार मालाकार

एमटीएस

सुश्री प्रियंका कुमारी

एमटीएस

श्री हीरा लाल

माली

आभार

यह वार्षिक प्रतिवेदन एक सामूहिक प्रयास का परिणाम है। विश्वविद्यालय, इस प्रतिवेदन के संकलन, संपादन एवं समीक्षा में अपना सहयोग प्रदान करने के लिए माननीय कुलपति, कुलसचिव, वित्त अधिकारी, डीन और निम्नलिखित शिक्षकगण, कर्मीवृंद एवं विद्यार्थीगण सहित सभी योगदानकर्ताओं के प्रति आदरपूर्वक अपनी गहन कृतज्ञता व्यक्त करता है:

डॉ. आनंद कुमार (एस.एम.एस), डॉ. इलोरा त्रिबेदी (एस.एच.एस), डॉ. कशफ़ ग़नी (एस.एच.एस), डॉ. मीर इस्लाम (एस.एल.एल/एच), डॉ. मुनीर अहमद मग़री (एस.एम.एस), डॉ. पूजा डबराल (एस.बी.एस.पी.सी.आर एवं एस.एल.एल/एच), डॉ. प्रांशु समदर्शी (एस.एच.एस तथा एस.बी.एस.पी.सी.आर), डॉ. राजीव रंजन चतुर्वेदी (एस.आई.आर.पी.एस), डॉ. सत्यनारायण शास्त्री (एस.ई.ई.एस), तथा डॉ. तोसबंत पधान (एस.एच.एस)।

इसके अतिरिक्त, हम संचार कार्यालय के प्रबंधक के सहयोग हेतु आभारी हैं। हिंदी संपादन में सहयोग के लिए श्री मितरंजन कुमार (विद्यार्थी, आर्कियोलॉजी), सुश्री रुद्रजा रॉय (विद्यार्थी, आर्कियोलॉजी), और सुश्री प्रगति प्रेरणा (विद्यार्थी, हिन्दू स्टडीज) के प्रति भी हम आभारी हैं।

डिजाइनिंग टीम

श्री सौम्यजीत मुखर्जी
एमबीए विद्यार्थी, एसएमएस

श्री तेजस गुरव
एमबीए विद्यार्थी, एसएमएस

डॉ इलोरा त्रिवेदी
सहायक प्रोफेसर, एसएचएस

आँकड़ों के आईने से

देश-वार विद्यार्थी संरचना

कार्यक्रम-वार विद्यार्थी संरचना

स्नातक हुए विद्यार्थी

विद्यार्थियोंके शोध-प्रबंध/कॉर्पोरेट अनुभव

प्रदत्त विद्यार्थीवृत्तियाँ

स्नातकोत्तर कार्यक्रमों में नामांकित विद्यार्थियोंकी स्थिति

पोस्ट-डॉक्टरल फेलो

ग्लोबल डॉक्टरेट कार्यक्रम

देशों के अनुसार विद्यार्थियों की संख्या 2024-25

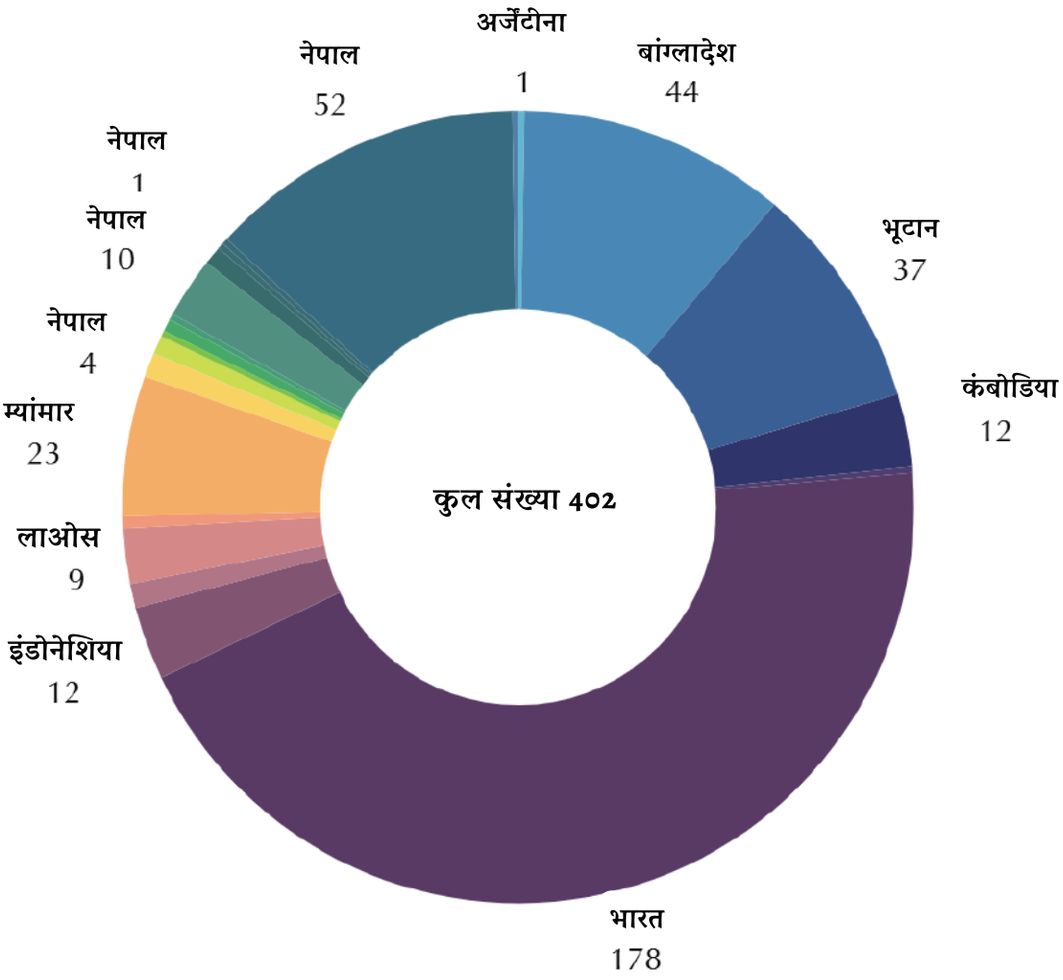

अकादमिक कार्यक्रम अनुसार विद्यार्थियों की संख्या 2024-25

कुल नामांकन : शैक्षणिक वर्ष 2024–25

आवासीय कार्यक्रम (स्नातकोत्तर एवं डॉक्टोरल)	402	अल्पकालिक शैक्षणिक कार्यक्रम — प्रमाणपत्र एवं डिप्लोमा पाठ्यक्रम	868	**कुल योग**	1270

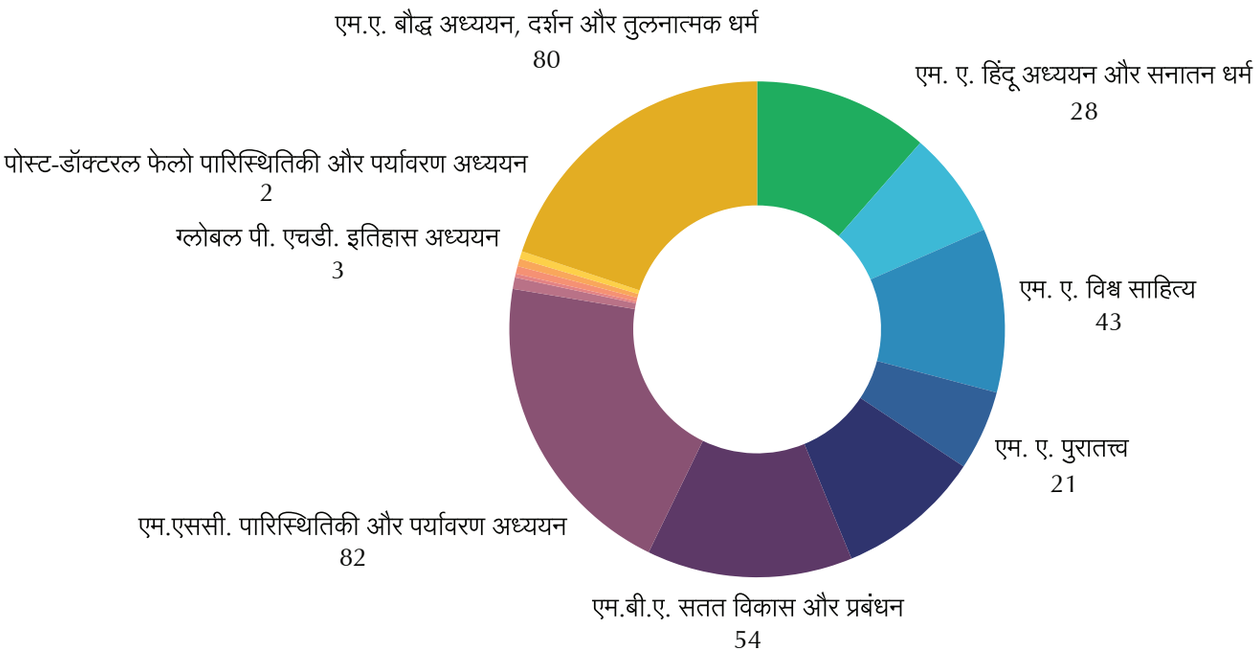

- एम. ए.बौद्ध अध्ययन, दर्शन और तुलनात्मक धर्म
- एम. ए. इतिहास अध्ययन
- एम. ए. हिंदू अध्ययन और सनातन धर्म
- एम. ए. विश्व साहित्य
- एम. ए. पुरातत्व
- एम. ए. अंतर्राष्ट्रीय संबंध और शांति अध्ययन
- एम.ए. बौद्ध अध्ययन, दर्शन और तुलनात्मक धर्म
- एम.एससी. पारिस्थितिकी और पर्यावरण अध्ययन
- एम.बी.ए. सतत विकास और प्रबंधन
- ग्लोबल पी. एचडी. इतिहास अध्ययन
- ग्लोबल पी. एचडी. इतिहास अध्ययन
- पोस्ट-डॉक्टरल फेलो इतिहास अध्ययन
- पोस्ट-डॉक्टरल फेलो पारिस्थितिकी और पर्यावरण अध्ययन

स्नातकोत्तर विद्यार्थी 2024-25

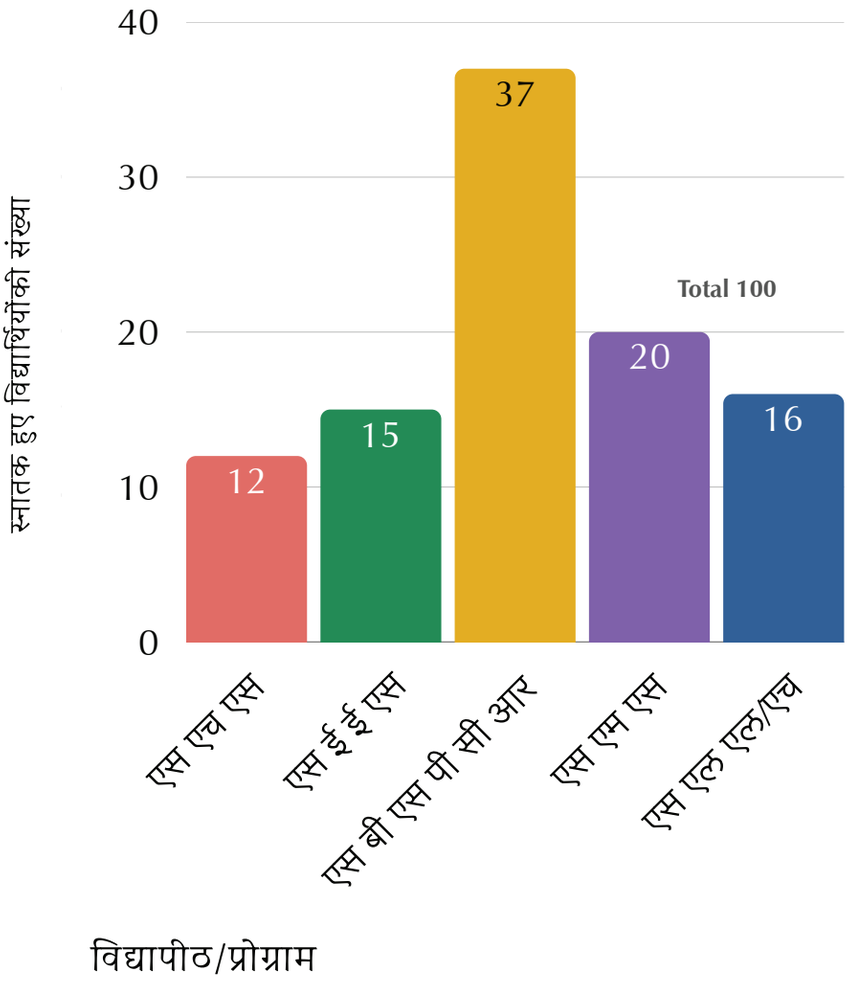

विद्यार्थियों के शोधप्रबंध / कॉर्पोरेट अनुभव (2024-25)

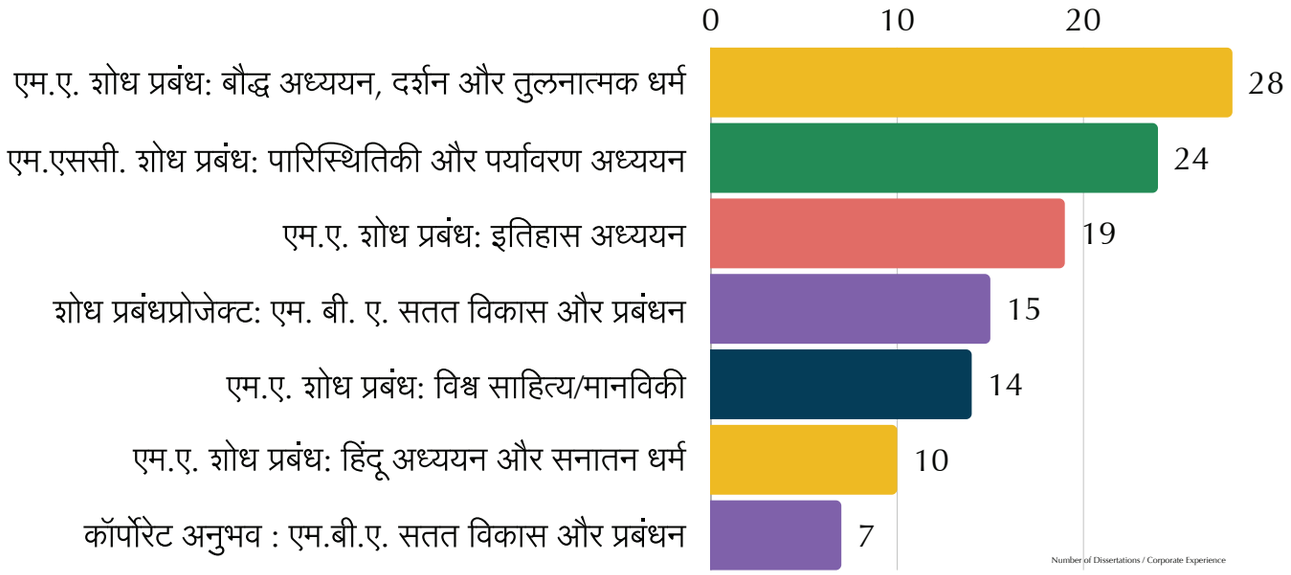

छात्रवृत्ति - 2024-25

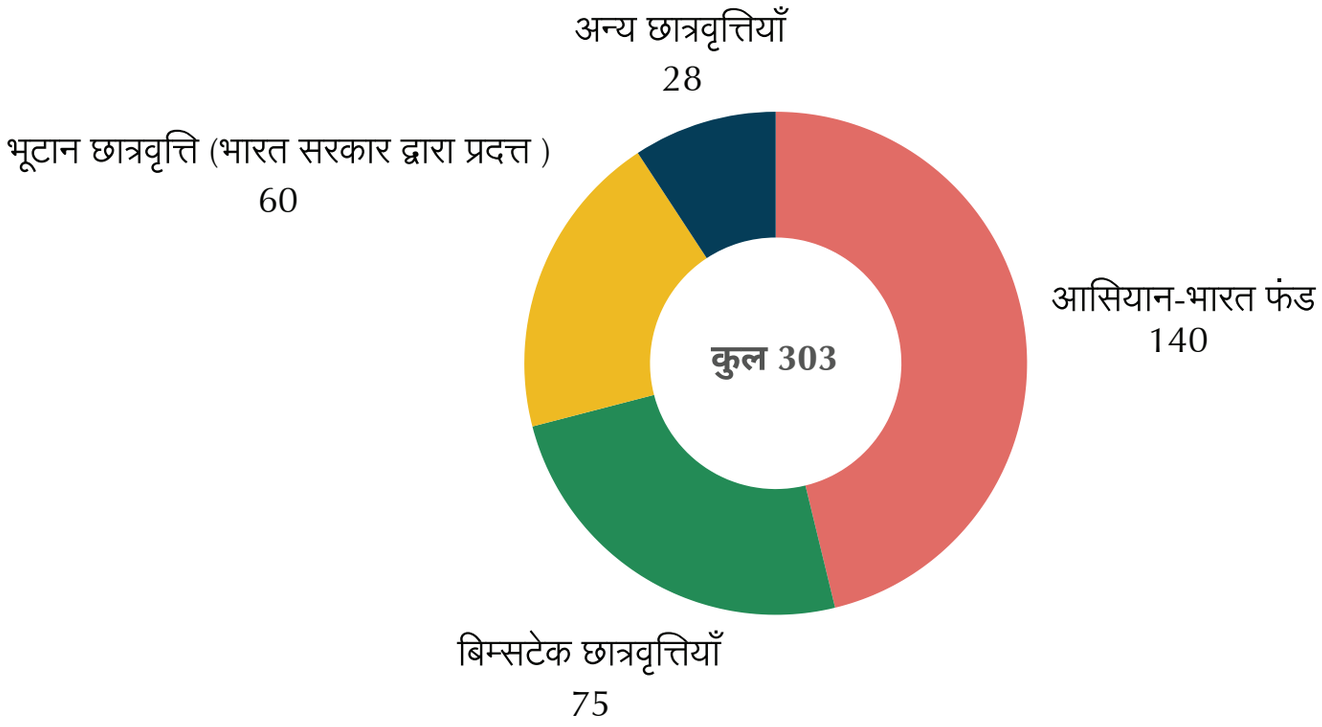

स्नातकोत्तर कार्यक्रमों में नामांकित विद्यार्थियोंकी स्थिति (पिछले 3 वर्ष)

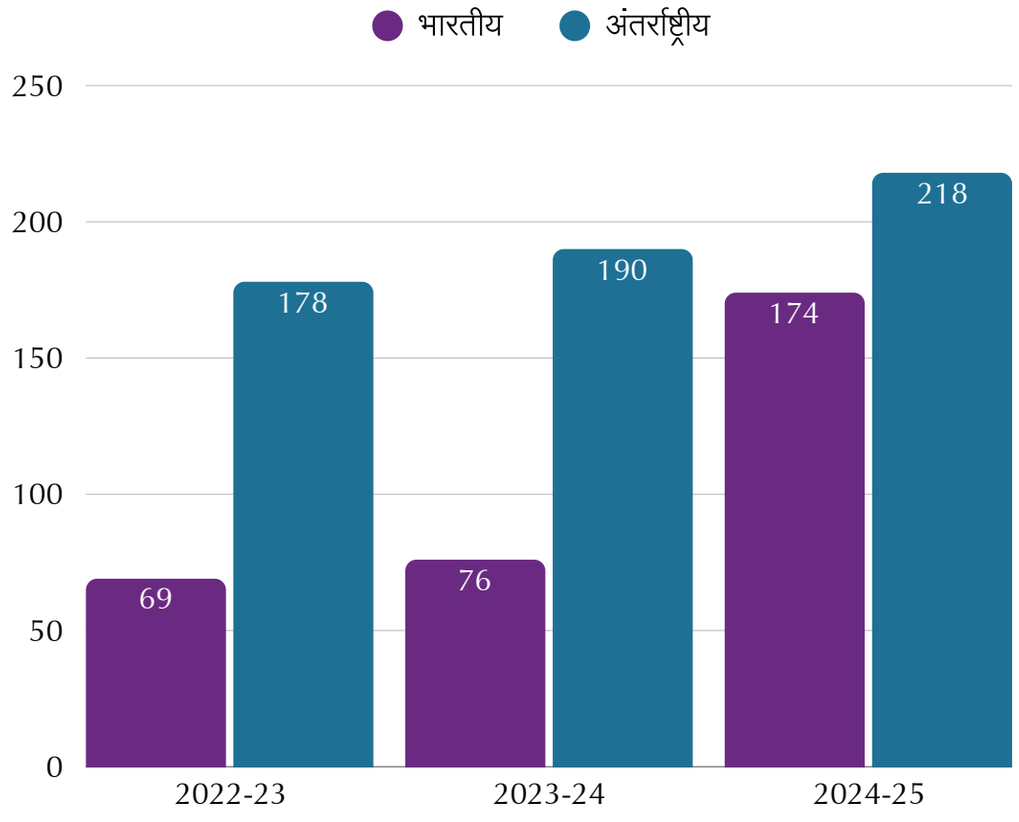

पोस्ट-डॉक्टरेट फ़ेलो 2024-25

आजाद हिन्द जी नंदा

इतिहास अध्ययन विद्यापीठ
क्षेत्र: बंगाल की खाड़ी से परे सांस्कृतिक और वाणिज्यिक संबंधों का मूल्यांकन

गरिमा खाँसाली

इतिहास अध्ययन विद्यापीठ
क्षेत्र: प्राचीन भारत में बालग्रह की अवधारणा का अन्वेषण

विष्णु मुरारी

पारिस्थितिकी और पर्यावरण अध्ययन विद्यापीठ
क्षेत्र: भारत में विभिन्न वायु प्रदूषकों की वास्तविक-समय भिन्नता और प्रवृत्ति-विश्लेषण

रामीज अहमद

पारिस्थितिकी और पर्यावरण अध्ययन विद्यापीठ
क्षेत्र: भारत में आक्रामक विदेशी पौधों के पारिस्थितिक प्रभावों का एक अनुभवजन्य मूल्यांकन

ग्लोबल डॉक्टरेट प्रोग्राम 2023-27

डो क्वांग होआंग थांग

इतिहास अध्ययन विद्यापीठ
क्षेत्र: प्रारंभिक भारत में बौद्ध धर्म और राज्य नीति: शास्त्रीय श्रोतों पर आधारित एक अध्ययन

फ्रा देचखजोर्न फुथिप

इतिहास अध्ययन विद्यापीठ
क्षेत्र: 21वीं सदी के मेकांग क्षेत्र में नालंदा की शैक्षिक विरासत

विजेसिंघे आराच्चिगे लेशा पियुमी दिलहारा

इतिहास अध्ययन विद्यापीठ
क्षेत्र: श्रीलंकाई बौद्ध कला में अवलोकितेश्वर की बदलती अवधारणा और भारत के साथ संबंध

ले होआंग कैट ट्राम

बौद्ध अध्ययन, दर्शन और तुलनात्मक धर्म विद्यापीठ
क्षेत्र: योगाचार परंपरा में आठ चेतनाओं की संज्ञानात्मक प्रक्रिया

हो थी बिच फुओंग

बौद्ध अध्ययन, दर्शन और तुलनात्मक धर्म विद्यापीठ
क्षेत्र: वियतनाम में बौद्ध धारणी पाठ: ग्रंथ, प्रथाएं और भारतीय संबंध

एस्मा तुर्कमेन

भाषा और साहित्य/मानविकी विद्यापीठ
क्षेत्र: तुर्की और भारतीय संस्कृतियों में पशु रूपक कथानक

वार्षिक लेखा

2024-25

नालंदा विश्वविद्यालय
31 मार्च 2025 के लिए तुलन पत्र

राशि रुपये में

निधि स्रोत	अनुसूची	वर्तमान वर्ष	विगत वर्ष
समग्र/ पूंजीगत निधि	1	16,82,10,93,257.00	15,33,52,64,493.00
निर्दिष्ट/उद्दिष्ट /धर्मदाय निधि	2	25,76,98,507.00	23,96,75,098.00
चालू देनदारी और प्रावधान	3	2,01,77,38,943.00	1,69,76,93,056.00
कुल		19,09,65,30,707.00	17,27,26,32,647.00

पूँजी उपयोग	अनुसूची	वर्तमान वर्ष	विगत वर्ष
अचल संपत्तियां	4		
मूर्त परिसंपत्तियां		5,17,98,32,179.00	4,38,52,73,066.00
अमूर्त परिसंपत्तियां		1,75,540.00	5,39,459.00
पूंजीगत कार्य प्रगति पर		11,13,01,78,520.00	10,60,64,45,038.00
उद्दिष्ट /धर्मदाय निधि का निवेश	5		
दीर्घावधि		25,44,52,220.00	23,75,25,875.00
लघु अवधि			
वर्तमान संपत्तियाँ	6	2,41,47,10,563.00	1,79,42,53,324.00
ऋण, अग्रिम और जमा	7	11,71,81,685.00	24,85,95,885.00
कुल		19,09,65,30,707.00	17,27,26,32,647.00

महत्वपूर्ण लेखा नीतियां 21

आकस्मिक देयताएं और लेखों पर टिप्पणियाँ 22

V.R. Srinivasan
Finance Officer

नालंदा विश्वविद्यालय
31 मार्च 2025 को समाप्त वर्ष के लिए आय व्यय लेखा विवरण

राशि रुपये में

विवरण	अनुसूची	वर्तमान वर्ष	विगत वर्ष
(ए) आय			
शैक्षणिक प्राप्तियां	8	6,73,50,995.00	4,42,69,868.00
अनुदान/अनुवृत्ति	9	37,41,44,834.00	39,77,67,439.00
निवेश से आय	10	7,40,90,844.00	2,29,89,078.00
अर्जित ब्याज	11	44,86,378.00	1,32,54,274.00
अन्य आय	12	1,98,15,470.00	1,71,00,072.00
पूर्व अवधि आय	13	15,68,874.00	7,30,484.00
कुल (ए)		54,14,57,395.00	49,61,11,215.00
(बी) व्यय			
कर्मचारी भुगतान और लाभ (स्थापना व्यय)	14	16,27,64,930.00	16,54,02,317.00
शैक्षणिक व्यय	15	3,57,29,547.00	3,77,15,051.00
प्रशासनिक और सामान्य व्यय	16	16,76,20,668.00	17,02,05,285.00
परिवहन व्यय	17	25,87,498.00	45,87,446.00
मरम्मत और अनुरक्षण	18	40,72,626.00	37,87,534.00
मूल्यह्रास	4	29,26,35,357.00	23,44,33,754.00
अन्य व्यय	19	3,81,049.00	1,95,306.00
पूर्व अवधि व्यय	20	9,88,516.00	1,58,74,500.00
कुल (बी)		66,67,80,191.00	63,22,01,193.00
पूंजीगत निधि में हस्तान्तरित अधिशेष/ घाटा की राशि		-12,53,22,796.00	-13,60,89,978.00
महत्वपूर्ण लेखांकन नीतियां	21		
आकस्मिक देयताएं और लेखों पर टिप्पणियाँ	22		

V.R. Srinivasan
Finance Officer

नालंदा विश्वविद्यालय

31 मार्च, 2025 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्तियां और भुगतान की लेखा विवरण

राशि रुपये में

प्राप्तियां	वर्तमान वर्ष	विगत वर्ष
1) प्रारंभिक शेष		
रोकड़ शेष	-	-
बैंक में रोकड़	-	-
धर्मादाय निधि से निवेश	23,75,25,875.00	22,23,18,765.00
बचत खाता	85,39,29,005.00	35,55,60,521.00
जमा खाता	92,22,10,634.00	36,78,73,521.00
2) प्राप्त अनुदान	-	
भारत सरकार के विदेश मंत्रालय से	2,00,00,00,000.00	3,00,00,00,000.00
3)उद्दिष्ट/ धर्मादाय निधि से प्राप्त	-	
4) प्रायोजित परियोजना के विरुद्ध प्राप्ति	-	
परियोजना नेली छात्रवृति		8,60,507.00
प्रोफेसर सुनैना सिंह स्कॉलरशिप		1,75,000.00
5) प्राप्त ब्याज	-	
सावधि जमा/बचत खाते पर ब्याज (अनुदान)	1,21,05,792.00	2,21,64,578.00
अग्रिम पर ब्याज	71,73,614.00	1,62,16,894.00
6) आसियान से छात्रवृति के लिए प्राप्ति	17,22,29,931.00	-
7)शैक्षणिक प्राप्तियाँ	5,09,09,424.00	3,20,45,223.00
8) निवेश से आय	-	
उद्दिष्ट / धर्मादाय निधि से (कुल)	1,69,00,338.00	1,52,91,110.00
अन्य निवेश	8,96,23,728.00	3,90,19,867.00
9) अन्य आय	25,11,365.00	12,15,993.00
10) अन्य प्राप्तियाँ	-	
i) प्रतिभूति जमा	3,57,89,773.00	5,33,40,169.00
ii) ईएमडी	14,30,000.00	1,35,000.00
iii) पूर्व अवधि आय	15,68,874.00	-
iv) जमानती रुपया (शुद्ध)	15,21,806.00	9,56,596.00
v) कर्मचारी से अग्रिम (वसूली)	1,05,274.00	17,377.00
vi) व्यवहार्यता अंतर निधि की प्राप्ति	70,03,694.00	
vii) टीडीएस रिफंड प्राप्त हुआ	-	25,130.00
viii) आईसीसीआर-वैशाली महोत्सव	-	2,62,768.00
ix) सी-20 (नालंदा विश्वविद्यालय के सहयोग से आयोजित)	-	1,34,505.00
x) बुद्ध पर सामुदायिक जुड़ाव	-	50,000.00
xi) लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय (भारतीय भाषा समिति)	-	2,82,299.00
xii) भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएसएसआर)	5,00,000.00	
xii) फेलोशिप-समग्र विज्ञान अनुसंधान	2,20,000.00	
xiv) राष्ट्रीय सामाजिक सुरक्षा संस्थान(एनआईएसडी)	3,34,400.00	
xv)संबद्धता प्राप्ति शुल्क	4,50,000.00	
xvi)देशकल सोसायटी	-	1,16,360.00
xvii)अनुसंधान और सूचना प्रणाली	-	4,78,944.00
xviii)आईसीपीआर-राष्ट्रीय व्याख्यान श्रृंखला	1,00,000.00	35,000.00
11) ठेकेदार को अग्रिम (वसूली)	19,04,75,289.00	38,97,81,344.00
12) ठेकेदारों से अन्य कटौती	5,78,31,610.00	17,49,17,633.00
13) सांविधिक करों की वसूली	8,21,16,732.00	10,34,87,563.00
कुल	**4,74,45,67,158.00**	**4,79,67,62,667.00**

राशि रुपये में

भुगतान	वर्तमान वर्ष	विगत वर्ष
1)व्यय		
स्थापना व्यय		
वेतन और भत्ते	15,53,27,558.00	16,16,14,494.00
शैक्षणिक व्यय	3,35,02,558.00	3,82,15,025.00
प्रशासनिक व्यय	-	
आधारभूत संरचना	5,26,77,118.00	7,69,07,185.00
संचार	49,41,430.00	1,22,33,924.00
अन्य	11,25,16,627.00	9,66,96,846.00
वित्तीय लागत	25,714.00	2,19,871.00
परिवहन खर्च	26,31,654.00	48,85,832.00
मरम्मत एवं रखरखाव	42,26,750.00	39,00,193.00
2) अचल संपत्तियों और पूंजीगत कार्य प्रगति पर व्यय	-	
अचल संपत्तियों की खरीद	20,76,427.00	15,59,74,383.00
पूंजीगत कार्य प्रगति	1,37,02,94,303.00	1,81,83,15,727.00
3) उद्दिष्ट/ धर्मादाय निधि के तहत भुगतान		
4) प्रायोजित परियोजनाओं से भुगतान	-	-
5) विदेश मंत्रालय को ब्याज का भुगतान	4,07,51,363.00	2,88,91,221.00
6) जमा और अग्रिम	-	
सुरक्षा जमा की वापसी	-	-
रोकी गई राशि जारी करना	16,55,11,855.00	7,43,12,027.00
ठेकेदार को अग्रिम	5,89,52,121.00	15,11,13,924.00
कर्मचारी को अग्रिम	-	53,932.00
ईएमडी जारी करना	43,80,000.00	30,00,000.00
7) छात्रवृत्ति के तहत छात्रों को वजीफा और यात्रा व्यय का भुगतान	1,72,35,259.00	1,63,79,843.00
8) वैधानिक करों का भुगतान	7,89,11,254.00	12,24,32,306.00
9) 2020-22 और 2021-23 के बैच के लिए आसियान फंड की बिना खर्च की गई शेष राशि का रिफंड	-	1,39,80,529.00
10)डीएसटी परियोजना का खर्च नहीं किया गया संतुलन-योग का दीर्घकालिक प्रभाव-धनवापसी	-	21,63,602.00
11) एआईएनयू संकाय विनिमय कार्यक्रम-यात्रा और अन्य खर्चों की प्रतिपूर्ति	11,62,127.00	4,09,936.00
12)अमानत राशि का रिफंड	-	9,78,358.00
13)छात्र शुल्क का रिफंड	13,29,285.00	4,17,996.00
14)आईसीपीआर व्यय	28,304.00	-
15)Ph.D स्टाइपेंड का भुगतान	1,58,389.00	-
16)भारतीय भाषा समिति व्यय	1,43,499.00	-
17)समापन शेष राशि	-	-
हाथ में नकदी		
बैंक में रोकड़		
धर्मादाय निधि से निवेश	25,44,52,220.00	23,75,25,874.00
बचत खाता	14,20,46,100.00	85,39,29,005.00
जमा खाता	2,24,12,85,243.00	92,22,10,634.00
कुल	**4,74,45,67,158.00**	**4,79,67,62,667.00**

V.R. Srinivasan
Finance Officer

नालंदा समाचार पत्रों में..

THE HINDU

PM inaugurates Nalanda University campus in Bihar

The Hindu Bureau
PATNA

Glorious expanse: The campus of Nalanda University has an amphitheatre that can seat 2,000 people. @ICHIRAGPASWAN/X

Prime Minister Narendra Modi on Wednesday inaugurated the new campus of Nalanda University, an international university, close to the site of the ancient ruins of Nalanda at Rajgir in Bihar.

Asserting that Nalanda is a symbol of India's academic heritage and vibrant cultural exchange, Mr. Modi said, "Nalanda is the proclamation of this truth that books may burn in the flames of fire, but the flames of fire cannot destroy knowledge. Nalanda is an identity, respect, and pride."

Wide representation

He expressed his happiness over the presence of representatives of many countries for the inauguration. He said the new campus proved that Bihar was on the path of development.

Parliament established Nalanda University through the Nalanda University Act, 2010.

The Act formed the basis for implementing the decisions arrived at the second East Asia Summit in the Philippines in 2007 for the establishment of the university as an "international institution for pursuit of intellectual, philosophical, historical and spiritual studies" and at the fourth summit in Thailand in 2009.

It started functioning in 2014 from a makeshift location with 14 students and the construction work started in 2017.

External Affairs Minister S. Jaishankar and 17 Ambassadors from participating countries attended the event. Bihar Governor Rajendra Arlekar, Chief Minister Nitish Kumar, Deputy CMs Samrat Choudhary and Vijay Sinha were present.

Before inaugurating the new campus, the PM visited the ancient ruins of Nalanda and planted a sapling of the Bodhi tree brought from Bodh Gaya. Nalanda University Chancellor Arvind Panagariya and Interim Vice-Chancellor Abhay Kumar Singh were present.

In his address, Mr. Modi said, "The renaissance of Nalanda University near its ancient ruins will introduce India's potential to the world. Nalanda is not just a renaissance of India's past, the heritage of many countries and Asia is linked to it. In days to come, Nalanda University will once again become a major centre for our cultural exchange."

The ancient Nalanda University was established in the 5th century and attracted students from all over the world. The ancient university flourished for 800 years before it was burnt down by invaders in the 12th century.

Beginning of golden era of India: PM at Nalanda

HT Correspondent
letters@hindustantimes.com

PM Modi at the ruins of ancient Nalanda University in Bihar. ANI

PATNA: Prime Minister Narendra Modi on Wednesday said that the inauguration of the campus of Nalanda University, close to the ancient ruins of Nalanda, symbolised the beginning of the golden era for India and an introduction of the country's ability to recreate its glorious history.

"The books can be destroyed in flames, but not knowledge. A country that protects its human values knows how to recreate its history," he said after inaugurating the sprawling 455-acre state-of-the-art campus of the university. He said he was fortunate to be in Nalanda within 10 days of the start of his third term and he viewed it as a good omen.

Modi earlier visited the ruins of the ancient Nalanda University, which are said to have been destroyed by Bakhtiar Khilji. The new Nalanda University was conceived as an icon of Asian renaissance and the voice of an Enlightened Asia.

Bihar governor Rajendra Vishwanath Arlekar, chief minister Nitish Kumar, external affairs minister S Jaishankar, his deputy Pavitra Margherita, heads of mis-

continued on →7

R-Day tableau to showcase Nalanda univ's revival

Faryal Rumi
@timesofindia.com

Theme of tableau: History and revival of Nalanda University
Selected after 8 years
Last theme selected in 2016: Champaran Satyagraha of 1917
Selection criteria: Visual appeal, impact, idea, music and degree of detailing

OTHER THEMES THAT COULDN'T MAKE IT
2017 Vikramshila, an ancient education centre
2018 Chhath festival
2019 Prohibition

ANCIENT NALANDA UNIVERSITY According to its website, Nalanda was the first residential university of world, founded by emperor Kumaragupta in 427CE. The ruins of the ancient Nalanda University is a Unesco World Heritage site. A new campus of Nalanda University, located near the ruins, was formally inaugurated by PM Narendra Modi in June.

Patna: After a lull of eight years, Bihar will showcase its tableau at the Republic Day 2025, parade on Kartavya Path in New Delhi. The theme of the state's tableau is the glorious history of the ancient Nalanda University and its revival with the setting up of a new campus near the ruins.

The officials of the IPRD told this newspaper that it is essentially aligned with the Govt of India's theme, 'Swarnim Bharat: Virasat aur Vikas'. "With our tableau, we will showcase how the Bihar and central govts have jointly worked on the revival of our ancient educational institution, Nalanda University. We will highlight both the Nalanda ruins and the new university campus," he said.

According to sources at the IPRD, proposals were sent for different themes, including Chhath, Jal-Jeevan-Hariyali scheme, eco-tourism for sustainable development and bio-conservation, and the revival of Nalanda University.

Earlier the designs were sent to the Centre by state information and public relations department, following which multiple review sessions took place in New Delhi with an expert committee under the defence ministry. The committee, comprising experts from different fields like art, culture, music and dance, held four to five meetings to evaluate various submissions.

Before being shortlisted, the state's design underwent several moderations and refinements. "The empanelled agency has been selected for conceptualisation, designing, fabrication and presentation of the tableau. The work on the fabrication of the tableau has already started. Altogether, 15 states have been selected for the display of tableaux during the R-Day Parade in New Delhi. The letter from the Centre was received here last Saturday," an official said.

The tableaux are selected after several rounds of examination, including a thorough analysis of their theme, artistic distinctiveness and originality, expressive innovation, concept, design and visual impact.

The ancient Nalanda University, the ruin of which is a Unesco World Heritage site, was the first residential varsity of world, founded by emperor Kumaragupta in 427CE. This year, a new campus, located near the ancient university's heritage site, was formally inaugurated by Prime Minister Narendra Modi in June. After inaugurating the campus, the PM said that the revival of Nalanda will mark the beginning of the golden age of India.

Before this, Bihar's tableau was last selected in 2016, when the theme was Mahatma Gandhi's Champaran Satyagraha.

Nikhil Anand, national general secretary of the BJP OBC Morcha, said, "Bihar has a glorious past and its historical-cultural legacy is appreciated globally. It has been a land of knowledge and awakening. We are happy that the tableau of Bihar is going to be part of next year's Republic Day parade in Delhi. We have a lot to feel proud of ourselves as residents of Bihar."

THE TIMES OF INDIA
Education TIMES
THE PATH TO EXCELLENCE
www.educationtimes.com
Advertorial, Education Promotional Feature

Nalanda University is poised to boost Study in India initiative

The research-driven campus is home to six schools, attracting 190 international students and 76 Indian students in full-time residence as per the last academic session

—Abhay Kumar Singh

The university currently offers 137 scholarships to international students

Pearl Academy
BBA & MBA
DEGREE PROGRAMS
Fashion and Lifestyle Business Management
Global Luxury Brand Management
Global Immersion
Start Up Support

हिन्दुस्तान

सितार वादन सुन मंत्रमुग्ध हुए छात्र

नालंदा विश्वविद्यालय मे शुक्रवार को सितार वादन प्रस्तुत करते पंडित कुशल दास व अन्य।

राजगीर, कार्यालय संवाददाता। नालंदा विश्वविद्यालय में सितार वादक पंडित कुशल दास के कार्यक्रम को सुनकर छात्र व शिक्षक मंत्रमुग्ध हो गये। तबला पर उनका साथ बनारस घराने के प्रसिद्ध तबला वादक उज्जवल भारती दे रहे थे। स्पिक मैके चैप्टर की ओर से सुषमा स्वराज सभागार में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। अंतरिम कुलपति प्रो. अभय कुमार सिंह ने छात्रों को भारत की सांस्कृति से परिचित कराने के लिए स्पिक मैके के प्रति आभार जताया।

पंडित कुशल दास ने सांयकालीन राग चारूकेशी पर अलाप के साथ कार्यक्रम की शुरुआत की। अंतरिम कुलपति ने कहा कि भारत में शास्त्रीय संगीत की परंपरा आज भी जीवित है। इस प्रकार के आयोजन से छात्रों का सर्वांगीन विकास होता है। इससे छात्रों को संवेदनशील व बेहतर इंसान बनाने में मदद मिलती है। स्पिक मैके की स्थापना वर्ष 1977 में प्रो. किरण सेठ ने किया था। इसका उद्देश्य भारतीय विरासत के बारे में जागरूकता फैलाना और युवाओं को प्रेरणा देना है। कार्यक्रम में सभी शिक्षक व यहां पढ़ने वाले 25 देशों के छात्र मौजूद थे।

The Indian EXPRESS

As a new campus rises at an ancient site, the story of Nalanda

SANTOSH SINGH & ARJUN SENGUPTA
PATNA, NEW DELHI JUNE 19

EXPLAINED EDUCATION

THE CAMPUS of Nalanda University was formally inaugurated by Prime Minister Narendra Modi on Wednesday.

Spread across 455 acres, it is located in Rajgir, roughly 100 km from Patna, and merely 12 km away from the ruins of the eponymous ancient Buddhist monastery, considered to be among the greatest centres of learning in all of Antiquity.

'Reviving' Nalanda

It was then President APJ Abdul Kalam who officially proposed 'reviving' Nalanda in 2006. Addressing the Bihar Assembly, he said: "To recapture [Nalanda's] past glory… it has been proposed to establish a Bodhgaya Nalanda Indo-Asian Institute of Learning in partnership with select Asian countries".

In 2007, the proposal to re-establish Nalanda was endorsed at the East Asia Summit in Mandaue, Philipines. This endorsement was re-iterated in the East Asia Summit of 2009, in Hua Hin, Thailand.

In total, 17 countries other than India — Australia, Bangladesh, Bhutan, Brunei Darussalam, Cambodia, China, Indonesia, Laos, Mauritius, Myanmar, New Zealand, Portugal, Singapore, South Korea, Sri Lanka, Thailand, and Vietnam — have helped set up of the university. Ambassadors of these countries attended Wednesday's inauguration ceremony.

The Bihar Assembly, in 2007, passed the University of Nalanda Bill to facilitate the creation of a new, international university near the site of the ancient learning centre in Rajgir. In 2010, Parliament replaced this Act with the Nalanda University Bill, which deemed the proposed university to be one of "national importance", and laid down rules regarding how it would be governed.

In 2013, the masterplan for the campus, proposed by renowned architect B V Doshi's Vastu Shilpa Consultants, was chosen after an international competion.

Administrative block of the newly inaugurated Nalanda University. Nalanda

Centre of research, learning

Nalanda University admitted its very first batch of fifteen students in 2014, to the School of Historical Studies, and the School of Ecology and Environmental studies. Classes were held in the Rajgir Convention Centre, with Bihar government-operated Hotel Tathagat acting as temporary hostel premises for the students. The faculty comprised six teachers.

Nobel Prize-winning economist Amartya Sen, who had been associated with the project since 2007, became the University's first Chancellor, and then-President Pranab Mukherjee became the first Visitor.

Since 2014, four more schools have been established — the School of Buddhist Studies, Philosophy and Comparative Religion, the School of Languages and Literature, the School of Management Studies, and the School of International Relations and Peace Studies. The university currently offers two-year Master's courses, PhD programmes, and a few diploma and certificate courses.

Campus to behold

By 2022, 90% of the campus's construction was completed. At the time, the university boasted 800 students, including 150 international students from 31 countries. At full capacity, the campus can accommodate as many as 7,500 students and teachers.

With a built area of only 8%, university officials say that the campus attempts to "match the architectural and geographical setting the ancient Nalanda University would have provided". In fact, the administrative block specifically recreates the exposed brick architecture, and elevated staircase that is the signature image of the Nalanda ruins.

That being said, the campus is a mix of the modern and the traditional. Natural light streams into classrooms' smart wideboards and electronic podiums. While air-conditioned, it utilises various methods, such as hollow walls, to provide natural cooling.

Water bodies — Kamal Sagar ponds — cover over 100 acres of the campus's area. Another 100 acres are covered in greenery. The campus boasts a drinking water treatment plant, and a water recycling plant, as well as a yoga centre, a state-of-the-art auditorium, a library, an archival centre, and a fully equipped sports complex. No cars are allowed inside.

Nalanda Mahavira

Mahavira in Sanskrit/Pali means 'great monastery'. Nalanda Mahavira was active from the fifth to thirteenth century CE.

The chronicles of seventh century Chinese traveller Hsuan Tsang provide the most detailed description of ancient Nalanda. Hsuan Tsang estimated that at the time of his visit, the monastery housed 10,000 students, 2,000 teachers, and a gargantuan retinue of servants.

Multiple scholars, however, have disputed this figure based on archaeological evidence from the ancient university's ruins. That being said, Nalanda was definitely not an average Buddhist *vihara*.

"Under its aged and saintly abbot, Silabhadra, Nalanda also taught the Vedas, Hindu philosophy, logic, grammar and medicine. It would seem that the student population was not not confined to the Buddhist order, but that candidates of other faiths who succeeded in passing a strict oral examination were admitted," historian A L Basham wrote in his classic *The Wonder that was India* (1954).

“नालंदा

केवल एक नाम नहीं , यह एक पहचान है, एक सम्मान है। नालंदा एक मूल्य है, एक मंत्र है, एक गौरव-गाथा है...

नालंदा विश्वविद्यालय परिसर के उद्घाटन के अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का सम्बोधन, *19* जून, *2024*